CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

030

વ્રતસઙ્ગ્રહમ્

Script: N: nagari   Meterial: PL

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रुतमस्तु प ज्योतिषं तत्र तच्चिन्तु ग्रतेप-पजोडरो पवानैः गोपु मां क लाप-पुमातौ ग णापति गुमां कलाप
२ पुर्वो रुति तपवं गुणाविसेजणाविरोसोयां रुततिधौ अस्माक मतगाद्वतुर्विधवर्ष तगुजायेस्सिध्येघें म
ज्योति अत्तत्सं जीवनार्धं पनम्रेखनस्रीतप घं तविजेतोतनगनाणो कृपकानेणाज्यो तिष्टं तवृतम —— रुं
ष्टं त कतिजेप्रा-पञ्चाधा तुरु धिं कलातलगुजायतिआ दे आसारेवास्य थीमति —— तं नो
वृत ३३ः प्रवोरस्मातु ज्योतिष्टं तनमस्तुतां वृतं कनमदे खनातत्तसं ओद ——
नार्धं मे वृतं प्रान बथतेवृत्तो गनुतोनं नमः णतापतयेनासेलपालाया सनस्वतेनाउं वनभा
गुतेन नमः णआधक लरगवनं रां सावनं कलाप-पउ तश्चेतिमं हपुं थमालापआ धद्वानपालगुमांका
पुर्वमेवेद्रानस्येयौ अस्मितां गतैनवायानु तैनवाया उरिणाद्रामेद्रानास्वयौ वंउ तैनवाया क्रोध तैनवायाचास्त
अद्राने द्रानस्मियेउ न्मतते नवाया कपाल तैनवायउ तनद्रानेद्रानास्वयौत्तीजणा तैनवायस्वं दान तैनवाया

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

इतिनवरा। क्रिषुकाः। ततरीपस्त्तं तयोउ आमासे खं नमा दारूा। मा रोतु। वा आं मन्ना स्त्र वा श्री क. न क मल यातत
घा वा आ ना। रु (श्रिया या ८ (स्पर्वा क लपा तिना श्री न तपनर) म त्रै ६ रा॰ क नै का॰ व ना तो थे रा॰ प श्रु आ स न स्घा स्मन
लक्ष्लित वृषः रा॰ क नेपा वतीरा ८ ॥ इ तिमाला। था रोलि लो वन॰ रे वृ॰ व्रत॰ बु (रु आ से रव ना। ह्यो। ति रत्न॰ तत्र
त॰ का यं॰ वृत्त औ तहण आ व नेतु। था ना॰। आ ला न कू आ ना॰ ना घा पार्व
ता आ स य रा॰ क ना आ वा रु या आ ला॰ रे व स्प॰ आ कू स्रा॰ निकितोत वृ। आ वा द न॰। आ॰ बु
न र म या॰ रे व न ह्र औ (कृ क ना क्रि त॰। दि का स्प॰ रा स्प न॰ रे व ग (रू। ा। पन औ सन। आ स्पन॰ (मा॰ मा। दि स्प
वती घे ति ८ रपआ कृत (म रु॰ म ल॰। वा य घ॰ तव रा स्प। आ न रू। ता। वृ न रो तु वा पा। घ॰। उ ना का॰ त न म स्रो रान
आ स्रो त कृ व ह्र ल। (रू। ा। ा प्यर्थं॰ आ या र त॰ रवी कु रु व्व स रा। रा वा। आ प्य म प्यर्थं॰। (प लो शीन लव॰ मा। दि को पुनेपावि
ना। (कि त॰। आ व ह्र मता॰ रु जी के रा उ आ या स्प रु रा॰ क ना। आ व म नी य॰। र (ज आ ना आ स्प॰ रु कृ॰ का॰ स्प पा ले त्र

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रवुनाविताया।नात्तिण
वतुररालोकणानिलो।
२ उरनं पुज यासि।
ड़ीरवनायाद्दुय।।
नीलकंज्ञायाकंकौ।
जरुराकृयो।जाकुनु।
राक्षिथनायास्तौ।
वाअरेवाया।कुरव।
पर्गितातुजताया।
ललार्हं पुप

पलंलावनाया।
पनेलातिप
पकुंउलतुजाता
या।
पक गोपि
पवारुकिप्रिआया।
पनालिसौपु।

ओतेतिम्याया।
रा७४पुकुप
पउ भाअरेखनाया।
परणवंगंपुक याप
आघावनुतापुआंका।
उंरुरयाया।
नंरितरणेन।
अंरारणाया।
रोकवनाया।
वांनेलाया।

यंअस्साया।
इतिप्रथमावनु
तापुआ४स्यान
अघद्वितीयवतापुआ।
रणओआताया।
वाअरेवाया।
अच्योनाया।
ततनुजा।या।

इरतानाया।
इतिद्वितीया।
६
वनुतापुकाःन
अघातृतीयाव
तापुप

ब्राश्रौनज्ञाः।
पआरुरवचौ।
पकौआयौवैद्यकौ।
पवानायौआरुंऔ।
पनाभुंऔलरनैन।
पइतितृतीयावनुतापुआः।
पअघावतुघवातापुआन
पइंआया।अज्ञयो।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यमाया निरतये।
वरुणाय वायवे
कुबेराय ईशानाय
इति स्तुत्वा विताकुमाः
अघंपंवमादतामुमाँ
वज्राय शक्तये
दंडाय अंकुशताय
पाशाय ध्वजाय
ऽऽउणाय नमः

पतिरुलाय
प्रतिपन्नमाव
फौड आःपद्‌

पआपवमुमाँ
सद्यो जाताय
जिल्लपवं।

ॐ अघोराय।
निर्ऋतीपतवं
वामदेवाय।
उवापतं स्वा
ततपुरुषाय।
गुरुपतवं
ईशानाय।
अवलपतवं
उन्नतेतसो।
अनमपतवं
स्त्रीपतन्त्र ओरवराय।

श्यकौपापताप
रमकयात्मेन
अधपुष्पमुआं
सद्यो जाताय।
केतकीजपतं
वामदेवाय।
गुरुजपतं
अघोराय।
ओताजपव

तत्पुरुषाय।
अस्त्रकाप।
ईशानाय।
नंपआप।
उग्वरेत
रवेनम

नामनंपकाप।
तिलोत्तमाय।

रातजपतं।
अघोरे दाया पानिमातमु।
रंकनाया आमजपतं
वामके रायाजं नानमु।
पृतितुजपाया श्यतजपतं
उमा मके रवनाय।
स्पमरवतजपा प्रासमर्क
अघरिवाशोतननामपुमा
कानन्ये

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

४

ॐ ईरवनाया।
रा॰त्तवेना।
रा॰कनाया।
राशिरौरुनाया।
नागजानाया।
नागराधिनो।
रुलिनेना।
रुलपनाया।
दिने॰ननाय

दीर्घकेराया॥१०॥
नीलकंठाया।
त्रिनं॰जनाया।
कोमारव ना
वायवेस्वीतना
पायधा।

तक्कायने।
तवरुनाया।
रुनाया।
मठाया।
नराथनाया॥७०॥
पाशिनो।
वक्राया।
अवक्राया।
स्वनात्तना
या।

कपर्दिनेना।
कानुपावलिन्धवे।
कालनाया।
कामसर्वनाया।
त्रिरवेनुपाया।
विनुपासाया॥२०॥
निर्मलाय।
रुवये॥नितनाय॥
स्त्रीमवाया।
स्तन्वत्रताया।

त्रा॰नकाया।
त्रिपुरान्तकाया।
त्रीआया।
तवरुनाया।
तानवेना॥४०॥
त्रिनीराया।
त्रिनिकाया।
गनवेना।
गं॰नाथनाया।
यरारुनाया।

गतानाधाया।
गताप्रियाया।
रघ्याणावे।
गुरुपिको।
नीललोकि
ताया॥५०॥
कालात्मने।
कालरुद्रे।
सर्वज्ञाय
सर्वहुजनाय

पञ्चहस्ताया।
पनपताया।
वंगाया।
रसेनाया।
शिवाया।
देवदेवाया॥६०॥
वनपताया।
नाभाया।
नामप्रियाया।
नभाया।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वणां काय।
वणवायनाय।
अस्मानघाय।
अआकाचाय।
शिवाय।
शीघ्रायच॥
शिवप्रियाय।
वाचस्पतये।
सर्वेश्वराय।
अनाय।

यज्ञेनाय
यघघकृते।
अक्षाय।
कलिज्ञाय।
पुर्वज्ञाय।
अपराज्ञाय।

अ[illegible]आय।
अप्रमाणाय।
अप्रमेयाय।
बुद्धिगाय।
स्तोत्राय।
प्रतिस्वरूपि।
स्वाध्याय।
सुभगाय।
पुर्वमीय।
तत्त्वायानि।

स्तोत्राय।
अवरूपनाय।
वनाय।
कस्ताय।
स्तवाय।
प्रतिरत्नाय।
आरोजनाय।
आराधनाय।
रुद्राय।
अवनिंदितो॥१००॥

वन्दितो।
वृत्तिघ्नो।
जिन्मिनो।
कवित्रिनो।
स्तुताय।
स्तुतस्वेनाय।

स्वका शिवासनय
ईस्वनायनमः।
ओं नमः शिवाय
इति अष्टोत्तर
नामपुष्पः स्वम
पर्याप्त [illegible]
सकारेतुः शिवः रातुः
रां कनोवजदासतेः [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ररता॰ गं॰ णक्का नं॰ णु जं॰ स्तुणं॰ थंवंअनोअ नं॰ प्रातिण स्वस्तु नरवे ह्वाणु पो संं॰ प्रति॰ स्वताणु णं॰ त्ततर्ति सह्वा णुकं॰ त्री

अ

पं॰ प्रअ लितं॰ अ आअ सात्रअं॰ मकानं॰ व लिवान सस्व कारिवारी पृं॰ स्प त्तं॰ सणु ठं॰ वैप कु ठ पेन प्र कलिंतं॰

करलीना लिकेना रीतु मठ्ठाणा पनअे स्वना॥ दौदे धणा॥ पुवी पर्तसम नाणु कुं॰ ना॰ ववला नैशुतं॰

तु गाकि पुनस्त॰ णु कुं॰ तां॰ बुलं॰ प्रालिण स्वताणताणं॰ बुलं॰ स्तयेका

कातेतिअं॰ लपजपं॰ ध्यानि कानि तिप्रदसि ताणं॰ कुनरा॰ तोअका तेतिडीनातनणं॰ रपणो

तुपारत विरस्व तुवस्त सारिवारनाणत तु ते सकनु ताणकनरसं॰ कना नैसा॥ पावस्वे स्वनाति

ततकुतुला येति प्रस्त॰ ना पश्चगाल पाणलना नेदअं॰ लबा॥ उ पा त्थलं॰ गु पीजठं॰ सरणोपरुक नरसं॰ कुतं॥

गठ्ठाता रं॰ दिअ स्ने कुपीता थं॰ प्रतिण स्वताणं॰ णु पा स्व लं॰ लतअेता॥ प्रतिण ठ्ठातअ अ सो वै नरा॥ तं॰ ना

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

उ ओ रा स्मा न को वा त्या॰ ओ रा य न ओ न अः॥ इ ति वृ त्ति वृ स्या॥ वि ख ख न वि तु पा स्त का री॥ व न व न पि पा दा च न
स्तु जना त्ति व्ण्या र्घ॰ स्यो अ॰ न ल॰ व य क ओ॥ इ ति श्रा र्घ नं॥ ज्या त क लु ल्कि आ डी रा स र्व का अ्या र्घ क्षि च यो रत्नु
स व्र ऋ ग॥ श्रे व ल॰ स्स व अ॰ न ल का न का स्तु व न म र त्का न॥ रा॰ क न्ना य न अ हे ल्तु स्य न्ती स्ति न
रा य का॥ स्व वृ त॰ कु तु अ दे व स्य यो आ त न ओ स्तु तो स्तु त व॰ थ नं॥ स्य स्य स्म त्वे क्सि स्य
अ पि त्ति॰ प—— प प इ त्य व नि वि न्सि॰ अ मा वृ॥ प अ स्य क घा र न न्ना॰ प—— प
अ ज्ञा तः स॰ व्र व स्मा अ ओ स्तु॰ त्त वृ त॰ स्तु थी त्त वृ तो क्षु वि या ने त स्तु त्त ऋ न्य॰ त का न चे तृ स्य र्त
वि न॥ स्य वृ ते न म रा पा वै स्तु का ते मा न वो त्तु वि त्ति वृ त॰ व द द वे रा क प्र पा स्तु स्तु र न॥ प स्ति क आ॰ स्म ना क
स्या स्ति ते व से अ मा चा॰ तु वृ तो अ स॥ ज्यो ति स्तु॰ त्त॰ वृ त॰ कु य आ॰ न त्या य स्तु रा स्ति नी॥ स्तु रा स्ति नी

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त॰४५॥७४ — कतरो कात् नो नाको पन्नने स्व

पचेतु।चो इत्यात्मत — कत स्य क न्न॰ त स्ये इरा नय स॰ ।न्ध्रप स्व स स्व निष्ठ अचे व क न्ना निनु प

तिष्ठ॰तु वा तु चो॥ — त॰।त व्रता॰त॰ स्व मा का ।पर्य प न्ना स्या क॰ वि कं स्त रा।न्६ प इ का ला ता ।सितेस्वर्दे ।स

रा मो ति विको — त स्मा क्ष या स्व ता तु स्मे म त कला स री य तो।न्भा — इ त्या लो स्व स्व प नी को

स्वरा नं तु प्राप — व इ तु ।मा का रा तु मिरचो स्ये पा।र त्वा वि त म पा — स न तु।न्धप का न।स त्वा

पौ ना॰ सर्वै स्य मा क — य्या मा स्य प लि का क न्ना पि त स्य वि प्र स्य — ज्ञात्वा न कृ म त॰ त रा॰

व॰।न्यपि रा व॰ इ न्यु॰ स्य — म॰ स्य प नी को कृ म स्व रा।स्व मा क णा म उ॰ स्ये — नं स्य स्वै न्ना॰ स्वो प्रि का पि

— मा ल न्ध य॰ व कु॰ स्य वे वि ति॰ त घा।वि. वे रा त न्॰ वि ति॰ क न्ना प ति शा ता प रा चे त रा॰

त तो र स न दे ला या॰ वृ ष्ण ना सी॰ न्ध स तु ता।पो ना॰ स वे स न्ना क्ना पि स्ये पि वि प्र स्व रु॰ क्षित॰।प्रप पति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ष्ठ नं स्य अः स्वात्ं तात्तु इ श्रि नत्तें ताान वा वस्त्रं न ते स्व स्त्रिम नु अं ष्क को नो म का न तु तु। ७ न प रा नं तै वि तो श्रौ स्वा क न
वि ंत या म्यास्त ओ मता। व्रताो पिनेण तः पा प प ति प्रा ाौि सक्का ए नाक्ष्र्य प अ ता ं नं ज कु तो म स्र्वां न व व स्त्र ं स्व
सोत्त नं। किं क नो अि क न क्ष्ण अि क घा ं अी वे प तिं वि ना ज्व प इ ति चिंत्या प न ा या स्त्रु बु धि ने का स्य अ ह्रि ता
२ अो ति स्त्र ं त्त ं व्रतं क या पा ति व्रत्य प ल प्र ३ ं ७ ४ ५ उ आा अ के स्व नं दि बो ं प ति प्रा ाा प्र दं र ति ।
इ ति नि स्वि त्य स्या क न्या व का नै त व्रतं अ रु तु ७ अ ।। का श्रौ व ति काः
व त्न अ स्या स्या ं त स्या तु पा तु क खा ध्या ना दि पै व किं ७ ध्य जो ३ रौ न क वा अ लै स्तै लं व्र क लप
का अ ति ः ३ आ अ है स्व न स्य स्थै व्रत सो तु स्य को म या ७ प्र तं ३ स्त्री स्त्रा प सा नै स्य पु आं व के म
अ न्वि तो ।। ता आ र त ण व ां रे व ः व नं व न्य स्व व्रते ७ प त व श्री तो स्त्रि अ क न्या ा ा त क्ष्या वा न ति उ व या ाक श्री के व्रा ा बौ रे न ं त ति कि स
न्या त तो रे वं पतिप्रा ााः ३३ स्व ओ ७ नि र त वि इ नो पि तो रे वः प ति प्रा ाां द्यौ त द्वा स्या

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्म श्रि क्ते तस्मणाइ तेत ता विजना तत्पुना ता॥ आस्त तस्मन्भुतान॥
स्रीरा तस्रा स्नु ॥ लिस्पा ते पुचुवो तुनि त व वं णा ॥ विरोजा ता विरि प्रा स्यां रा त्ता ति धौ अम आवनि तवृत स्न॰ पुता स्वम त्र वर्द्धा
वा स्त्र र्छ॰ स्त्री वंद्र ने॰ उवीति र्छ॰ नतुउ ग ना तो क्र प्रकाने ता क लो कु धना ता आ वा न नादि जो रुस्पो प वा न पु ओ॰ कनि
जोप आ घ वा ता वति क्षा प न॰ क बा॥ आ घा क लरा र्वत॰ रां स्ता वनि॰ क त्रा उ त- द्वे ति मं॰ ह्र॰ थरा त्वा॥

नरुउप॰व
मीव्रता

उ त शो कु ल का॰ व ने न न वि तां॥ प स्पो तं वि थै॰ स्पा थ क॰ः त्नि व न न स्पवि त सी स्यो ता ण स्त॰ह
वा स्पा अं॰ ह्र प्यथरा तं स्म म पच्यो अि रे आ घ द्वा न पा ल पु ओ॰ प पु वे द्वा ने द्वा न स्नि स्यो कु ला स्पा
व व ला स्पा दि सि ता द्वा ने द्वा न सि चौ व॰ डा स्पा व व॰ डा स्पा वि सि आ द्वा ने द्वा न स्नि स्यो तु क्त ना स्पा कु स्पो मा स्पा रा
कु स्यो उ त न डा ने द्वा न सि चौ कृ स्पा स्पा वि कृ स्पा स्पा॰ व नु द्वा ने दे व ता न्नो ण थ्रा ना ता अप वा न चु ओ॰ः॥ आ घ पी तु पु
ओ॰ उ ऽ॰ अ थ ा न रा कृौ॥ उ ल व क त्तौ कु आं स्पा आ नं ता स्पा व ना ना स्पा प द्वा चौ स्न॰ स्प ता स्पा नव न आ स्पो॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

न कं स्म अब्लितं । पा मं० नरुा ।।ा देवरा त क्ता ती प्रुर्प्ल प्र रु ।। पा मं० ।। के त की ग ज्व रसम रु कं० र्ज ला सं त रस मं ब्लितं । क्म
र्ष्णं० द रा । म देवे रा स्की कं त्व व न रो त द्र ।। अ र्ष्णं ।। न मा स्ते देव देवे रा न म स्ते थ न ।।। थ न । न म स्ते स्य वे ता ने० द्र द रा मता
व म न० र त० ।। आ व म   न० । स्त्री न० रा कं न या । रु कं० र थि मन्वा मा रु० रु त० ।)   व० वा म तं० ते स्ता ना चं० न्हि
रु ।।। व न रो त वा ।। ०   वा म त रम्ना न० ।। आ पो । रु श्री । तिर । घो र कं स्ना पं०   त्रिका व स्त रु नं० दे व ना प्रा
न तो प रो । ति त । स्म   स्तु स्मं० व रु न स्ते प्र श्री त्व चं० प्रु ति न आ ता । ।। व स्मं० ।।   उ प वी त० स्व र्नं म सं० न कं
तं० वो त नी त कं० । त   कृता द त० म या दे व श्री त्व चं० प्र ति न आ ता । न प वी त० । दिनं० । ।। पा नु पे त्या त न ता । ।।
रु नं० थं० नो व ता रु कं० कं स्तु नी कं० कं मा ब्लितं० । वि ले प नं० म रु । रो ज श्री त्व चं० प्र ति न आ ता । ।। नं० थ । ।। म स ता न
स्व व मा० न लो रो । ति तो० र व रु रो त ता । अ पे सा । मि स रु ना म न म स्ते वि स्व म ति पे ... ता ...

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

केतकीमल्लिकाजातीयूथिकाचंपकातथानंद्यावर्तं वकुलं अर्कमपि अरुणादि तेः(?) जन्म॥ श्री...

नृत्तोक्तं कवितेजो॥
कोलिनामयः॥
पादौ कुसुमाः
कपिलाचलवेऽ
सोजायाद्वद्रयं।
सं कुजातायाकः॥
वासुकि नेजात्तिन
तंत्रं काश्यपं रसाः

कार्के हि काश्या
कं उं।
क्ष अलवासा
रामवसू

तत्कृवह्नलाः
नलाः द्रुकुं॥
अकारोजायापितरः॥
सीनाने॰ ज्ञाया॥
स्वर्णं ल॰ कुजाया॥
अघाभाववृत्तापु
कां॰ कविजेपन॥
केरावादिङ्कोररा

नामतिःपु
प्रथमावन्ताकुआः॥
अघविप्रतीस्या
नृताकुआं॰ कविः
लवतासमुद्राया।
दुकुसमुद्राया।
सुनसमुद्राया।
अर्धिसमुद्राया

दधिसमुद्राया।
क्षीरसमुद्राया।
स्वादुरकं
समुद्राया।
स्रीनाने॰
ज्ञायाद्वितीया
वनुतापु आःसा
तत्रीया वनुताकुआं॥

इंद्रायशौनानाकतः
अनुग्रसायनमः॥
तत्रीयावनुताकुआः॥
अघसुवर्णादितापुआं॰
आदित्यादिनवनाम
तिःप्रवलघावनुतापुआः
अग्रप्रथमावनुतापुआं॰
असितां॰ गतैनवाया

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ अनन्ताय
शेषाय नमः
नागेशाय नमः
पद्मनाभाय
अनन्तरूपाय
आनन्दाय
नृसिंहाय
रत्नकुण्डलाय
पद्मासनिक
शान्ताय नमः

सहस्रलोकधा
जितेन नमः
सर्व व्यापकाय
नाग लोक
पतये नमः
नागनाथाय

नागिनीप्रियाय
वासुदेवाय
जितालंकाराय नमः
चतुर्दशलोक
धारिणे नमः
तारकनाथाय
सर्वव्यापिने
शुक्लवर्णाय
विश्वरूपाय

अकाशाय
सृष्टिकर्त्रे नमः
स्थितिकारणाय
अनन्ताय
वैकुण्ठवासिने
श्रीवत्सधारिणे
रत्नभूषणाय
पिंगलनेत्राय
पीतलोचनाय
ॐ नमः

पिंगलनेत्राय
लोकनाथाय नमः
पीताम्बरधराय
नागपतये
देवदेवाय
वरदाय
चक्रधराय
शंखधारिणे
देवेशाय

तेजोराशये नमः
तेजस्काराय
अनन्तरूपाय
नागप्रियाय
रत्नाकराय नमः
पुराणपुरुषाय नमः
पुण्याय नमः
अनन्तफलदायकाय
सर्वेश्वराय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रवीथनाखना
ननकातविता
नका सा।।न।।
तौलोकरसुतयो।
ऊ न ध्यानकासाभ
तवसनाखप
खानतारवया
खा
खनसेनाया

सिघरवेवि तायो
०थवेपुऊितायो
रवीवैकुं ऊ
याल
पनां०नतसो।
काक्षासनप

ऊं०ऊलोवनाया
कासाऊनकाय
कासपलनायका
कालात्मने।।
व०रतुजााथनाया
रसुवासरवे।
कउवेनसः।
योनकुपितायो
अनंतासनप

रसुउरवेविते।।
अक्षसुतरवे।।
अकालवालाय
यसनावासाया
विजिवनाखनं
रवीकुनाया।
रसुर्वसोमलोर
नाधनमःल
सिवासनप
पनसासमनेप

अआनुपायाय
कालकानतााया
नवखेनप
बुंजावि
सायाल
[illegible]
ऊ नतकुका या
ऊनतुंजिताया
विजिवे।तुजनायाउ
[illegible]

अरवसुविखाया
नानसाताखप
नवक्षातायथनाया
सितातानमतसो।
प्रसुक्षासा।नपलं
वैकुं०सासो।
रासमनाया।
लरवीपिवाया।
सर्वे[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त स्यां (जा वे ह्री स्व न्त का व (स्या धु दे वि त्वे स्याद् स्यां स्वे णां (कि ते का अ या प श्य त स्या त न (वि श्व स्या (त व स्य का ल
मे व वा (स्य त ने र (उ) म द्वा का स्यां स्वे जां (स्य) त द व न ० ५ ४ ५ (ज) ना स्यो ना स्व न न ने त नि क्षे (व्रा स्य (णो त्र अः (त स्य स्व
स्य ता आ त ८ वे द वे स्यां न पा न गा ८ प भ प ते जा अ व त आ क न्मा हु (ग) त पा ना अ ना अ त ८ (स्व वे ल स ता स्व ० प ०
ना ना नी (ता ता (स्र) तं स्या व थु ८ प ५ स्य क नमा स्व वे ता र श्व न स हा ना ० क ता (द ज) (न ० न व (ल्ल ने या
प अ ० स्यां स्व क्र म ग (द को नु (थ्य ना ण न ० था (द को नु न ० था नि त न ० स्व त या क ने
तु (प व ० स्व दे स्वा दे (व अ दे स्यं ती स्व द ण से प्य स्या व ओ (वि क्षे ता (सा ता (स्व वे ला (पि ज) ता न
ने (प क तो ना (द को नु क्षा गा स्या ० नु स्य स स्या ० ता ० त दा क नो कु प ण्य (प ते ज ना गा नु स्य सा वा स्य त न्म घा (त ह व स्रा
व सो तु (त त स्यि ते ज ना ने ज वी स्यो का स्ते (ह) ओ त्र अ ८ प ० प अ ता स्य क प स्यो कु थ्य ता ता नु स्य प (नु स्य प ता व

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

केरावं ॥१४स्तेजात्रुञ्जी वनं वापिदृ — निद्रस्थवनाराननंपं नगेंद्रां जिती

सावं आत्ते विजितो८ स्यप्ता न झं॥५॥ द नै१ रम आनाथनं वसरवोततस्थव नितिसभ्रे अं वत्रं तच्या

देवै कपुसा कृनुतां वओण्वरवं व्रतौ हासाक्षानौता व्रनानुदद्त स्सदा।पवंदलावनं देवि

तौ — यातौ स्व पदं प्रतिम्भ्रं॥५ स्यातुलञ्च वनारे विज्ञातप लाजितिव्रलपतानुञ्जी

वाञ — आसौ रयां लवथाततैव पावर्ती॥५तुक्षात विभलाता भा अं ते विज्ञवतं नता।

पततेक घितं देवि कुन्वव्रतञतमं॥९५ स्वीरेवा ददवापविथानं कीदरां नुजि व्र तरस्या स्या दया

निधिकं घां वाभुजनीसास्व क्ष दाना नाजिनप्रतो॥५॥ ५३ीरवनज वावा। र ३ पव्रतं अधारे विस्तर्ग का

आर्प लप्रदं।सर्वस्यौता नाद्रं नुता॥ स्वीता॥ वैवविर्मेज तः॥५॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

प॰वक्ष्या॰सावरोष्क्रेद॰त थातनपुर्वक॰स्त्रालाथौता॰वनथनो
वत्मीक॰वारतानलेपअपन्नरवष्ठ॰वारवआरणाअकनुज्ञावनिश्चतअनंप्रिज॰गपद्यौ॰कबातप॰नणे॰दअयाक्लि॰छत
दालातेतुरालत्राज पिशु॰क रात्रिपावतीतिजाठ्वतेजवारायवेशअेतप॰नमो यअ॰ध्यपलाआनुक्रमि
४॥ ध्यारात्र्कृशावताकारव पङलानिवानालिके नपलि॰वाविपलि॰र॰तारवअुत्रव॰ १पओरकानक्षेरप॰रसा
काकुरारिनुप्रस्थो नतालिनीतलैक॰सपना आयाय क॰विशायदाप योतुपिपज्याजिनि॰स
आत्मनवमे॰न्यासत विलेपनै॰अपनाकुकद्या॰रतत्वा त॰अीया तैलवर्तितेण॰प॰पद॰व्रत॰
कुनुज्वारगदेवत्व॰रा रिवो॰ क्षिओरस्वीरेवाउवावकेनद्रतमिउ॰रेकपुरपातं॰नुवनलरो॥पर॰क
नवावपकत॰पनारा वीरेका अनु॰न्तमनतामिनी॥आश्चौवकुनुज्वारणआशवजोलिपोवती॥
आतः॰प॰न॰तुनिविलिपिनोरापनं तप्रासभ्रायाचलि॰सदातो गानआथवि॰खसापस्यरिपपधव
ज्ञो इत्येव॰सारवकुव॰स्तिश्लिरोतोंगानघाषुप॰॥स्वर्ग॰वेलततेयौनीतुक्रि

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सलिख कन्नकाः५४५ वौं रणातु लनलातं ब रुउआ४रु स अकाङ्ग याद्वास्य

३३ं पकृतेत कुमास — वसें निरु — तात्म वानुज्रम पस गोतु सः स दा वि प्रो अ अ ते स र्व कि द्वि जे ३ ते जां

तु नित्तसिं वौ कुं मं नमे — तयो न सं रा स ४४ — प३ ति: स्नी मकुउ णा यो म कुउ पं च भी त्र

ब्रतकधास्तवता स्वं — उताणि — पस्नीपं न — नं रा स नमः४प — प — वृप

गोकुलश सीरु त भस्मु प ३ं — आ दौ नमा पविकु आं कत्रि जेः पुर्व द्वि जि ते ४ वं ज्ञा — निसे जमा पि पिस क्षाया ं

भीवृता॥ रु तति घौ आरु — रानो न्प रे ख यो त्रि व्व प्र झं न्ह यो र्थ का भ्य मो स — ए आः स्त तु वि पि पि लि

तुजा र्मी सिल्प घ्रेणु — लपौ ला ति व्र प्र छं स्तनता मनर प्र म त्ती स भे त स्नी नो — पालकु श घी त्मर्थे तवि

जयो व्रन रु ना यो कृ प्रका ने या क लपो कृ प्या ना श्व वा स्न ना जि जो उ रो प व व पि कु आं क नि जे प अ घ ष्मा मा व विक्षा

पनं कृता कल स्य वनि ं रां स्मा वलिं क ता १८ — ५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तक्षाभ्येक्ष स्रासवांसात्ववणताग सानक्षोणताग स्यातक्षोणतागस्यावर्द्धि मां०उला सरराकलाक्ष्मनोस्तुयेमन्त लापया

दासां पवे त्वो । वी ञे त्वो । दराकलाक्ष्मनोस्त्रोम्म०उलासा । जोउराक लाक्ष्म नो । तक्ष्माभ्ये इलासाक०

[illegible] स्नाना सा यो मायाग्नि कतिकै त्वो । ञं०त ना क्ष्मनो । पनस्मातक्ष्म नो । यो ना त्मनो । स्न नात्मनो । प्रिस्रो लायकुकनि नि०यो ।

नेसोवकी ञ यासी सायोबाञ्जौ । उशासा । ञनुश्रसञ्जौ । तक्ष्माभ्ये उन्नि ञोत्त नवते वा : रुके वासासर्व कोलाक्ष्म

रुते स तानके वकम कक्षासा इतिवी कुपुञा०स । अयभ्यानणपञलसी — उभस०कार०वतुको ञ

न ञझ्या पित्वा । दरा स्रक्षितं० क्क्षा०वि०तयोनउलक०भ्यान०परवेत पस्त ञ तै सेव कायलिं०

ञ गुता ञ तस्या नना । तं०तस्मात्कृ० कक्षा वे०सम्ञर्यसेतु । तोनरयाप जणस्मञ रक्ष ञ कमापान

दिवासि० ञस्तन०रतन० स्वतमा यस्वतमपत ये नो । विन्या यनञौनञ्ञ । ञावा रुनमासौवराति दस्ववितं०

ञारवनं० रञयाद तं० मञ्ञा माञ पनी स्वउ । ञासजन ञानासञा नपत ये सर्वनीक

रि तासा नो । पासं० सर्वतित्विने तुतमं० स्वैरा यनञौनसः । पायवाभसंस्तु पपमे राव नसी दासपुवागा । कं०व

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वीवस्रओ दानगजातात्पर्णतस्रोस्तुतेअव्यर्णपकन्नाय वलतवास्कनुतातमतासिन्थदे।
नमोस्तुतेआरसनं कनुतके शरासेकाआरसनं।स्नानं स्वीकनुरेवेरापं वास्ततसमं वितव
तत्स्वनुपनमस्तुतां नमस्तेतक्तवदृपलाणं वामतस्नानं।सरुस्वरीजेतिरु चोरक रहानं।लोकनाघानदा
स्तुतां सदाणनुउ वास्नन।स्वीकनुभ्वकणं।नाद्यपातवस्तं रदाभसदं। वस्तं।रुं उरादिति:सुनणतौः
सदापुक्तितव प्रसा।दशामियक्षस्तुलं ते स्वीकनुभ्वकनादनिय उपवीतं।मोपालाघन
मस्तुतां कनदानं दकानकाारदासमतनता।शरमोकस्नायपत ऐनमः।आतनता।स
कुंकसास्वकपुनंम ननपतिसमनुतं।गसातानं रनं।दवाः लिविक्रमनमोस्तुते।णंचणानोपालुक
स्नानमस्ते स्तुनमस्तेलो कादं।दतिअसतां रवसयानीतानुगसातापनुजोतम।असतानुकेतकीमालिका
आओरातपत्रैः रुणं।लतिः।नो।वंरुपत्रै नौविन्दुअयालिसमनो रुनं।
पजपं।आघां नपुआं कजिजे।।केरावाय।पातौ।वामनायापलोकं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

॥ विघ्नेश्वरानुज्ञा ॥ - श्रीगोपाल
श्रीलक्ष्मीयज्ञं चै
कपिलाय नमः
पीताम्बरधराय
महेन्द्रपूज्या
आनोरनायकनी
श्रीदत्तलाचल्यसानु
कौस्तुभोरस्थायकंकं
नानायतायायुस
तामोदनाय
ललाटे पुस्य
सर्वतिलिमसितामश . यायाक्षि

२२

॥ स्यवर्णिजं पुरु. ॥ श्रीगोपाल कृष्णाय नमः

॥ अथ आवरणपूजा ॥ - प्रथमावरणम्
अनन्ताय
कूर्माय
वराहाय
नारसिंहाय
वामनाय
परशुरामाय
बलरामाय
बौद्धाय
कल्किने
इति द्वितीयावरणम्

इन्द्रादिरक्षणा
नादिक्ततीयमाणि
केशवादि चतुर्विंशति
नामानि
ततीयावरणे क्षय
अथ चतुर्थावरणम्
शंखायचक्राय
गदायपद्माय

स्वरूपिणे
इति चतुर्थावरणम्
अथ पञ्चमावरणम्
लक्ष्म्यै सम
इन्द्र स्वरूपाय
स्वनरसमरूपाय
सर्वविस्मरूपाय
सीनरसमरूपा
सामोदकसमरूपाय

इति पञ्चमावरणम्
अथ षष्ठावरणम्
कश्यपाय
अत्रये
भरद्वाजाय
विश्वामित्राय
गौतमाय
जमदग्नये
वसिष्ठाय
इति सप्तमावरणम्
अथ अष्टमावरण

वज्रिणे
शक्तिपाताय
खड्गाय
गोपालाय
कुमाराय
गोविन्दाय
इति सप्तमा
वरणे देवतोत्तम
भानाय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

माधवनपुजां।
रुजीकेरायां।
पद्मपत्रं॰रा।
पद्मनाभाय।
तुलसीपत्रं।
लक्ष्मीरायां।
गोविंदपत्रं।
गरुडध्वजाय।
स्वामीपत्रं।
वेंकटाय।
गोविंदकाय।
दत्तमालादि।

तुजातायन।
श्रीवीपत्रं।
कंदर्पजनकाय।
विष्णुक्रां॰
तीपत्रं॥

नीकेसराय।
बिल्वपत्रं।
रुक्मिणीकांताय।
अश्वत्थपत्रं।
पारिजातपुष्पं।
अश्वत्थपुष्पं।
आम्रपत्राय।
मल्लिकापुष्पं।
दामोदराय।

वंपकाय।
विष्णुवेदमान्य।
नारायणाय।
जातीपुष्पं।
नारायणाय।
गोवर्धनकाय।
नामसहस्राय।
करवीरपुष्पं।

वासुदेवाय।
केतकीपुष्पं।
गरुडध्वजाय।
कुंदपुष्पं।
श्रीगोपालकृ
ष्णाय।
अश्वत्थपत्रं।
पारिजातपुष्पं।
अश्वत्थतुलसीपत्रं।
कमलपुष्पं।

श्रीकृष्णाय।
तुलसीपत्रं।
विष्णवे तुल।
अनंताय तु
लसीं।
गोविंदाय।
तुलसीं।
गरुडध्वजाय।

तुलसीपत्रं।
दामोदराय तुलसीं।
रुजीकेराय तुल।
पद्मनाभाय तुल।
जनार्दनाय तुलसीं।
वासुदेवाय तुलसीं।
गोपालाय तुल।
श्रीकृष्णाय तुल।
इति तुलसीपत्र
पु ओंरव अर्वं।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अथ कृष्णाष्टोत्तरनामावलि लिख्यते
श्रीकृष्णाय
कमलानाथाय
वासुदेवाय
सनातनाय
वसुदेवात्मजाय
पुण्याय
लीलामानुषविग्रहाय
श्रीवत्सकौस्तुभधराय
यशोदावत्सलाय
हरये नमः १०॥

चतुर्भुजात्तचक्रासिगदाय
देवकीनन्दनाय
श्रीशाय
नन्दगोपप्रियात्मजाय
यमुनावेगसंहारिणे
बलभद्रप्रियानुजाय
पूतनाजीवितहराय

शकटासुरभञ्जनाय
नन्दव्रजजनाय
नन्दिने नमः २०
सच्चिदानन्दविग्रहाय
नवनीतविलिप्ताङ्गाय
नवनीतनटाय
अनघाय
नवनीतनवाहाराय
मुचुकुन्दप्रसादकाय
षोडशस्त्रीसहस्रेशाय
त्रिभङ्गिने
मधुराकृतये।

शुकवागमृताब्धीन्दवे ३०
गोविन्दाय
योगिनांपतये
वत्सवाटचरानन्ताय
धेनुकासुरभञ्जनाय
तृणीकृततृणावर्ताय
यमलार्जुनभञ्जनाय
उत्तालतालभेत्रे
तमालश्यामलाकृतये
कोटिसूर्यसमप्रभाय
इलापतये नमः ४०

परंज्योतिषे
यादवेन्द्राय
यदूद्वहाय
वनमालिने
पीतवाससे
पारिजाताप
हारकाय
गोवर्धनाचलोद्धर्त्रे

पालिने नमः
गोपालाय ५०
सर्वपालकाय
अजाय
निरञ्जनाय
कामजनकाय
कञ्जलोचनाय
मधुघ्ने
मथुरानाथाय
द्वारकानायकाय
बलिने नमः
वृन्दावनान्तसञ्चारिणे

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तुलसीदामभूषणाय । आनन्दरूपाय
शातकुम्भकिरीटिने । सात्त्विकोनमः
नन्दनायात्मकाय । मकाकमनक
कंजकौस्तुभवनमाय । नमः कायाय
स्वाश्रिते पत्रपुजायाय
श्रीकौस्तुभवनाय
स्वामिने विरचितकायाय
मंगलवैभवविनीतिने ।
कं स्वानन्दयेन ।
ज्ञानानन्दयेन ॥ ३० ॥ (सार) पालिताने
नन्दकान्तकाय । उपनिषत्कलान्त
काययाय

विद्याकुन्दनरूपाय
विरुद्धपद्मदराकाय
सत्यदावेन ।
सत्यस्वं कलपाय ।
सत्यतातात्मनताय ॥ ८ ॥
कल्पिनेन ।
सत्यरूपकाय
क्षत्रवेन ॥ ४ ॥
तीव्रभक्तिपरदकाय ।
कं वज्रवेन ।
कं गं नाधाय ।

वेदनादविरतनकाय
वक्रताजनविन्द्वंसने ।
वागाराजनकनांतभाय ।
ब्रह्मविज्ञानप्रतिष्ठात्मने ॥ ८ ॥
बलिबन्धविजयकाय ।
पापसेनहयेन ।
आकाकायेन ।
श्रीतामततात्मोदनये ।
कालीयसर्पदर्पमर्दनकृत
नं मतरश्मी पराजनयाय ॥
दामोदरनायेन ।

यज्ञतोक्रेन ।
दानवेन्द्रविनाश
कायाय

नानायपाय ।

पत्रवृन्दमते ।

पन्नगारिवाहनाय
जलक्रीडासमासक्त
गोपीवस्त्रापहारकाय ॥
पुण्यश्लोकाय ।
तीर्थपदाय ।
वेदवेद्याय ।
दयानिधये ।
सर्वतीर्थात्मकाय ।
सर्वग्रहरूपिणे ।
परात्पराय ॥ ८ ॥
श्रीगोपालकृष्ण

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गा॥वं॰तुनजय्रः स्वर्वैनौ॥अजानपणवा॥सिन्नः॥पुनाक.तस्नु न स्मा॰त्मै के क्षा दे वे नता॥ति॰॥७५ तद्रु॰ स॰प्रन स्मा॥ति.
स्मा॰ मोपा॰ण॰ ह्नी स्वतः॥पुनावैरापन स्मा॰ते पा॰ उवा॰ कौन वा स्त्र स्था॥७५ त्रु तं॰ प्रव॥कु नेसावै औ कि तो॥न न मा या या॥
तक्कुं वा॥क क्षा॥ दे वा॥जिक   पय्या पन या॰तः॥७५ आ॥ प यो न त उ॥तु को॥वु नस्प नरु॰   प्र ति॥त ता पनयन्ना आ तेमा
१०   कु॰ती पनह्रद्रः॥सिता॥   ७५ कुने॥ापाविं तिः कक्षः॥ कु॰ती॰प्राआ॥घत॥कृ.तेः॥कु॰ती॰   पा॥पा॰ति कं॰ नला॥त्राञ
व स्वति उ॰ जन॰॥ज्ञ   कु॰तौ॥वाव॥कु॰ती॰ अः॥या॥अ क क्षा॰ तं॰ म न उुसे नकं   क॥ति॥तिः॥ मप्रया॥पन न्या
क घे   देवकपा॥ा॥वया॥ह्नी   १२७॥७५ आस्मंक॰ वैम आ तेआः ता॥ता॥नि बं॰॥स स॰   स्था॥ते॥तआसआ॥ कं॰वा
अं॰ उवा॥वपनया॥ह्न   या॥४पुमतत्र॥ता॥ल॥क्रिम सः स्वैप्रि॥वि प्रा॥णआनं॰ वनं॰॥कृ पया॥नि उ नो॥म आ॰ को उवडो॥ता
स्न॰॥मित॰॥७५ दरा॥ति   प्रतन्द॰ कक्षा जीवना॥यअआम॥तिः॥सी कक्षः॥७५ व्रतमेक प्रव स्मा॥मि यो नउ स्मा॥त प्रम॥अते॥ति
प्रतपौ॥वैः पनिव तो॥स्व ———— ना॥आ॰ पपुष्पतेत्रु वं॰॥सावता॥पा॥स्य॥ावनेप से क क्षा॥श ह्ना॰॥ह आनारो॥न्॰॥॥देवका॰

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

वक्रे वाद्य प्ररतु सौ दे केरा वातरत्रेर यातं तखस्थार पचिता विधि तत ॥ प्र रु से कनां तसहु लं रराह्रं वृत अतरे

तु रंगं स्नानाति व अङ्गा — नां न मा पाठां पाव कर्म पाठ ॥ ४ वरु रै खचं तधा मो सं कु न ष ग नवो तमा अ नेन को नकं

ब स्वा र रा वर्जं वृत व — रे तु ॥ ४ ॥ रे व स्थ गर्तो ति नि तं न र रा प अ नि का न चे तु र ना नि र रा क ज्ञा य तु ल ख्या ज्ञा

र चि तु ग्नी ॥ ॥ ५ ॥ प क — ज्ञां विज्ञं त धा नं त —— ॰ नो विं रं न तु रु व कं ॥ रा मो — र नं रु जी के रां प अ नात्

कु पें रु कं ॥ ६ ॥ — तै स्व ना अ ति निं तं क ज्ञा रे व स अ र चि तु न अस्का — नं त तः कु या तु र रा क या

त स्व र सि ति ॥ ७ ॥ — वं र रा उ न कु या तु रु ता ना ॥ त अ रु तं र रा रां — ते तु कु ज्ञा य रु जि को र रा

अ र चि तु ॥ ८ ॥ वृ अं त्र — ॥ य त धा र था तु कुं न कां र रा का वितं रु पा य नं न — सी वा कु व वो प र क न रं

कृ तं ॥ ९ ॥ प स्थं स्नानाति — व अ ज्ञा न न्वा ता रे वृ कि नं र न अने नो पा य नं नै व वृ तं स्यां नं कु नु प मो ॥ १० ॥ प वं र रा स्

व वे मि ज वृ तं कु य नि नो व अः वृ तां ते रा वि प्रे त्यो वृ ती र ज्ञा रु पा य नं ॥ ११ ॥ र सि ता ति य तं र वि र अ क्री क ता स्यं नि वौ ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तुलसी॰व रुवृतॊनि कानयि बा स्थलस ।१०।७४५वृ तिस्था॰ वतघा कु यादिवयि तो विधा नतः। गो दान॰ वप्र रा तक ज्ञावा
चा पुरुगृ ति कृतेः।७७१५ पव॰वृ त॰ना या देविकेतवि॰ कुशा स्य॰ निष्पौ रुजि ज्ञा॰न॰स्वरु॰।। स्ना व त॰कु स्याजि घा विल्यो ७३५ १ व कुं क्षौ
तु कुशा न कु॰ ती सु वा सुरा — ब्रितां।६ वा त कु ज्ञा देव॰ त॰ष्ठा ध्वा विं त॰ नाविज्ञ तै ७४५ ३ वा व कु ष्ठा दे को पित्त व वि तं॰ न विज्ञा ताि व म
क्षौ। प। स्यो क गौ कि ष्ठा॰ द — क्षा।७ रा ब्रितेः।७३१५ क गौ पि व त रा तकुमा कु ष्ठा॰ दक्षा। कु रा — ब्रितः। इत्य॰ हा स्नान॰ दवो
१२ तस्मि पा या ब्रतिनि — यनाजि के॰ ७७५ द वा स्य॰ पुष्य देवे रु३ वा त सायं चा — ब्रितः। किंमधर्मा मतो
देवक रुव॰ रुवे रवना — ७२५ ३ वा व कु ष्ठा ३ व स्य॰ तव माता तिरुः। सेतार्घवृ — त॰ कर्तु कानातक॰
तव तं॰न॰न॰७ गारु व — पवितेस्य॰ पुरुति ज्यारस्य॰ सौ रस्य॰ श्रुत॰ पत्र म ज॰ रात — तिष्ठ॰ तु दांत क॰ वा मरु
रक्षके ७ थितव माता तुः — स्य दा पी तेः। तत्रज्ञ॰ तन स्य॰ रायः। तव कु ज्ञा रयो कु ज्ञौ दान का॰ निकुम स्य॰ तिन॥ ७१५
इति कुशा व व सु वाकाति — स्वक्रम न्दा यस्ताः। कु ज्ञा से मध्यपात॰ रात निष्ठ स्य म ब्रितः। ८०५ वा कु म स्यौ रसौ कर्णीः
कु॰ तौ रातु॰ स त कृतेः। व तारु॰ वै तधा कुयावितं॰ व के घात कृतेः। ७१५ देव ज्ञा स्य॰ निष्यौ कु॰ ती॰ पात॰ सा पय द विताः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कृष्णेन कारितं सर्वं समस्तं न्यायसर्वसा॥१५ कृष्णप्रोक्तं तथा तत्कृत्यं कृतं चक्रे यथा वच्चतु उपायनं इत्यतल ब्रू॰
ज्ञातित्वो य यथा कुर्म॰॥१४॥ आवायोयसु रीलास्य सो जियस्य स्य क हृ॰ विने प्रतिमा॰ विष्णीतक्रायतुलस्यी इलस्य॰
मितेन॰॥१५॥ पकृ॰तीर्द् कोतथा देवविष्णु अविप्रयता मितिक्ष्या॰स्य लारुनेनेवस्य विज्ञा॰नेनतो मन्न॰॥१६॥
प्रवं॰ इतास्यु वर्जित विधायस्य कृतायसो उ यावन विन्यानेन कु॰ती॰कृ लास्न स॰स यो॥१७॥
सुजि ज्ञिन स्तु न सोतिमा स्वना अं॰ प्रानु स्वानु ततः॥ ओपनीतकृतं॰ वक्रे कु॰त्यास्य॰नो॥
तातत्वा॥१८॥ पदृतः स्यायस्य प्रतावेन कृष्णप्रोक्तेर तेनवा नु धे सो तु स्वालि क्तितय पा॰ठ
वः कौ न वा॰ स यथा॥१९॥ वतस्यास्य प्रतावेन कृष्णस्येव न सौदृशः॥ सोकुवणिते निजात कृतसर्वपापवि
वर्जिता॥ १४-१५ जन पौसैः पजितेतोदृरु लोकेस्मिन्स्यात्तिता॥ कृष्णानुविधिलानुतो मानुमोस॰ यान्ति नरव॰ वायशः॥
॥१४०॥ —यदृतिसीवक्ष्य नातो कृष्णाश्मीवतं॰ स्य॰ कुर्यात्॥ —पस्मीणो पालकृष्णावेतामस्यु — ॰॰॰

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सीरा तमरक्षाभ्य धकाल प्रतिज्ञा पनं कलाप्त्र आदेशाता पति पुकां क अधिपुनोक्त एवं ज्ञातविरोध तावत्सिद्धायां (२) ततत्पौत्र
स्मात्कामित्पादि वर्तुर्वर्षे त १३ जाधर्मसिन्धर्म धर्मं आद्य चाना नय ऐरव ख्याति वन्धय धर्मं स वेजितः स्वात्स्विनीनां पातिव्रत्य स्विन्ध

११ धर्मं अतैनचापात्सेधर्मं — आवर्तितव्रत स-पुर्णा समस्त धर्म नावा ब्राह्मधर्मं स्त्री स्वर्गा जो नीव्रत — अजिरयस्क १९ना
स्वार्गी गी गोक्रुपक्वानेपातार पतश्च क्रतनीला या स्वात्स्विनीं मं नलक्ष्मानं कलात श्रावि तुकि पौत्रकत्या डा
नीव्रत कुचरेवीस्याप्तं नृणं नत्वा पाकस्य दपविरय ममस्य वास्विनीया वकेमीनपर्यन्तं स्मृता
व्यस्तिन्वर्धर्मं स्त्री स्वार्गीणोनी धीतापर्धिमानानावादनजोउरोपत्ता नपुत्रां कजित्योतिस्वं

प्राप्ताप्रतिज्ञापलं कृ
कलत्पातततः फल ला स्थानेतिं रा स्थारितं कला कल्पेति मं र पुत्रामात्मा ... अचाशन पालपुत्रां कथा
तत्पुर्वद्वनेद्वानस्सिथे। अजस्यतां मत्तैनवाद्यावृत्तैनवायादस्तिप्राद्वानेद्वानास्त्रवैरव उ सैनवाया क्रोधत्तैनवा
यापदस्त्वमदानेदानस्सिथेउनृत्ततैनवायाकपालतैनवायाउ तद्वानेदानस्तियै। तीजातैनवायारस्यं दातैन
नवायाविहुद्गृतिनिदेवतातां। दानपालपुत्रां: रपमर्पया ओ अद्यपीकपुत्रां कनिजोत्तमपानरात्रै।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

लयो रे विरोद स्यंदारं कानिता त नसिंआसनं रे विखीकु तद्ध अस्याजितं ॥आस नं५ कापी स्यन वितं स्तु लंजो उरा ण्ं पिसं
स्तुतं ब्रतस्सिधौ अदा रे जि अंपयाअि खुअं ग तो दोन स्धा व नं॥ अदा रे जिअदा का ये अ दानौ ते अ दा प्र तोपा अंन दाता
७१ वनरे उ तला सिनअो स्तु तो॥ पचं॥ स्वता णौ निन अस्तुता स्वलो कजि ता धि ये॥ला दि आ॰ क प या रे जिण दाता स्यं॰
नअो स्तु तो आच्यं॰ स्साय नेंउस्तु ते णौ नि खु नास्तु न स्तु पुजि तो अस्यापितं अ दा रे विमे दाता तव अनीय
कं॥ आ त अनी य॥ ब्रतस्सि॰ धौ अ दा रे जि अंनुप कं॰ वरीस तो॥ त्त कू ध्रि ये न दा ताल॰ स्तु प्र स्यं॰ कालअ ये
खनि॥ लनुप कं॰ प्सी नं॰ रंगा॥ अनुत्तिः राकनीतिः पर्ं लो रकैः॥ रश्नाठं॰ष दाता स्वर्णा ति रे वि पं॰रा
अतो र कं॰ पं॰ वाअतस्ता नं॥ सु वन कलरा नी तै रि को स्यै न तान वितैः॥ स्नाप या जि त वानि दुस्स ना नाती यो अ
लैः रुतैः॥ दि नातय वातीये ति रु यो रकस्ना नं॥ जि कां॰ रु क थ नो रे वि जे वा ना नी न ना वि तो॥ जि कां॰ वनस्य ार तं॰ स्यं॰न
दाता रु ना वि तो॥ व रश्नं॥ व अ दे उ स्यं दा प्रा कम र त्रि नोरे अ सं रु को से जु ना वि त स रे रे वि जे ग री रव न या व तीं उ पवीतं॰ प्रदास्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

७४

वंपकवासंनौ।
नासकानु।
स्योमखुयोमलीव
नायेन
नोलातिपु।
कामनुपायेक्रतौ।
नीलोलकायेललाहं
रवेरवेयेरिनः।
स्पतगैयेसवर्णि
पुकयाअ

अधावर्तिपुआं
पार्वतीयेऊयायं
विंघेया या।
रांरप निल्पये।
नअजिल्पये।
गंगायेयश्मनायेश

तवान्येआ।
पुरूये।
नंदिनै।
सेतपालाये।
सन्स्वतौ।
वास्तुपुनजाये।
सौनौयेप्रव
भावतिपुआग
द्विती यावृति
पुआंक
नंजिनौ।
भाद्रिसुताये।
नवेराये।

यजुर्वेदाये।
साम वेदाये।
अथर्वणवेदा।
इतिहासपुराण
णाये।
नालेना।
विलालेना।
संस्थलाये।
नंनकसे।
तंतमसे।
संसुसंम
उलाये।

उंसोममंडलाये।
वंवह्निमंडलाये।
स्त्रीस्वनगोयै।
द्वितीयावर्तिपुआं
ततीयावर्तिपुआं
उं रनकुये।
अकाराकुये।
अकाराकुये।
इकाराकुये।
क्रियाराकुये।

इानराकुये।
ब्राह्मेयेमाहेश्वरै।
कौमाये।
वैष्णवे।
वाराये।
शिवाये।
वीनतन्नाये।
कमलवासिने।
सीरस्वनगोपे।
ततीयावर्तिपुआं।

अधानतुर्थाव
तिपुआंकलाा
पकनुपाया।
लक्ष्मीपाये।
वनप्रराया।
वनराये।
रआन्हपिक्र
पालायल
वतुर्थावितिपुआं।
पंनमावर्तिपुआं

पार्वतीपुपाया
वनराये।
जन्माये।
वनप्रराये।
आजितपाणि
नवग्रराया
नुआया।
नराया।
पआया।
पारराया।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नालेनाचौ।
आंनपुतामिचौ।
स्वर्णपीतवप्रवियनचौ।
विरवेरवचौ।
पंनमादातिउआदा।
अघपलपुआन।
उतवलाचौ।
आतीपवंसम।
तिवविकाचौ।
अनवीनपतं।

गौचैविंपकापा।
आचाचौमानपा।
उआचा आचीपा।
तणुरुतांचौ।
रुणंधीपतं।

तकाच।
विपुक्रांतीपा।
जरानंउनौ।
आनतीपा।
देवकंजितोय।
नंचावतुलपा।
खताजचौ।
अवाआनवि।
वनदाय।
उतुनपतं।
दजेवदाय।

रातपलन।
रावातसौ।
कल्नानपा।
रावाय।
विलुपतं।
पञानुग्रह।
काजितचे।
मल्लिकोप।
वितोरनाय।
राढिंनपवव।

सर्वेरवचौ।
समक्षपताभिस।
अघपुवपुआं।
उआचौआतीपा।
कातमाजिनचौ।
पुनपुवनन।
रतमतामायौ।
रंपकापा।
गौचौ।
मल्लिकोपा।

रिवाचौ।
रंउपवपा।
वसिंनचौ।
गौनंदिकोपा।
मारेरवचौ।
नंआव।
तुलपुभंपा।
कौमाचौ।
कल्नानपा।
आराआयाचौ।

गौविंदपा।
रावीनरचौ।
रचौन।
नकुलपा।
ऊँ
अरिपला।
उकौन।
कनवीनपा।

स्वनगौचौ।
ओडराजुपातिसम।
अघआशोहनाडपु।
आंकनिजचौवुआवाचा।
उंनिआचाचौ।
कातमाजिनचौ।गौचौ।
कौमाचौ।
विंनवाजिंनचौ।
वानीरवचौ।
आवाआचाय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

१७

कालीनानर्थ।
कं० क्षालनानिताये।
रोगास्यातनगायै १०
उग्रायै। पतउकान्यै।
स्वधुलक्षं०प्यायै।
क्षास्वस्तुर्यै।
सह्वा०न्यो। नानितायै
वं०झौ। तीजायै
आसिजा०तुकै।
लस्नेतायैनमं०तायै १०
नाक्षैन [illegible]

नाक्षं०न्यै
विकानान्यै।
क्षाक्षाक्षान्यै।
तन०णितेभ्य।
क्षउं०ताये।
भूम्यनाया।

कंजेया। तेजिनेश्व०।
क्षेजिनैन।
सिनायै।
आग्रताये।
श्रामातये।
निउायै।
विक्षान्यै।
सीख्यनामिने।
सं०उवेनाया।
अस्नानाराय।
वक्षायै १४०।
तउायै। श्राक्षापतैया

कनान्यै।
तैनवौ।
नौउौ।
अहूआस्यै।
कपालन्यै।
वाक्षं०उवै।
नक्रनामंझौ।
अप्योनायै १५०
प्योनतुनायै।
निकुपायै।
अजातुपायै।

स्वतुपायै।
सुब्रतायै।
सस्यायै।
अस्यायै।
जिअंचायै।
अजितायै।
अपराजितायै १६०
थारेन०तायै।
नाकु०तायै।
नातवौ।
नानमानवै।

बुस्तु०नताया।
सुपर्णिन्यै।
ललाटास्यै।
कपर्दिन्यै।
होप्यवासिन्यै।
अंकुवेश १७०।
चिनितायचा।
स्यावित्यै।
स्वतनातामायै।
अङ्कुं०नतयै।
कौशिकायै।

क्षक्षानायायै।
विलाक्षेन।
मेघायै।
स्वनस्व
तयै
कां०नकौ १८०
निस्यं०न्यै।
निजनां०तकयै।
सुवर्णिन्यै।
ललाटास्यै।

कपजिन्यै।
रिज०कवादिन्यै।
स्वकुसेरकायै।
रुजनेपनायै।
रेवकौ।
कनन्नायै १९०
बुस्तानायै।
वेरमातकायै।
पार्वत्यै।
तापस्यै।

उवान्यै।
आक्षेशायै।
उजायै।
उमायै।
अक्षरायै।
अमानायै २००
काकाकं०
कानानिन्यै
जानाक्षायै।
सातकुपायै।
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

१२ [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अ घ तै लोकाम नतिक्रि यथ वं तिन॰ दिनौ क्रय — मौनीउ औतु त॰ कु यरे विकि या॰ कुला ७ष्य नमस्तेऊ ण ता॰ वं॰ ये नम स्वै लो कनना
यक्तिान म स्तेवि रवेऊनलिनेम स्तेतुवुने रव — नी ७ष्यु कुशाव पन याते कृपा मौनि — मतपवतवु त॰ वऋो स्वतन॰ णताव
९५ कानड्तगुतम॰ ७ष्पपौ नैः रवा॰ न पः क ला स्यादतौ मप र॰ यसौ — अ॰ ते तिव पर॰ प्रा प्र का॰ ताता॰ सौकितोन
पाा७ मियः रो तनबु त अि॰ कछिर त॰ रावायाः कु यानुः स्पकलद्बुतयो तनानिप्रापैतियः॰स्य
अन्पि क॰ तुविरो वस्य॰ प्यानि क्रि तिान निमलवर॰ स्पतुस्य॰ वयालिपर्वण — प परतिस्तीस्का॰ दवमा
ाा मौनी का॰ हे स्वनगो नीवतक धारनवता॰ स्प॰ वुतिणा — परनी रतन॰तु यातुप — परनीप — प
गाोराषापर तमस्तुास्यं रस्ती प्रााापति हााअ॰ लस्यबु आा विजमके रवनानजयः नयऋः स्पा मा धवै पाानि ऋ॰ रानसि
ााषति क्रियामचीवाााराक्रि रेवि ताअा॰ वी — अ॰ क्रो॰ राक्रिः क्री॰ कीलक॰ रवीपाताषतिक्रो स्ति यधैअवे तनि योगःाा
प्रो ड॰ अ॰ क॰ स्य॰ न॰ प्य॰ र॰ पघि काप्रे नोवाघ न कारपतमन्ने अा॰ अ॰ ७ शि कोतया॰ न अः ।ऊ॰ र॰ च॰ ऊ॰ अ॰ न॰ ७॰ रो

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रानकरस्वरं — नतुपननसनं नातमेनेह्रीं तकं नी तमाण ॐ उं टं कं उं कं पां रमो लवब्रस (मिखा ब्राणामनेउं न
नमामताण ॐ उं तं घां रं यं नं (वा अपा (णपाद व (खु पस्था तमाने रुं आना (मि कातमा (ॐ पं पं पं नं तं अं वनना
रानविरु — नपातो दृ नमतमिने ऐं क (नि (ष्ठि कातमा (ॐ वं यं नं लं वं रों जं सं हं नं रों मानोनुमि
रुं कानविता तमेनेॐ कनतल कनप (जा तमा ॥ प वं द रपा (र्ति मासं कुमी — तु (ॐ तुतिवि स्वनो (मिति
रिक्षं यः (मानं नं पन नाजपोतानापप अमं स्व पाराक रा तीशारा — रारवना णानु (खुलं क
पालं रनतां कनावै नक्रां (तितो तां पणा मा (अदेवी (॥ पनमा तमा (निदेवेन — अवादे वं रस्व शौं क पेवा
ॐ आं ह्रीं क्रों रान लवरापसरों अअपाणां देवरमा पाणांरतु क स्य पा पाणः (ॐ आं हं सः देवरम
औ वरक (स्मि ताः (ॐ आं हं — सः देवरम वाह्ननारस्वसः — रमो लक्षि रवा पाणास्मापतमा
स्वस्तसे रुसेन (जिवं (तिजं तु स्मा सा (ततो — देवरमप रु (जि रुसों गु पां रतामं — पेवु ॥ — ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्मै प्राणाःप्रतिष्ठन्तु॥ अस्मै प्राणाश्चरन्तु च। अस्मै देवत्वमर्चायै मामहेति कश्चन॥ ततः प्राणान् संस्थाप्य...

...[illegible]

१८ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गागावती
त्रेताप

पउ ऽ ॰ पुवोविनितयवं॰ गाणविरोजगाविरोज्ञा जा॰र तत्रि छौ स्क॰ ऽ पु गाो कृ प्रकानेगार कृ वतुछी कतीयः स्रौसिधिविनायक
शीतय छ॰ स्म स्मज्ञाविनितत्र तपुत चौतातिवंपुरा छ॰स कनकायस्त्रि॰ त्रितमनोनघावा हय छ॰ अकनतो ——— गाण
गनगानाभिधिरावना रनाछ॰सविविकऽभितोनाऊरव॰नुतनोनघावाद्य छ॰स्र वऽ नवरीकनपारित य छ॰मं
तवेसिवसापुऽप्रा हय छ॰ स्रौसिधिविनायक शीतय छ॰ स्रौसिधिविनाय
नायकपुक॰क त्रिको कक्ुता॰नवेन रस्रौसिधिविध
स्तिकास्तनैः । स्र॰ वेरघा नं॰ रबेतलिखेतय स्र॰ कु यो दश दनं॰ तघाकर्णिकायां
तघा मध्ये कल्पितैः रव
वाऽ तक्षोकुतक॰र पचेतु । अघगातापतिपुरोपनं॰ कु योतु कंलरगावनं॰र॰ सावनं॰ कत्वापऽ तशेलिसं॰ ह व॰ मा
नेनरवितं॰ नारयेव॰ नै॰ः स्यापकः । नवरनरवितेरस्रौ ओतायसं॰ ह पुरायननः । स॰ ह पचा
नं॰ रयस्र॰ पयाशि । अ घद्रा नपातपु ऊा॰पुवेद्रा नेत्रानरस्रौ अुणिकवारुतां या । कृतु॰ ऊ राम॰ना याविति णे द्रा नेत्रान ससौ

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

३०

एक रं तारा।
लं बोरनाया।
स्थानितवौ।
पारिवमावानेवनास्तियौ।
गजवक्राया।
बालवं‌डास्याज्ञडास्य
उत्तरडानेडानस्तियौ।
सिद्धनाआस्या।
शुद्धवापास्या।
सीसिधिविनासकाया।
डानपालपुआःस्या।

आधापीकपु अं का। उऽआना नराकयौ। स्तुलप कत्यै। कुर्सा या। अन० ताया। वनाका या। वछिवयौ। नलसिंगालतं त अस्यो। लाया

नमसिया। डाताया। दैनावाया। ऐरवयोगा। अपमाणि। आडानाया। अवैनवडाया। अनेरवयायो। स्पं स्वताया। नंनकस्य। तं त असे।

अंडासयौ। सिंसिआरौ। पंपडासयौ। अंआसितां। गतैनवासप। अं अर्कसंड। लायडराकलाक्मनेप। संवद्धिसंडला। सडाडराकलाक्मनेप। उं सोमसंडलाय। जोडराकलाक्मनेप।

सीसिधिविनासकाया। पीकपुआःस्था। नवराकृपुआण। तीव्रास्य। ज्वालिनयौ। नंडायातोनडाय। कासपुषितायिपुआया। ते ओ वत्तयौस्तमास। वेदनारिनयौ। वताया आसायं। अ याथास्वस्थाया।

विरुयौ। सवदिपयौ। उंनडोतयाते वास्तुरेडाचस्पं गा चरपाकृयाचा। रपवाक नाया सपनिकानाया सराकृ यो। सवीलंकानतुजितायो। सीस्पिधिविनायकरेड ताल्यों नमः। नवराकृ पुआःस्वमपचोसिाःसयास्तुलिंगा नं। एकरं तं रउणकं नं नक्रवकृं वतुतक्रिं पारमं कुराणनं नेवं ...

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ल्या येऽस्मिन्विनाशकण्ठरवी सि ऽविनोशकाया ल्यानं॥
(सवि ह्लेरा —— विघ्नना आगच्छ कं नन्नाध्याऽत्रशूनास्तननात्रिता।आवारु स्या
शागाव्रतवोतवाआरूप अंनमो स्तुते।आवाऊनं।विनायकनमस्ते स्तुनमस्ते विघ्नाशने।आसनं तुभ्यं ददे वण
पाअं।अशडवासमा नं।विघ्नेनाऊनमस्ते स्तु पकरं। तास्य दैनअं।पाअं। गशागादेवेशा अन्याद्रतं सततक्रितेः
विघ्नेनाऊनमस्ते स्तुत शृक्रं अच्यन्तं तत्कारस्याध्यरूं।देरं नायनअस्तुतेन शागावनवोतवाअच्यर्न
स्कं रागक्तरूनरोद्वाव क्रनां विघ्नेनाशनेशास्थामितेलानसनं तेननुशो तवश तो।आनसनन
त्रीनेगारज्ञाद्यारत्नवि स्वदविघ्नविनानागानमोस्तुते नागा ल्यस अनुपकं द्रा (सतोअनुपकंपुवं
नंगं गोरकै शृक्रं गशागा नगानायका।अनाथस्त्रावअ लोकानुग्रहकाराग(र)घोरकस्त्रानं।तक्रवस्रग्रन्धं मा अनुनातघागपस्वाकं कं नन्यातिस्वस्त्रानं।लं गो स्नात(पं) चामतस्नानं।स्ना
देव

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कि न्नौ पूजा
प्रतारूपा याजं तौ पू
पुष्पं नाथाकपालैः
गजकर्णिकायाकनैवेद्यं
पुष्पकेतवे नाशिकं
दिके नेलायाने तंपु
सरूनलायातुसाक्तं
कलारूराघातमौपु
नं गापत्रायाभकृतं

कलाभराय
नाणकं नंपु
विश्वेश्व राय
सि नंपु
सर्वेश्व रूपा
सर्वाङ्गिणं पूजया
मादतुता पूजा

गणाधिपाय
उमापुत्राय
अघनाशिने
एकदन्ताय
लम्बोदराय
गजवक्त्राय
शूर्पकर्णाय
एकदन्ताय
कपिलाय
गजकर्णिकाय

लम्बोदराय
विघ्ननाशिने
शुक्लकेतवे
गणाध्यक्षाय
श्रीपुत्राय
रक्तवक्त्राय
भुजकेशिनाय
कुमारगुरवे
विनायकाय

प्रथमावरणपूजा
द्वितीयावरणपूजा
विघ्न गणपतये
वीर गणपतये
शूर गणपतये
विनायक गणपतये
वर गणपतये
रक्तवक्त्र गणपतये
एकदन्त गणपतये

लम्बोदर गणपतये
क्षिप्र गणपतये
प्रसाद गणपतये
इति द्वितीयावरणपू
जा
अष्टतीयावर
पूजा कजिनो
नानायैनप

नालेखनाय
नालेखनाय
नाभतराय
जिनिको यजत्यायै
पूजनलाताय
अशोरनायाइतितदी
यावरणपूजा
अष्टचतुर्थावरणपू
जां कनिको

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

३१

सिन्दूरसौभाग्य
सकलसौभाग्यवर्धनौ
आरोग्यवित्तदौ
दशांगलाभसम्पत्तौ
इति विघ्नहरार्चनात् [illegible]
आचमनं बला दत्तिक्रियाः
इंद्रादिसौभाग्यदः पं
स्वात्वादि कृतांजलिः
अर्चयेत् पुष्पं करे
सुमुखाय मालतीपत्रं

गणाधिपाय
भृङ्गराजपत्रं
उमापुत्राय बिल्वपत्रं
गजाननाय दूर्वापत्रं
उमापत्रं

लंबोदराय
बदरीपत्रं
हरसूनवे
धत्तूरपत्रं
गजाननाय
तुलसीपत्रं
गुहाग्रजाय
अपामार्गं
एकदन्ताय
बृहतीपत्रं
इतरवृक्षाय

शमीपत्रं
विकटाय
करवीरपत्रं
विनायकाय
अश्मान्तकपत्रं
कपिलाय
अर्कपत्रं
गजदन्ताय
अर्जुनपत्रं
पल्लिहीना

विष्णुक्रान्तापत्रं
बटवे दाडिम्बपत्रं
सुराग्रजाय
गांगेयीपत्रं
सुरेशविलिनो
सकाचाय
चिंतामणिवेताळि
सस्यपर्णानि
अष्टोत्तरपुष्पाणि
गणेशाय
केतकीपुष्पं

विकटाय
नकुलं
गणाक्रीडाय
मल्लिकां
एकदंताय
मालतीं
अशोकनाय
चंपकां
कुसुमवराय
आराकां

विघ्नराजाय
गोरंटकां
निर्जिह्वराय
[illegible]
भृंगपीठं
कानताय
नंद्यावर्तं
पार्वतीनन्दनाय
पाटलिकोत्पलं

गौरीतनयाय
रात्रिंदिवपुष्पं
पार्वतीसुताय
नागबन्धकां
गणवल्लभाय
पुष्पिकापुष्पं
सर्वेश्वराय [illegible]
गणेशसर्वकार्यपद्माय
श्रीगजाननपद्मार्चिताय
कार्तिकपुष्पं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वक्रतुण्डाय ।
करवीरपुष्पं ।
सहस्रनवेआर्कं ।
देवारुवनार्चिताय ।
कुंकुमचन्दनं ।
बालवंशाय तुलसी ।
गौरीसाधपुष्पं ।
श्रीअभिविनायकाय
एकविंशति पुष्पाणि
समर्पयामि ।

अस्य श्रीविघ्नेश्वरनामस्तोत्रमन्त्रस्य ... नामस्तोत्रमन्त्रस्य ... अनुष्टुप्छन्दः ... देवता ...
विघ्नेश्वरप्रसादसिद्ध्यर्थे ... जपे विनियोगः । ध्यानम् । [illegible]
म [illegible]
[illegible] ... विघ्नेश्वराय ... [illegible]

विघ्नेश्वराय ।	अव्ययाय ।	वीराय ।	सर्वतनयाय ।	शुभ्रद्युतिप्रदायकाय ।
विघ्नराजाय ।	पूताय ।	श्रीदाय ।	शर्वरीपतये ।	शान्ताय गजाननाय ।
गौरीपुत्राय ।	भूताध्यक्षाय ।	वाणीबल-	सर्वात्मकाय ।	ब्रह्मचारिणे गजाननाय ।
विनायकाय ।	द्विजप्रियाय ।	प्रदाय ।	सृष्टिकर्त्रे ।	द्वैमातुराय मुनिस्तुत्याय ।
स्कन्दाग्रजाय ।	अग्निगर्भच्छिदे नमः ।	सर्वसिद्धि-प्रदायकाय ।	देवानीकार्चिताय । शिवाय नमः ।	भक्तविघ्नविनाशकाय ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

एकदंताय। ओंकारस्वरूपिणे नमाय।

वतनाक्षिवे। वाराणंकुराय नमाय।४० नीलकंठनमनाय।
२१ वतुराननायाः। वंडाय। आकाशाय।
शक्तिरक्षांकृताय। प्रचंडाय। वनराजस्थिताय।
लंबोदराय। [illegible] कवचे। विघ्नहराय।
रुणकर्णाय। तीताय। वीततमाय।
देवेदाय। [illegible] गजवक्त्राय।
ब्रह्मादिविनाय। [illegible]नाय। [illegible]
कालाय। अकल्म[illegible]षाय। श्रीरामाय नमः।
श्रुतपतये। स्वयं[illegible]राय। श्रीपतिविघ्नराजिताय।
कामिने। सिद्धिविनायकाय। कुलाधिपतये।
कटिलाय।

वंदुरुडाय। आखुरथनाय। नागोपवीतिने। श्रीकंठाय। नामाविताय। ज्ञातिने। स्थूलकाय। लक्ष्मीकान्ताय। सामप्रियाय। स्थूलदंताय।

आश्रितपालाय। श्रीरामाय। श्रावणाय। गणपाय। स्कंदाग्रजाय। सुखदाय। सुतगाय। रुद्राय। वामिराय। शिवप्रियाय।

[illegible] कालाय। पापनाशिने। सर्वसिद्धिदाय। आसितदेवीपतये। सौम्याय। तत्काराय। पद्मतांबोलिप्रियाय।

केशवाय। जिष्णवे। सर्वविघ्नविनाशकाय। ज्ञानिने। सर्वाकृताय। अनंतावतारनिरताय। सर्वकार्यसिद्धिदाय। सर्वसिद्धिप्रदाय। भक्तवत्सलाय। आखुवाहनाय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पार्वतीरां कर्णोस्कं र ॥ नम व देन स (विं) तें ॥ — यनमा (क्षि) य — पमा घ मं श्रीं तननाम पुमां तुनमर्पया (मि) य — पकृ श्रा नृ
फेननो हुंकु लाल सा — सभा यु कुं गण ना प्यत पुनि तं पु भाग लाय रास्य (मि) नु पो यं व्रति नस्त त (नु) पं नो
समस्तं कनका (यच) त्मनो — स (वि) ज स भा यु कुं विन्न कं तानि वा न पा (उ) र पि यन म से सु री पो यं व्रति न स्व ता (नी) व ॥
वनरा या आ सुवा कनायु — स प्य तं स ण उ वैव मो र का नु प्य त पा जि ता नु (नै) वे शं — र (यं) ग सो प्य रं न म स्ते (पि)
कु (फा) सि तो या — नना (सि) ने (नै) वे शं (उ) र सु रं णे उं नसकु रं नो (लि) के रस — सा (वृ) तें (ज) त स ल उं कु के (सं)
सर्व (त्म) नो नमः — यु कुं करनी दा उ मं पर्ण लं (प्र) लस्य मर्पि (णं) (आ) पो रा — नं सु नन्ते (हा) सु म सा र
स्व (सि) (धि) व रा य काया — नमो न मा ० (त) कृ नारं अ सा वे व ण (रु) पा द न तो त वा आ पो रा नं (बा) लवं उ न म स्ते स
स्री (सि) जि (वि) ना य काया —

१०० (नो) नमः ॥ तक्रा नां (वि) म्न ना (सि) ने उ (त) रा पो रा नं वे व ण — रा (ता) (न) (ता) ना य (क) ः (उ) न ना पो रा नं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

२४ [illegible]

लंबलि रुत्र तां । तां रु

नीनाम नं । यु रु त्र ।

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गागालिपोया । सुमिकवाहनाया
उवाशि म्भं॰स्था । उवाक्षि म्भं॰
उमाश्नलायउवाक्षि ।
अमनाशिनेउवाक्षि ।
विनोयकायेउवाक्षि ।
डीरपनाअउवाक्षि ।
सर्वसिद्धिप्रदायकाया
उवाक्षि म्भं॰ ।
पकादंतायउवाक्षि । एकस्नात्नन्वे ।
इतवक्त्रायउवाक्षि । उवाक्षिम्भं॰

पगागाजिपनेसास्ससुउमापसा पनारान । विनायके राप्ते लितघासुमिकवाहना ।
पकुस्नात्रप्नवेतुतं॰ पुअनीयः प्र यनतः । ए कै केनतुनासात् द्वैक॰ सर्वनासातिः अ
घौकाविराति॰ नस्ना॰ उवक्षिका॰ हसर्पयेतु । ४ का॰ उवा॰ हेन सर्पयोसा । अ पजि॰ तः ।
गौनीसात स्थसुत ओगरथासीकस्नात्नका । गगाजिपे
ओस्सुतेप्रस्न॰ना अनेप कद॰ ता यावि अदे । तत चनि ।
लानस्नउानस्प आनदास्नसा विदराओदकानस
गोराधि यतासासा । उपायनद्रानं॰ गगागानिपनसस्से सुरतत॰ ओरकापियो । अक्षिलं॰
कुनओदेवस्नदकायेजिसवरा । उपायनं॰ ओद नाप्रतिनद्रा मितउाअपनस॰ कृत
नारसु द्रुतप सेसुक्तः॰ते गागोराधिपेतासामा । इतिद्रा॰ सगगाक्तिः । गगोरा॰ प्रतिनद्रात

नद्राग्रा पने॰ नअ वक्षन
आघोपायानं॰ पस्नप
दसिताग॰ उअ सेस्ना न

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गतो यो वै दक्षिणे [illegible] पान्त्रे नको [illegible] गतो या यन [illegible] नः प्रतिशृ [illegible] तां अती [illegible] [illegible]
त्रिश विना यात्य प्राधीया — अन्वेश [illegible] इति प्रोधिनं पुर्वं यत [illegible] तो ने [illegible] सिद्धिं [illegible] दे [illegible] [illegible]
शभु स्वश्री तिओदावाय ३ते — नयाऽ
इतनवनविष्ण: स्वभा — [illegible] ४ — ४ — ४ — [illegible] न [illegible] स [illegible] [illegible] ४
क है ३) क्ष्म्राव [illegible] विद्भुग — [illegible] ३ तु [illegible] ४ — ४ [illegible] ४ — ४
स०या य० ९ त्रिव [illegible] — त्रि [illegible] तस्य तद्गु [illegible] — वै [illegible] ते है
३० ९ तेमा: कलकै वैव — [illegible] ते रैस्य घान [illegible] [illegible] ता [illegible] ११९४
वातिआ [illegible] [illegible] जौ त घान पतेः पान व कु स्यमऊ स — सिद्धिके [illegible] तां [illegible] सिद्धि तवे नपापं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible] सेति नास्तात्र [illegible] रयास [illegible] तः [illegible] विनायकेराग [illegible] [illegible] तो यवरी [illegible]

नैवे [illegible] नासि नेत्यात तोउ वीरू के रानु [illegible] रातिं [illegible] नीयः [illegible] नेन पतिनीसा [illegible] [illegible] यति

कृं [illegible] सतै [illegible] उवी [illegible] नसीलात तत्कृया रेव [illegible] ये तु [illegible] विनायकन [illegible]

कैरा [illegible] सद्दिसिद्धि [illegible] यकाल्पिक [illegible] तत्वक्तेति [illegible] नाक्र [illegible] विनोक्र

२९ उ [illegible] नीयः [illegible] ततः [illegible] कौके नतुनास्तात रलैक [illegible] सर्वनीमतिः [illegible] विरेरा [illegible] तत्वेत्तत्वं

स्थापयिता [illegible] [illegible] राजि [illegible] यरातका [illegible] [illegible] कानु [illegible]

कं [illegible] [illegible] वेरेया [illegible] नै वे [illegible] [illegible] नाब्राह्म [illegible] नृतो [illegible] रां के [illegible]

[illegible] तिं [illegible] वं [illegible] तेलसे [illegible] नाय [illegible] ने [illegible] तवेनितां [illegible] सतां [illegible] कीयातै [illegible]

[illegible] नपु [illegible] तः रतु [illegible] राक्रे [illegible] ततः [illegible] तव्याव तव [illegible] न [illegible] तां [illegible] [illegible] तो [illegible]

[illegible] तदवरन्न [illegible] नाबि तिः [illegible] नानरेवे नतवव सीतान [illegible] सीताः [illegible] [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कजेश्रान्तःतस्य भरो कजकैणादिनायकः ॥ — पुअनीयः श्रयनेन भानः सस्मासचन्तवेतुजः पञ्चशको नैसधारुतैः

पुअनीयो गणाणजिवः ।
विश्रोमौ कौ ल तेदिश्रान्तकासोन तेयनन्४०॥ कयन्वऊ यकोभस्यपत घीलतते रुतानु ।

पतिकोभरस्वत्ततान्
स्यौत्तागम्बस्त्वा सिनीयाप विल वा पुअ पित्तात वैलनः

१२ रुदी स्वारुपुकोस्या
नापुयाल्क सितृविशवाणा

स्यन्तेवपुक्रितारस्यर्त
सोगणालिपः ७७५ तस्मिन् हन्पुक्रिते विक्षनीरपेत्तनुस्त

विश्रोतकृत्यासिधिर्वि
स्यन्रायः क्षस्यन्छं कोप्याभातगणान्वजितश्रातवः
घाउ भाक्ष यकारु ठ

धिरस्यप्रसादतः ॥४७॥
नायकोरुतः ॥४८॥ यररुन्रुतु सान्नितोन्स्तावये द्वारस्मा सितः । सिलन्तस्वकोयोगिले

इति श्रीस्कान्दे गणेतोक प्राप्त अख्यानस्यान्वारे सिधिविनायक व्रतकथन्सन्पुणं प ॥

श्रतिभोदानाः । पुविकस्यन्वतुर्थ्यान्स्यनेरु पन्गकाननं । विसताङ्गणानाघोभेदारुपा सिद्धि पुन्नवन्प्रातभोदानं ॥

सीअसगणपतयेनमः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

२०

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अथ नवरात्रि पूजां करिष्ये [illegible]

सतो । कामनुविताये । [illegible]

[illegible] । अरणपा [illegible] नवरात्रि [illegible]

१८ ततोऽनन्तरः सप्त [illegible] सप्तपर्णानि [illegible]

[illegible] तथा [illegible] सवीरपत्र [illegible]

[illegible]

[illegible] इति [illegible] सर्वलोका [illegible] सर्वलोके [illegible]

ताः । [illegible] सर्वलोक [illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

80

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

आनन्दाः स्युः सत्त्वज्ञानं तास्तु [illegible] तास्त्वा अज्ञातपः । आनन्दाः सन आनन्दे भ्रंश [illegible] नन्दाः सन [illegible]
तैः प्रकाशयेत् तं वर्णितेन ज्ञानेन युक्तो वाणीं [illegible] ज्ञानं पोजस्य तारे वेदान् [illegible]
४न [illegible] आनन्दस्य आवारः चामीकरस्य पादे [illegible] [illegible]
कारणानुरेवापृत स्वर्णमय [illegible] [illegible]
[illegible] तं जन्मनो वर्णो [illegible] पञ्चानां करणपादिस्थित [illegible] आवारणानि [illegible]
आवारणा [illegible] ज्ञानं [illegible] स्वर्णविस्तारं [illegible]
ज्ञानं तज्ज्ञानीरवन्नाः । करणपादि [illegible]
[illegible] करणपापाद [illegible]
[illegible] करणपापादि [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कृता: स्वे वमनो रूना नृ।असतां स्वप्रस क्वा।मे स्वीक नृ्ष्ठं नीरव नाः।अस्त ता नृ।रा तपसं सुकुरसु। म
लिकोंआ लतीं तआ।कुआ धं वः प्रस क्वा।मे नीनां प्रीतकान।ता तृ। वृक्ष्वपं।अ या।ं गकुआं।क।क दम पा।जस्न तन
जितयोंण्या तो। वन वा नत्वोंऽ।आ नु नीवत रा ना।रा तवोंऽ अं प्ये।रु।नि स्ने श्रोत्योंणुरु नुश्र। विस्र कलो तश्चो त्योः
५) क-दि।व्रतया।नत्वो। गस्रां।रा का आ।न त्यो।रु रनं।अवा।ना या।न तयो।रुकु यंण।कामंठ लया।नत्वो।
क्षा कु नु।वेद पानणे तवो।तु आनु।नजि त्यो।रु स्वानु।त रभ्भां।णे त्यो। गला।नु।तेओ अ रेत्यो।।
अ।सा।नि।अ हा।ण्या नत्वो।रा।नो।रवो।क रस वा।र स्वप्न नजि त्यो।स्य वं।णं।भु।अ या वनता।
पुआं।नजि तवः। सु।नि तवः।स्वो।ण त्यों।अ तें।प्र ओत्यो।।वि क्षुत्तु क्षेत्यौ।। अतत्ता।जि त्यो।ता स्भां।णे त्यो।
रा: ते त्यो।रतिघ द्याह्या वर्णा आ।उरस्यो।रव वे अस्यै द्वितीया वर्णा अक्त तीया वर्णा।अ हा।ण्या।न त्यो। क अं।ठ लया।नि
त्यो।अ।श्रि स्रौ ले त्यो।चवि लपा।सा।त्यो। सा ण्वी ले त्यो।जि अ।ह्स ने त्यो।अ स आ।नि के त्यो।रतितृतीया वर्णा अथ त

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तु भनिनां कर्तानि । अष्टवष्ट आवर्तानि । उन्नीत तेन काया । तु रण नेत्यो । आघा पत्न उत्कत । आसी पतन । सामस पता
त नेत्ते त्यो । असित तरंग तैन काया । कपाल तैन काया । वेन वस्रे त्यो । अजि त्यो । स्रो नवानि त्यो । पास्य सो ।
स्ना स्थ कत त्तेत्यो । उउ तैन काया । तीजम तैन काया । विष्ठा हुण ने त्यो । तु लस्री पतन । अरुण पतन । आघ गुल्प
वसे नीवतो त्त्यो । संरुान तैन काया । आताना उत्त । नजि त्यो । विशे त्त्यो । गुणोंरुन
स्नायु के त्यो । इति पञ्च आवर्तानि । गोपे ते त्यो । विल्वपा । आपामानेय । तुरु नेत्यो ।
अश्वि स्रो ते त्यो । आघाज ष्ठा वर्तानि । वेरवित सो त्यो । अहल्यानि त्यो । स्रोणि त्यो । केतकी गुल्पा
उमासा आलापानि त्त्येय । इति नेपा उदुदे रसानाष्ठ । अनन्त पर्तने त्यो । कातीपा । उत्र पतन । विनु कले त्यो ।
सं रुे त्यो । जितः षष्ठा वर्तानि । तक्ष कौरण ले त्यो । वन वानि त्यो । अश्वि स्रोते त्यो । संपकाण
कअनिष्ठ त्यो । नं उ तैन काया । अघरस्न सा आवर्तानि । करम पाउरस्व सर । उग्र क्रान्ती पतन । वस्रूती पतन । वनवानि त्यो ।
इति वेतु षष्ठावर्तानि । कौप तैन काया । विवे त्यो । जित्यो । रस्व सप्त आवर्तानि । स्नाक्रा क्रान्ति त्यो । करम पाठ ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

८३

आ(न्ते को ण। रण अ त्व ण न्वा ता स्या
ऊ तें (जे ये त्यो। अ घ अ झ्रो त त न बा छा दु।
ने न का ण। अ नि त्यो।
रण अे त्यो। ण ता पत्री
चा ह त्री ण। ले त्यो।
वे र पा न णो त्यो।
न क न ण ण प।
रप रा का न व ने त्यो।
गु बु न ण ब प।
क र ण पा (जे स पुर। ख्यो। ज त्यो।
रा त आ न स्ये त्यो।

(क्ष तें (ऊ ची त्यो।
अ रू त्म त्यो।
वि ज्ञ त कृ त्यो।
अ स्रो ब ले त्यो।
ऊ त ड ते त्यो।
का ष्ठा (ज ति वि अ कृ त्यो।
बे कुं वे त्यो।
(जे न त रण अे त्यो।
वा ऽज्ञि त्यो।
वि णे ता त के त्यो।

रु वि त्यो।
अ त ता (जे त्यो।
रन त्वा रप अे त्यो।
ण ता त्यो।
त र व रे त्यो।
अ र आ न स्य त्यो।
वि स्त ल व से त्यो।
वि श्री चे त्यो।
रा तें त्यो।
वि छ प रा व कें त्यो।
अ कृ र अ ले त्यो।

वि दा ले त्यो।
खि ल स्य री र्घ
बा रु त्यो।
अ ता कुं उ ले त्यो।
के पा ख अ वे त्यो।
क डु न णो ने त्यो।
न न वि तु ज ता त्ये।
रू न श्रै वे स्याकु।
उ त्ले त्यो।
गु ऊ गु लेर्प त्यो।

कु अ प शे त्यो।
अ चि ज्ञ घ ष
धा वि ते त्यो।
क ता ता
च ने ले त्यो।
अ घ णा जि त्यो।
वै खा न न नि
ते त्यो।
स्यो अ व त्व यो
र र नि त्यो।

खा य कु के त्यो।
अ ज्ञि अ त्यो।
रा जे ता प रप उ टो त्यो।
आ श्र दो नि त्यो।
का अ व न ता त
त प ने त्यो।
च वि ल पा ता त्यो।
उ प जि त्रे त्यो।
आ ण री ल त्यो।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तिकुंडे तत्यो।
लावतमविम्बमैत्यो।
दुआस आलावित
रणदमने तत्यो।
स्वाताजिकुतित्यो।
रणस्त्री के तत्यो।
स्वारोजे तत्यो।
रणसुते तत्यो।
जितन अन्त ले त्यो।

नुंश्नाके तत्यो।
रुखक दु उओ तत्यो।
इंजितक तत्यो।
त्रिअहने त्यो।

कद्वासऊनमाजितत्यो।
इंडकअंडजुमाजितत्यो
कखुनीतिलके तत्यो।
लोलकुंडले तत्यो।
कुटिलानलके तत्यो।
वेदराशिरूढनातास
वतो तत्यो।
कपाल तत्यो।
अनंतवेदे तत्यो।
नवे तत्यो।

पवत्यारकनाति तत्यो।
नीतवेजितत्यो।
वेदान्तपारणे तत्यो।
तर्कजौरले तत्यो।
स्वारस्यखोने तत्यो।
अन्द्रस्मितकरसे तत्यो।
ताण्डवलजुनितकरसे तत्यो।
आरिनतातीप्रा
लपदे तत्यो।
मोदतोजकारनेतरके ते तत्यो।

आनामिततस
कने तत्यो।
बालार्कनोविले तत्यो।
रारव तत्यो।
कवरीरुनते तत्यो।
सानुजनुने तत्यो।
तीर्थयात्रने तत्यो।
उन्नतत्यराम के तत्यो।

अमितानीजितत्यो
पेते तत्यो।
तणवदत्यो।
प्रियंवदे तत्यो।
अजिदुतत्यो।
इंद्राजिवेजिते तत्यो।
वत्तुरसनोकरणंशने तत्यो।
त्रिओ तत्यो। ले तत्यो।
विना वन्नुतनो ति.

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रुचतत्वो। स्वाहुणतोतत्वो। अस्रोहुचक्त तत्वो। दारखुरुतत्वो।
वेरविदं रखेतत्वो। स्रौम्येतत्वो। रुवकृतत्वो
दीप्तिस्वतत्वो। दोजसे तत्वो। निष्ठातो तत्वो।
४४ विरागाचरे तत्वो। नित्यनष्टतिसा
बुधिरुतत्वो। नस्रेतत्वो।
कीर्तिरुतत्वो। दीनोधनगारदी
कुनरुवणा नोवनेतत्वो। लेतत्वो। करण
लेरानावतुनेतत्वो। वादिरुतत्वज
दरसे तत्वो। नोतत्वो। नाऋपुंऋते तत्वो। तत्वो। ऋाशोत
रुवरागस्रावितरु रुवरिते तत्वो। नलामपुआःसा।

५ कुशानवुं उग्रनं वरखुनं घं वनाानं तद्याकरवचातिश्नीनां च
५ पुवादीं दीयतेमयाक पञ्चवं रुवर्ति प्रतरुं रुकं अंथकानवि
५ नारानं दीवंनं रुतीतवैजिधाः तकुनारतं अयानपाःदीपनरुवा
५ कुंनां नानिरवर्णाणि रुवुपा कणंऊनानिवरोकनावत
५ रुंरुकुं पनस्रांनं निवेर योतुनैवेघं उक्षोकं रुध
५ कनं रुखुनं थं विशेलं रुतं। नकुं तुकुनघः रुवैस्स्तप्रसा
५ लेनं विदनचरुतचरानन। कुनी पलिरुनकपुनिं नाणवतीं
नावितं नानाणाघतं विधाः तां वुलं [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

विरोक रपच स्थानकोवात्ता॰ कारपपायन ओ नब्रः । इति प्रोतं श्रु रु पा॰ । ज्ञानतो ज्ञानतो शापि कृतं॰ सत्कृ कं नं॰ म श्च
स॰ पुराणि कृ तावि प्राः पुण्य रपस्था च लोक नात्वा पापधिनं॰ स्व लोक अ नताविप्राः वतु नाननवचस्पिः । मद्य॰ तुरु न्मता॰ स

४४ वैवृत॰ स॰ पुराणि स्तुतम्   इत्यच न विविलिस्य मावृः ५ ——— ५ श्रीप ——— ५   ५ (र) क्ला॰ व न्यन॰ विद्धि॰ । श्च
कृ॰ रे॰ रतुजा   नच्चानयवनारा ताणी कौवा नास्तुता नि रे व रे वे   रावृतानिष्णवद् नवमि

क घे   स्पा॰ वत॰ मे स्वमान   स्ववतंपातप नाससनन्तम वृ श्मौ वा वार तृजा   कंनु प्रवस्यामि वृतानाम्
वमं॰ वृत॰ रजिप॰ व   मीतपि रयात॰ सर्वपापदः॰ र तं॰ ७५ चैन चीर्तिं नरा॰ के प्यनरक॰ नैव पश्यति मतै
वोयद न॰ तीमसिलिसं   ५ नातनं॰ स्व वैरे हे तुदि अकलेर ॰ को नाम नाशतं तस्यता पशुरी लेतिपरिवृतपनाय
पा॰ ४५ तस्यामपत्य ण लं॰ ५ तस्य पुविनस तं म अथोतवागु र तस्वरपवे रानुस्या॰ णपरक मानुभ्यः समाने रकुलेतेन सुता
वै तं॰ वि वादि ता । विवादि तो व सारी॰ पं॰ वै मवत॰ प्राप सत्वनं॰ ५५ मतनं॰ तं॰ पाल सं॰ तीस्पानि केता तपके तपा । तस्याः रसेन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नता॰ कनन का म्हतं॰(स्)सीलो वाचदरो नेनवृतख्या स्नविश्रोतान॰विम लेकलो ग्रमक्रन्मस्वास्म जिथ्यान॰स्नमाख्यनम
तते ऊरस्नान अवसं स्यावआसं॰ते रवदे से क्रम्निनारास्य ग्न्समास्यर्क न॰ना घ्तवृतं॰क घय स्वनोनविन नमा स्तोलेस
तत स्वमय वृतानोत मं॰वृ तनें जिप॰वसीलविस्नातं॰स्तवृपावस नं॰स् तं॰ स्वोन वीतोनस्ऊ स्नतस्तेपापक
स्नवा तुश्न पुः स्य कोद्या तिप्पातरव आं यतेनातसं॰रा यः कल्यानानिविवे ॰ति सं॰पररवनिना १३॥ ६५
नतस्यस्ल परंतुस्या तवतिव॰र आनक्ता ऊ स्यघास्तानें क लानियास् मेवृ वाक्षवालनान सति यौवे
स्वः स्सो वाजिवेनानो जिथा स्वनिमक ओतिमवा निम नऊ॰ नःाषमा दे ऊ॰स्य हमक शकं वीत मोमायेनो
पलेपि तं॰नं॰नवृल्सस्या स्कुं॰नना नै स्वरोतितकेस्मपतत स्मह नजीनु रे वानु क लसो स्थाचचेवुतोा धूमाना
यैन पवा नैस्वकरसपाजिप घकवघकुसत्न॰ध नैउ पशी वैरेवाश्तस्नअं॰ल तश्ततोनै वेऊताा॰वुलम ॰त क्री
रुतः प लैः ॥ ५६५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यथाराक्षरस्यमनित्वैः उपाय बाणि रत्वाद्यर्थ लस्यात्वाद्विजनत्वकं । यं धास्यं तत्वमेवं यानत्वा । नेत्रक्तोत्यानतः स्तम्भैते नयत्वा
देवेकृतस्यावर्त्यनत्वयत्र काश्मण्ये यज्ञकृतरवयस्यां नरवयपात्र वा ॥ वृहि तात्प्रकां ॥ स्वबन्द्या स त्यम्ग्राम्य ना नेकाय पच्यत्व
वीणाश्यमवधितानांदस्य [illegible] क्षमा सत्य प्रत्यापयेतुः अनुः मतये प्रातत्वं । स्पृवास्ति नमे त्य घाविभिप्रकाश्वनस्या । नं कर
४६ ॥ त्वात्तुरुतास्व नेत्र यथाक्षमः ब्रानामाः रस्ति तां अक्षायावायां भुं च घाविभिनः पत्रतस्यात्वा यन
स्यित्पधिं पातं वाच प्रातपयेतुः अत्रे तयोः विषयाराक्तिनुनिकात्वं प्रता पयेतु ॥ ब्राह्मणात्त्वेतो
अयेतपरस्यात्तं श्रीस्या बं तृतिः स्वयात्र नेनविमिनास्याक्ष्वक्रतस्मेत तृप स्याव नेतुः ॥ ७८ यघातकृत्वा यते भुं तां
तत्कृतोब्रयस्या सितास्य वती धोभ यतप तानं स्ववयसे भयतत्वल ॥ स्ववदानेभ यतत्वं ॥ तं तत्वतत्वं सन्धवाकृत्या तु ।
अरत्वा नारस्वनत्वो वा विस्वं कनारुपपातकानुत्र ॥ तत्वा प स्यं स्यादि । वैकृत कया नजि यं तु श्री स्यवर्णिपपरामनो सानोपि

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त्र वना सनिाऽ४५बुस्र्स त्वोपरामनिन्त्रीतिः कार्यविरोबतः अतैवोदारूनं ती मसितिको स्य ञ्ज नातनं अपञ्ज नातुरं नोरो
ञ विकृस्त्वा मी मस्राथनः अ आतसर्ववेरस्वसर्वरारो स्वेज्यकानवश्चात स्यतार्पञ्ज ााप रीत्नावतु वामितनस ााय रीलत्रुवस्मा
रु क्लां वतिरु स्रुजाो नंतााप्स्थदरांः ञलो तवद्धीमानुजम्सीलो ञााविता तस्पतार्यानकु लावनाम्नायन्व
वतीरुत्तााप्स्पविस्तुः रु स्तुजााोरु कृः स्तत्म वादी कतें जे अेः ाकदाविरध स्यावत्यु नासी तौतितत्परााथ
नील्प्विञापरीला विनं ने अे स्यं आताव नअ स्थलाातधावनअ अााम स्यां तस्यां कालो अद्यानू न
ताः ष्वं आत्मानं नअ साक्रांतं नअनाति अरोधतापस्रोपिओरराण्णव तीं नवेरवद्ध लाराय ऽ येत्
का ते नना क्रं तावे तौप्र ———————— स तौ रं वतीउ तैानअ स्वं पवर्न रोजेाा स्वानरोति हवाण
ताव्यातस्याः स्यं वक रोजेत वलीव रौ वतु वरस्यात शी कोऽन सने प्राह्यावु तौ आ तिरुआनौ तदाय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

जलरप्यवण्के आताजापरीलारुनीतराज् क्रिशत्तोक्नी वैवस्मरंतीपुर्व पातकं।८४५ (नितालां।नलकजीरत्नलावद्दोवतुव
रुरुतौतौरंपवीवेतौण वेगाववनस्तौऌपअघरवंवहपनरनंपितुमैवानुरारिपनितोक्रकाश्रारुनाााद्देवपाक
रुाघिविथीअताण्छ्यत घातघोक्रपाकां।तेपाकरुघिननुतमााकृतःपाक
४८ वास्थतघातनुरणनारा ह्रानात्रानरवरमद्वपानुष्ठ्कृंपायसताऽकेवम रपश्रानंतःपाकंविह्वानरवे
राव्राननरूाघरस्रुवंवै पतितंविजंजत्रावेनेनसंरंपक्रंताऽऽपायस नलंक्र्ततिनातनाश्छिरानरुघ
क्रंतरघं।ताडितार नीवंरुवताररानीवश्राचानसंतेविरोजतःजतत्र्कातुपुर्वपाकंवस्त्रानावेनेनतनुस पुजितंविप्रारुपरांस्नानो
तानुपुर्ववनुपाकासं।नं तंअकनोवव्रजज्ञतप्रुणिपतोक्विताश्ररुनााास्नेनरााघंकब्राविलानलहतितोतुकेज
विघेजनोनुक्रंधांतसाक्विताबहिःजेप सिवंवराणावतघातुत्राक्रातुहौसरुराजिपत्नाररुक्रारुतववघायक

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
९८ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

(क्रि॰)जनवृतवीतेनिऋ न्यास॰तरख —— रु —— रवके।मदापाव॰ वोपवाव॰तरभीतवलितलु व॰ल्मिपणा मजीताप॰ वतवो

नमानाम॰वृतेनस्पा॰ नेनस नुमवलोकेपनिस्थीयनीचोनि खितं॰ वपाव॰ लोकेपव स्मिनुपयाा॰ति निमेला॰ —— प

—— इतिस्तीवृ॰ मा॰ ३७ नापोनजिव॰वमीवृतकधान न॰ अ॰प्ताणि॰ —— प

चक्रना आसैनमानवतिकुआ॰। कुवीबलितपव॰ज्ञाविरोजताविशिक्षाचा॰ हतति पच्चीकज्ञावताभरतुप —— प

उआ स्वा॰तपत्रनापवीता ष्ट॰ चक्रनाकुआ॰ कजिजेप॰ पकलराकुआरा॰ क्षकु धौआवजितव्रता॰नवेनम

तुतेरु॰ उनीलस्वमशते। वतव्रवाप्रादिवविज्ञुपीनस्पेरतुते।चक्रनास्पैव्याने॰। आ॰कलपसीनोशापादिस्य॰

नेस्वातिने॰कितव॰।कलसोवुरप आपुचितोच॰तस्मिन्मनोनमे।चक्रनाचैव्यान॰।अनचेचक्रना॰न॰ना॰अश

वेसोतानमनेदेवचक्रनेतेनमो स्तुते। आवाहनं। मनोनमे।चक्रनास्थापननं।चक्रनेतेनमस्तुते॰स्पवकोमपत्रिणनेस

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

देहपाये नमस्तुभ्यं सर्वलोक हितप्रियौ। सर्वलोकवरामनन्तुं णायै तेन मोस्तुते। अनस्तनं। णत्तुरुप्पारेनमस्तुभ्यं सर्वलिरूपा।
सं कृतं सर्वव्रतेमत्कारेवि
तरुपाये तेन मोस्तुते। पापं पक्षवेपाये नमस्तुभ्यं कक्षवेपाये सलसपो। विष्णुहुतेमन्कारैवितरा
यै तेन मोस्तुते। अपर्ण
नं रूपा देन मस्तुभ्यं सां कुनान्तरिनी नितो। सर्वलोके मत्कारे विती। सनघ्यैन मोस्तुते। अ
७० वमनं सर्वपापह
नेदेवि सर्वपिरविनाशनि। सर्वव्रतेमत्कारेविराग्ना
सिंहपादेनमस्तुभ्यं
ननसिंहासनस्थिते। सर्वलसतास्यं कृते
यैनमो स्तुते। मरुपकं॥
तं न नसिंहासना
कृत्तं मुक्तादानस्पमत्वितं व — कृवैडुर्यस्पवि
वनारो नमोस्तुते। पंचाम
तेज चस्नानं। सिंहपा
देनमस्तुभ्यं नानाचरिनानमोस्तुते। सर्वलसतास्यं कृतवनारो नमोस्तुते। दिनेशप्र
तं चमना यैन — मोस्त
वापाये तिस्नानं। ननसिंहासनाकृत्तं मुक्तादानस्पमत्वितं। वक्रवैडुर्यस्पवितं चमनायैनमोस्तुते। वस्त्रया॥
नप्रा०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गोदावर्यै नमस्तुभ्यं सर्वलोकप्रदायिनी। सर्वलिङ्गात्मकं पुण्यं गोदावर्यै नमो स्तुते उपवीतं प्रकाशकान्तं स्तुत्य
तं वस्त्रधारिणीं नमितं पुनः॥ अद्यं गङ्गायां भद्रदेवि यस्य नेत्रं वहन्ते आत्मनां आत्मनः करौ काले विष्णुभैरवनाथ्य
तैः स्नानधर्मं पुण्यं नमो नमः। देवादिनीलेश्वरं तं पूजयामि। नो से न देवी उपकृता स्तुतैः देवी ...... स्व
स्थानं केशवनकट कारीनि के हस्तं तं लीलाके अनन्तिनाथानी तं पूजामि स्तुत्वा उत्तिके
वन्दनाधनातनाथ वं नाभन्तु कस्य जातो वनं कं कमलं त धाकपुत्राये अ नन्दाते नं नं देवा नमः
तः नं थं। स्तालेश्वर वंदवापिं व्याजि उं। स्वस्व भगवन्तं असंताः स्वाप ये तु त्वं देवा स्मरा नेत्राणि
सेताद्युज्ज्वलं वा तिन्नं तावै केतकीपादलाउतिः। तं पुञ्ज यामि वन्दे यस्य नेत्रं वहन्ते च नं नं प्रजापं
नं पुष्पं कनिजये। यस्य नायका रौद्रं नमः स्तुतं नमो तत्रास्य पुनः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कक्षारां आनुनीं क्ष्मावेंतापै क्रहि तत्रनीनर्यौ उनुं नवनारि नौ क तं नं क्रान्न वो वसस्थलं।
उतुं नस्थला यौ स्नैरा॥ कावे यौ बाकु न्यूमलाप द्वानि गायै मु सं। सनस्थतयौ ललाट नो कालिनौ रि नः स्त्रमूनायौ।
स्वर्वि नं आयानो उरा नामपुरुं विज्ञवसस्थां न्तना यौ रु त्ववृत्तानि यौ क नक कालरता यौ उतपलायौ।
७७ वेदिनौ अविशा यौ अ दिता यौ अहिलां तकायौ णं नायौ यमूना यौ न अरि यौ ताणीन यौ तउरा यौ
नउआयौ यमूनायौ॥ सर्वप्रोवदने देवि स्वर्वौ पतविनारिनि स्वर्वत्रतो मदारेवि यमूनायै नमो स्तुते अहणो
उरानामपुराः पदराः नं ग ग लं नु पं वं नानानु स्वं गुतं प तेजामु तहां नु णं यमूनायै नमोस्तुते पुपं पत
वर्तिसमाय क्रं तदनारोन मोस्तुते नरा रागां नं म लं री पं स्तवे स्वर्ध दाये नीरीपं॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सर्वतिसैः स्वतोऽसै स्वनसैज क्रिसमन्वितः नैवे यै क नदाः ब्रायै मस्वादे यै नमोनमः नैवे रू जातीचः पावनः सेम्रः नः नारि
सजितोद्भवाः स्तवस्मान नःदेवि नमस्ते पाहि सरोऽयनः स्तवसानःपुनीकतेजितोः बुलः सर्वमे वलमाः नमो
देवीः वाचेतानीनाकनः सर्वतुतक्ते तेमायै सर्वतुतक्तेतथियै स्वर्वेश्व यै वदे देवितमे नमायै नमोऽस्तु ते
तवच्छः कतिजायामित्र तःदेवि सतुक्ति स्तुतपनायपापाः तवजि स्तनमोऽस्तु तियमुनायै नमोऽस्तु ते
मो देवि मस्वादे विवनदे तक्र वह्नले प्रदस्तिताः कतिजोस्यमने तेनमो स्तुते प्रदसिपाः क्लि
सि मस्वादे विसर्वपाद नेत्रतो सर्वमेः मलकाधीयम्रनायै नमोऽस्तु ते नमस्कारः कातयायिन्यायै तिश्र सःना
पर्णः स्वमास्वनः आजकिनी रक्तोऽध्वितिः नेमामिदे वातवपादः कज्ञः प्रवापनः स्वधिवः मः मलः रनेमा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अतिं कृत्वा तव कार्यसिध्ये स्वेशा ध्यानगतवाणीवमसालक्ष्मीस्वर्वकोसश्राचिनीस्वर्वब्रतेमसारे विघ्नमनायौनमोस्तुतेश्वरेन
विविः पुष्परस्नी सुनुतयो ॰ — नमःश्रा — पद्र्यंजु वेश्वनित पवंजुतावित रोजतावितलोश्रायां उनातितयौ अस्या कमित नाति
वनुर्विनपर्लजु गुजाधिसि — नधिंतविजोनलनजुनातातेकु प्रकानेमानतस्परजु कृव — तुधीकतवाःअनंतव्रतांजवे
७४ नकलपोकृ ध्या ना — आवास नाशिजोडरोपरावजुआं कनिजोड्रंन — ओतणवतेवास्त्रेकायेतिनम
अनंत स्तुतास्त्राजुनानो ज्यसौख — यंस्तुरा स्वंतानवर्थनिंगअनंतव्रतस्य ंजु आं कनिजो — अदेकानरंगद्रतसं कालपप
व्रत ततजु नतस्त्रजुसं स्याध्यक — लरां तुस्तु जुं कितें अर्वचितानीं चं तां स्ववेपानयराचिनीं रस्यो नाप्रजीति
तु पाधिनं येन तोकायेति नानां आकलरोजाति केलरा स्याधदनं इसं नेच ं नेतिक्नलं उनयितया ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तेऽओ स्वीलोकस्यातनेऽस्वर्वसिद्धिथ — नेनित्यं कुर्वक् । तेन स्रोत्तस्वतेऽप्यवं । ग्रात्मा जो उनो पर्यं कुअ । असचेषात्मेव
अस्यस्वीऽआत्मास्य नमं । तस्याव स्वन — जः । प । ती कुं । दः । रवी मदनं । तत्र्वैवतादं । नमोतमव — तेवास्ये
वात्येतिकुलमं । तस्यात्म नं । तत — सरवत्रीमिनेवी कं । स्यात्मा रतिकी लकं । सत्मतप सोऽतसोकृमस्य — तत्रो
स्वनात्येतिकीलकं । स्यं । तत्रवयेतम नलिं । स्यर्व प्रातवोर्वा कं । मलिदंष्ट्रं — थत्रउं । नमोतमव तेवास्व
देवात्य अं । त्र शिकां । उं । अं नमं । तात्य सवीत्मिनेतकं नीत्मां — उं । स्वाहा स्वत्मायमाय
स्यात्मान । उं । स्वत्मा सत्र अनतांशिकात्मान उं । स्वतंस्वनात्यकालशि — कात्मान । उं । स्वत्मस्वं । तकाया ।
अनतलकनवृशात्मान । वषं स्यत्मात्मिर्जिं । नं । नमा स्वः । मानं । रात्मं । तामानं । तु अनराय स्वलं । पञ्चमतातं । स्वनेरा ।
विस्वाथानं । ननतस्वकृ सां । मेप्यवताप्रित्तां । नं । लस्वीकां । तं । कमलनायनं । ओविसम्यानयस्यं । नवोनिर्दं । ततत

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ऊनं सर्वलोकै कनाघणं आनो ऋ वारतिमुल अं तेणा अश वानं ऋ भिखेपञ्च वंतेना ऊा अं तेणा रंघाप्प। आवाकितो

तवेतिशा ऋ सउ प विरसाउ तशेतिमं टवं नावा। आयज्ञान पा लगु आं क निनेपुवदाने ज्ञान सि यौ ना ते णं ना याय

मुना या दसि णा ज्ञा नेदा नसि यौ वा नं प्रयौ रां रप निथयोप अनिथयोपालि

णपै। ऋ या या वि अ या याउ तन ज्ञा ने ज्ञा ना सि यौ णं उ कि नो व ला य प्र व अदाने ज्ञान सि यौ सिं उ वे

वं ना दि प्री — इ सि णपै ज्ञा न पा लगु आः अ घवी उ गु आं उ० लायाव दि ज्ञा न दे व ता तो

कु मा य णि मा या अ — न मा या वै ना ना य ऐ ख य या अ नै ख य य य ता ना या ण मा या उ ला या कं उ र या आ न न रा क्रौ मुन प क तो।

ना ला या प उ प या के रप ने — नो का नि का या रु य मं उ ला या वा ब्र मं उ ला याव्र स्न तो। विज्ञ वे द्दी स

ना या सं सता या नं न अ सो — तं त म सो वं वि ज्ञो। पं प मा या रं उ या।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

६श्री

अभ्रयो।	अमृतकृर्तयो।	[illegible]नराचौ।
यमाचा।	पुनीकलरायात्मनो	[illegible]सायौ।
निर्तिया।	पीकपुआःसा।	अमृतायौ।
वनुणाारया	अघनव	सुस्तिनौ।
वाचवे।	रा[illegible]	श्रानिनो।
कुजेनाया।	लरमौ।	नवरा
श्रीरानाया।	नाआया।	[illegible]पुआःस
३५.नमोतवते	नित्याया।	मनयाश्रो।
वासुदेवायन	म०नलायौ।	अघ०मानन०

क[illegible]तीमय०देवपनि[illegible]नासमम[illegible]तन[illegible]तानसप[illegible]ता०त०
पि०नोलास०नतुतेके०।ततस्मुकुलज०सेतानमस्कतानवरत्तुके०नवात्रप
लवाताास्य०।पि०नलास०सुलोननपीता० ननमन०देव०रा०सवक
नकान०न०।अल०क[illegible]त०स्पके[illegible]तत्सतुप० विकितयेत्र[illegible]व०ना
लोमकादेव०पुके्ये[illegible]नमो[illegible]न३५०नमोत नवते वासुदेवाया।अन०ताया
नान०।आन[illegible]देवदेवेरातेमोनारा[illegible]नतपलो।[illegible]आ०ममकता०पुआ०
नश्ती[illegible]सुनरसनतमा।आनाता[illegible]नन०।अन०ता[illegible]नमस्तु[illegible]०सुपुाान०नानमूर्ति
ये।आनस्नन०तुम[illegible]देवत[illegible]नमो[illegible]मा।आरानन०।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अनं तभ्यानन्तायविश्वतुषणनायचश्चक्रशं धिभसं स्वाचंअनं वायन ओनमः रतुलानालनंनमस्ते देवदेवेरा
नमस्तेयन्तीयनापाशं जराणोदेवेराणं अभ्यासतैः रचस पाशअनं तानं तदेवेरा अनं तर्क लयायकअनं ती
यमानं तरुणापापाश्रिं. नमोस्तुतोअच्युणवं नाकलैः सआनीतं सुवनकतरोस्थतं आरस्यतां जनीके
राभ्यनापाभ्युजोनमः आरअनन्नमस्तेतवबा वृक्षोनमस्ते अनुरदुरनमस्ते रावनोकेरानमस्तेनती
थनामनुकंअनं तत्रतभ्यरभ्यनापाभ्युजोनमल्वा स्वाचया अदेवेरा विद्यास्तेनमो
स्तुतापं नास्तुं ८८ रुनारुनापालसीराराय सीनाक्षिपराचनानेरा नमोस्तुपननातारा
नानानिष्तसेनमः ५२ यस्त्वानं रक्षानां आरअनीशं ननानायानानमस्ते सुनन कालविताननालैतोक
चापकानं तलाक्षिआं तकृवहलविरक्षं अनं तदेवदेवेराजनतरतपविकानेतानातुजानानमेरयारेवणाणा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नागाय । तृतीयाश्रमं रोगाय । चतुर्थाश्रमं वासुकिने । पंचमाश्रमं कनाय । षष्ठाश्रमं नागाय । सप्तमाश्रमं

कर्कोटकाय अष्टमाश्रमं नागाय नवमाश्रमं सहस्रफणि गरुडाय दशमाश्रमं विश्वकर्त्रे चक्रधर श्रीं

चोदिताराय द्वादशाश्रमं च । रेवती ... च्य तृतीय ... चतुर्दशाय ।

चतुर्दशाश्रमं च । इति श्रीधिनाम गुरुः सर्वं ... विघ्नविनाशनाय सुवर्णाय । संस्थाय । पितामहाय । पिनाकिने । विश्वेश्वराय ।

स्कन्दाय । सोमाय । विष्णुप्रियाय । सौम्याय । पद्मनाभाय । पक्षीश्वराय । वरदे । रुद्रो । शिवाय । ब्रह्मणे ।

तारकाय सर्वव्यापिने । सशक्तराय त्रिनेत्राय सहस्रशिरसे । सहस्रपादाय । सहस्रचक्षुषे । सत्कीर्तिकाय सर्वनामाधिप तस्मै

श्रीनारायणाय श्रीमन्नारायणाय नाम गुरुः सर्व । अथ पर्व गुरुः ब्रह्मानन्दात्मने । प्रथमपर्वणि

तुर्यात्मने । द्वितीयपर्वणि पिङ्गलात्मने । तृतीयपर्वणि स्वतन्त्रात्मने । चतुर्थपर्वणि मलिनात्मने । पञ्चमपर्वणि दीनात्मने ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

आश्लेषर्क्षगाण प्रथमावतीतुआ० अनीवेनै। वसुजानवे। विज्ञावेररतिन
जनश्रावणमे। अथदितीयावतीतु। विशाखाविनाया वासिष्ठाया। तीयावतीतु० वाजवेष्टागानि। रतिनतुयावतीतुआण
स्वश्लेषर्क्षगाण गानपत औ अर्थानि। ननद्राआया। आभ्रवतुऔ कुबेनायननानि। अथपंचनावतीतु।
२१ रतिवर्ङ्गातुआ०८ स्वनस्व तौ। नानराया। गौतमाया। वातितुआ०७ ३ीरानाअविशा जनायानुआ०
आषाढतीतुआण उर्ध्वौ। अवितीया १लसाया। २०ग्रासरभानिपतये। निपे०७ सोमायामापासु०
लस्वनौस्वनस्वतौ७ नानाभि वातितुआ:०७ भावाया। आश्लेषतेभोनिपतये। मनलाया
नतौतुष्टौ७ तानेन अषवतीयाव आंजनस्ये। समायवेतानिप। आनिलाया।
तुष्टौ।स्तेतौ७ स्वनकायै। तितुआ०७ मितायाया। जनिविशेनसोनिपा। ब्रह्मागोस्थकर्तौ। प्रतुजाया।
विज्ञावेररति- स्वनस्तुआतायै। करणपाया कपिलाया। वनुगायअलानि। विज्ञावेणातालानि। प्रतासायादतुनिं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पं॰वस्मा॰न॰पाञुआ॰।
अघवक्षावाञ्जु।
ते वे त्पोना।
अगिम्सयाया
आगि मायया
लम्बिमा या
मनिमा या
लइरितौखलितौ॰
प्रतौ।ग्ला का मौ॰रति
प्रक्षावातञुआ॰।

अघस्वहमावर्ती
ञुआं॰का।
आजि ताराद
केतु पञ्चं॰
त॰सप्तमावगी
ञुआ॰स मपति

अघआशमाव
तीञुआ॰
यौलमासालिपतयो
वैरपालमासालि
अनेहमासालिपा
आषाढमासालि
सावणामासालिपा
नाद्रपतमासालिपा
आरवीञ मासालिप
तयो।

कार्तीक मासालिपतयो।
मागीरवन मासालिपा
पुष्यमासालिपतयो।
माघमासालिपतयो।
फाल्गुणमासालिपा
रत्नश मावतीञुआ॰।
अघनक्ष मावतीञु।
वसं॰तरतवो।
ग्रीष्मरतवे।

रावतरतवो।
क्लिमवं॰तरतवो।
रौरपरतवो।
खोमालि
रेवताचन
कविकाजिरेवतय
सं॰वसरनालिरेवा
वजिरसं॰वहरर
निरेवतायन

उरुतिरेवतात्पोन
निरागीराया।
गुपपीराया।
मनं॰ताया।
चतुरेतातवनागीरवनाया।
शतनिव मावर्ती ञु।
अघनरमावर्तीञुआ॰।
सं॰वतीकाया।
प्रकलाया

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कालाभ्रमुतचौ। नरस्यातला था। वर्गेषु आ॰ १०। इति द्वारसावर्गे। चोणलस्यौ। विस्वकं लै। रोजरास्थिनो।
विस्वभ्रुतचौ। आस्यातलाचा। तुलोकाख्य। धुआः॰ ७ अथव। तोणलस्यौ। खत्तीशाचा। रां॰सवक्रणराजराया।
तेजोभ्रुतचौ। पाता लाया। तुवलोकाख्या। ओररसावर्गेषु आ॰ ११। अनं॰ दलस्यौ। कं॰ छाया। सीहरनं॰तपञ्जनातायो।
१६ सत्यभ्रुतचौ। इति सुवलोकाख्या। स्पचलस्यौ। सत्यलस्यौ। अङ्ग ताख्य। इति वर्तुरसावर्गेषु आ॰
सत्येरकनाया। स्वर्णलोकाया। क्रचालस्यौ। इति तेजोररसावर्गेषु आः। अथ पलवधुआ॰ कजन
इति रसाभवर्गेधुआः। महलोकाया। ओरस लस्। अथ वतुरसावर्गेषु आ॰। अनं॰ताख्यतुलसीपा
अथ प्रकारसावर्गेषु। प्रकार रसाव जनोलोकाख्य। विचोलस्यौ। अनं॰ताख्य।
अतलाख्यावितलाख्य। तद्धि आ॰ ८ रस १०। तपोलोकाख्य। अङ्कतलस्यौ। स्पं॰ कजाताया। केरावारा। स्पं॰ कजाताया।
सुतलाख्यातलातलाख्य। अथ उररस। सत्यलोकाख्य। विस्वतुपातो। स्पर्शात्मनो। तं॰ जिनाअपतलं।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पन्नगात्मने।
आश्रितवत्सलाय
विश्वतृप्तये।
अपरिमाणिने
प्रमाणातीताय।
बिल्वपल्लव
परात्परतराय।
करवीरप्रिय।
पन्नगाभूषे।
श्रीदाय।

श्रीकण्ठाय।
अक्रोधिने।
सर्वसाक्षी
स्वर्णाभितौन
उत्तुङ्ग
पक्षं०
लक्ष्मीपते।
मल्लिकाया।
दन्तयो।

शतपत्र०।केशवाय
दारिद्र्यनाश०।
स्वर्गात्मने।
मधुसूदन
अनन्तपद्मनाभाय।
चतुर्विंशतितत्त्वा०।
अघदमन०।
अनन्तायुषे।
श्रीपद्मनाभोदर०।

दन्तयो।
नन्दावर्तन।
त्रैलोक्यानिपतये।
मल्लि काण।
कमलाचा।
शतयज्ञ०।
गरुडवाहनाय।
नवनीत

चतुर्दशभुवनाय।
वंपकाण।
वटपत्रशायिने।
करवीरप्रिय०।
राजराजकुन्दादा
पापमोतन।
तक्षवटुलाय।
निकिनिकोण।

चतुर्दशभुवना।
श्रीरङ्गनायक
केतकीण।
लक्ष्मीप
तपोन
नागभूषणकाण।
सर्वदेवात्मने।
पुन्नागपुष्प।

अनन्ताय
करुणात्म।
अनन्तपद
नारायण
चतुर्दशभुवना
मासमान
अघनाशनाय०
अलिंकरिनिका

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

५८

अनन्ताय।
गोविन्दाय।
माधवाय।
मुकुन्दाय।
नवचे।
वेदप्रियाय।
अच्युताय।
जनार्दनाय।
वासुदेवाय।

वैकुण्ठाय।
मधुकैटभ
निषूदन
दैत्यकुल
पातालेन
नरसिंहाय।
मधुसूदनाय।
चक्रपाणये।
नारायणाय।

अस्तजनिबर्ह
णाय न
विद्धावे।
शार्ङ्गपाण
ये।

पीतवाससे।
श्रीकान्ताय।
अम्बुजाक्षाय।
शौनके।
जगतीजकाय।
पद्मनाभाय।
गरुडध्वजाय।

शंखपाणये।
नागाय।
नाभवाय।
नावणानये।
शत्रुघ्नम
देनीशाय
हृषीकेशाय।

कंसान्तये।
सनातनाय।
केशीनाशनाय।
गोपीनाथाय।
यदुपतये।
वासुदेवाय।
गोवर्धनोद्धा
रणाय

गोपालाय।
अनिरुद्धाय।
श्रीकण्ठाय।
चतुर राज
वनमालीरवनाय न
पवनं प्रणं अलिंस्य

अथ अष्टोत्तरनाम
पुजा ~~~~~~~~~आ न
ॐ अनन्ताय
रोगाय।
संरक्षणसे।
वैतानाक्षाय।
नाराणपेतये।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अनंतदृशये।
आनंताया
नसिंहाय
रनतुगाय
कृपासागरा
मंदितायन॰
समस्तलोकना
थितो ज
सदसाताय

नाथलोकपतये।
नाथनाथाय
नागिनीषि
आया।॰
वासुदेवा या।
जावालंका नाया

चतुर्दशलोकना
थिताये
तास्कनाय
सर्वकामजिने॰
डीखनाय
विश्वकुपाय
मरुकाराय
सप्रकर्तॆ

स्थितिकारणाय
अनंताय
वैकुंठाय
जीवहृत्पद्मनिलयो
सततलसपाय
पिंगततेय
पीतलोचनाय

पिंगतास्मास
लोचनाय
पीतांबरनाय
देवदेवाय
शंसातते
चक्रधराय
गदाभानिलयो
देवेशाय।

तेजोराशये।
वेकुंठकनाय
अंतर्यामतये।
नानारूपतये।
रत्नातनापाय।

कनाकातुतये
कनुजोत्तमाय
अनंतकोटिनाशकाय
सर्वेश्वराय
स्त्रीजनाय
नरकाविततानाय
त्रैलोक्यस्तुतये

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

६०

अनन्तरूपकाय।
तत्त्वज्ञाय।
स्वागतास्यपाय।
रघुनन्दनाय।
सिद्धसेविताय।
गन्धर्ववन्दिताय।
श्रीवैकुण्ठाय।
सर्वदेवाय।
पराङ्गतये।

कामारये॥
कंसालोरनाय।
कामजनकाय।
काम
ल
राम
काल
कञ्जतुलतालनाय।

सहस्रबाहवे। विजयनाय।
कञ्जवे।
पूर्णचन्द्रनिभाननाय।
अनन्ताय।
सहस्रशीर्षवते॥
कायाय अप्रमेयात्मने।
मनोऽत्मने। अब्जनाभाय।
सहस्रनामासाय।

तरवीकनाय।
सुरसोमलो
वनाय
शिवाय।
परमात्मने।
महादनाय।
कालकाराय
५०

उरवे।
ब्रह्मप्रियाय।
अनन्तपुञ्जाय।
अणवे।
जितेन्द्रियाय।
विष्णवे।
तुलनाय।
वहवे।
अश्वत्थप्रियाय।

नानायताय।
वनमालाधर
य
इन्दिरापताय।
पद्मनाभाय।
रामचन्द्राय।

लक्ष्मीप्रियाय।
सर्वेश्वराय (वनप्रियाय)
सच्चिदानन्दाय
रामचन्द्राय १००
परमात्मने सर्वेश्वराय
सर्वपापहराय।
श्रीमदनन्तपद्मनाभाय।
अष्टो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

मुकुं वैवस्वतानां पश्लिसमाधिपतिं पश्लिस्य मर्णाणां मंत्रोदयस्य मस्ता निवस्तु निविष्टेलानिला
रुपश्लानिरुवस्थानिम   कंयो मकु नतमतो मंत्र प्रसमर्पितांशु स्वलासर्पिजो नीवैः पमना णा दिवं दितैः ना नायाना
नमस्तुतमं नरकानि   वतानमातृणी नाकनं रुमं नलां सर्वरासुमनो दनं वतमीतम र्घः मयादेव नकानाउ
नुजोत मानीनाकनं   यथा त्वं सर्वदेवानां इंद्रादीनां वनस्पतिस्तथा   नां नसदेवेराज्ञ्ञानिनदन
मितो तक्षुग्रियन   नमस्ते स्तुतकानु ग्रहकानगाः सर्वपापविनिर्मु   कोनोनं तः स्पर्वतो मुक्तः
मं तनुष्वं मन   तानं तदेवेराज्ञनं तपश्लिरायकाते घाणालय   मां देवदेवं त्रिराननागनतं
अनंतायान नमस्तुतमं   नमस्ते लोकवंदितायतस्तु सर्वलोकानां इंद्रादीनां वनस्पतिः पारिजातस्तथा पाल
यमानं देवदेवं त्रिरानमागनतं अनंतायन नमस्तुतमं अनंतन्नगताः पतो

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

— ध्नाध्ननमस्था ।मतवदंप्त्विध ननांश्र तोनमस्ते नवदेवेसानमस्ते नर तोलनानमस्ते सवनाजेंउनमस्ते ध्नउ

जोतमानमस्कानंननमः सवर्कितायासके नराथानवरु जोसवर्गेस्थितमंतनुवाचनहाताप्वर्मिदंधनःउउमर्पा

नानायतापसनिमासे तत्पणंमघउवाधि भ्रउआंअनंतायाउवा ध्र भ्रंकजलायाउवा

सेजायाउवाक्रि। स्वंकजतापयाउवादिलासपायाउवाधिका लांतकायउवाधिभ्रं।।

सीनपाताय उवा नलतनायाउवाधिभ्रं।माउतायाउवात्ति भ्रपनायाउवाधिसारां कायउवा।

लोकनाघायाउवा नानालिपतयेउवासिदस्वमुर्वेद्वि वासीमदनंतपमनातायाउवाधिभ्रउआन

नमस्तेमनदापानसवलो कैकनायका।अनंतनुपविखा।मनुता।केदानिउनायानं।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तनिद्रनारानाद्याऽयज्ञ तर्पौत्रवच्चर्निं अनं तस्य मिद्रं स्तुतं थानयाऽमरु [illegible] मरोप्रायर्निं अनं तकामः
देवरगर्वकामर्जलपरं अनं तदोनतुपेताज्ञ तर्पौतपवर्निंदोनप्रयता अनं तसं स्तानमरास [illegible] सङ्ग्रं समत
६७ यनवारुदेवा अनं ततु पीवि [illegible] यस्व स्वनं तस्तुलायनओन सस्तोदोनन मरवानिं स्वं स्तान [illegible]
श्रद्धारुस्य सं विदेतुं वां हृं ति [illegible] लोक [illegible] यसलास्यं शुभमवि तत्तुवनेरा अनं तदेवज
नं तिदसिताकनेव नदोनकं तादोनजं पनं नमस्तेदेवदेवेरावित्वेत [illegible]
त्वसं रक्षाव अनं तायनओनमः श्रीतादोनविस्वअनं अनं तः स्वर्वनानानास [illegible] स्वर्वकामनं
व्रतेनानेनरक्षीतोतव तिसिरवन [illegible] नं वतसं [illegible] लस्वमवितं [illegible]
नं तः [illegible] अनं तः [illegible] नं तो [illegible] नं त [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वां तत्वां । अनन्तासनमोनमः ॥ इति प्रतिष्ठा ... तावद्विज्ञप्तिर्नवाननं । ... वर्तेन ... तान्स प्रवक्ष्यते ॥

अथात्र ... इत्युक्ते ... तस्मात्सर्वं ... इति ... स्नाताद्यानन्तं ॥ — प्रतानबन्धनविधिः ॥ — पदार्थपारस्य

काधे तोति सर्वमर्पणम् ॥ पञ्चाध्याय कथासर्वतां ॥ — पसीदत्ता मासस्य ... पञ्चकवेन मासः स्निग्ध ... ॥

रक्ताञ्जनन्नन्तं वि ... ॥ — पराकं । कं तुष्टान स्नानथ बन्धाय ॥ — ... स्तु तद्वात्तथ ॥

नानदोवैष्णवः स्नेह ... सर्वाणतः खनेलोकतं । पात्तुनां । नं । नफलासौ ... नमस्कृत्वाहुतादिकं ॥

धान्तुनाक्त्रातलोका नां तत्वतिरेरसिनरक्षधातेरर्व बुद्धिविवेकं रव नैवपतलोक वारुणानन्तोक

सर्वारितासमयेरस्नानम ... स्नानिद्धि क क्रसाणमनं कि कानानां धिंतहर्वं बुद्धि ... नेत्यन्माणतामं तनिसौ

खौण मन्त्रां नावतीक्ष धा । पात्तुवरम लोके ... नौनवं नर्क । वज्रे तु ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रां अलिं अलश्रीं दशां ... क्रं कु कश्रानतथनकु कुन कु कराने: राने:। स्थितवक्रा स्वस्वर्वै ते उौ पश्रात्विनां नाः
मश्रातीतोनकुं अशानाअलस्यपणातस्य ने: सर्वै नप रवै व न जय स्वतपोथ्य ने:। नव्यउोप प्रास्त्रि यस्य वा स्थितवव क्राः
रच लोव ने:। अशानाअा ... विनाओ स्वौ अशाक्रोथ समाक्नितः। पविनिर्गतान रवक ं नाउं श्राय लेनवतो नपः।
तस्मिन्कुमा लेत राकु ... निःपो वावजश्रुनं ववः। ... पता अनय कतम्रेतव ... रुकुं वतवत्तुपदो ...
वततोनामवतःमा ... लेन गौन वाकुरुतो पक्रु आगो वैवरवना ... अमनाधवानुपतरश्रोच
लिलिनामं उरस्वतरस ... स्वरन ं वतिपड ं पत श्रोतक्व्रा मशानाकारुनाः ... मवनआ ... यश्रान्नानी
रावा ं उकलाव स्वथमा ... तीआर्जुनातपनानुप ... कुतानं नं पकवीत नारुं रव... कं ... तेने वि
लितं सवं वां उवाचित केल्ल — ज... पततो नाना ं तन ं नआवततेन रवानिन्त। ततो वनां तथा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

बुद्धि के रावा।२७ पस्तीक क्षः।आन॰ तरतास॰ पाद्य अनु प॰ जोधया आ तन्न घावे नेन स॰ कालउ पवपतोस्यप
कलाका गु।ह्रस्तर्कि ण क ता वाव स्थास॰ स्वोस॰ कालो भत्यार स्पातः स्योन॰ तर तत्विस्य तः।२४५ स्योस॰ कालोव
तीतो लतु वोतनि वताव पातु।दानवाना॰ विनारसा स्यव स्ये वकु लो तव॰।२९५ मा॰ विनान॰ त॰ त॰ पार्श्व कक्षा॰ व
क्षि॰ स जे॰ रावं॰ व्रस्मा पा॰ तास्कन॰ रोज॰ विरखवा पिनमी रवन॰।२९५ विखनुप॰ मकाकाय॰ रन
शास्घ तस॰ तकानपा प्रतस्याद्यं॰ मसा पाद्य विरखनुप॰ नरस्ति॰।२२ उवी वम काना को योग
ने समन तमा॰ वि खनुप॰ मन॰ त॰ वयस्त्म॰ नि॰ ओस्वनुद रा।२५ पवरण वोशो दारयपा कक्षि नु ओ।
५ कादरपान लानस्वक्ष रनय:सउ आस्न पर्वतः सनितोउ
मा:।रपनस लातारिरतो तु अ: पातान॰ तु तु वा जके॰।मा कन व्वसस॰ नेसो स्वोरु॰ पायनस्न॰ राय॰।४॰ उ नि कि तन
आन॰ तवत माका तमस॰ विलि॰ विलिवता॰ वरा।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

किं ञातानं किं पदं लं तलस्य ज्ञानज्ञानवतां न तानां ॥ ४ ॥ केनवादो ञानाकी तां अतके केन प्रकारात ॥ वतरुअस्तं विसी
रुधिजनरंत्रत रुते ॥ ७ ॥ पसी कज्ञः ॥ आसीतञ्चाकतञ्च गेरुञ्ज अंतो नाम वैदिकः ॥ वसिष्ठ गोले वोतसं नां रुञ्च रुवकुपां तगो
रुञ्चतां ॥ ४२ ॥ परीसानाओ पयेअतां वे दोक्त विविनां ततः ॥ तस्यां कालेन सं आताउरितानं तलसातां ॥ ४४ ॥ परी
६४ ला —————— ना अरुञ्चरीलारवा वर्धते आत वेरअनिा आतारवसात स्याः कालेन कुनरारेन पी
उतां ॥ ४५ ॥ विननारा नरीतीने अतारवनी ञ्चनं रयोरुञ्च अंतोपितता नां वैलअ ञ्चंस्य ः रुञ्चतां
ञ्चनः ॥ उ पयेओवि थानेन ककरानाअनाअतः ॥ उः रीलाकक रानं उनिसेनं कलरु
कानि ॥ ४२ ॥ सापिरी लापितुर्नैरे नरार्वनिपितावतौ ॥ कअसं तनरवाने रेरुनीतो नानाररा ॥ पितानुं
नकवतौ रिवनीलपी तैः सतासतैः ॥ स्वस्तिकै रां रापञ्चौ स अवय ं ती ञ्चनः ञ्चनः ॥ ४८ ॥ पितारपारुञ्च अंतेन सी
विज्ञायोवने रच्चता ॥ क स्यै रे याअ सा री लाजरा यौ वं सुरुः ॥ सितः ॥ ७ ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

एतस्मिंनंतरे काले कौंडिन्यो नाम नामतः । कन्यार्थी तस्य स स्वरनं तं दृष्ट्वा ... नावृः ... पिता ...
नीं प्रायच्छ कौंडिन्याय शुभे दिने ॥ गृह्योक्तेन विधिना विवाहमकरोत्तदा ॥ ... कर्मपीत्रु वाक कर्या ...
किंचिदा यात्रिकं देयं ... आस्मानुः पतितो बकं ... तुष्टो वाक कर्तवाक ... श्रु ... क वा ...
नं बध्वा प्राप्रा ... ताभिर्वितीतो ... विप्रास्तु ... निपाथेय ... कोनोत राकौंडिन्योपि
विवाहेनाप्य ... तिगतु ... नरानैः रानैः ... स्वशीला ... आगायन ... नोत्तेन
नवा ... मध्याह्ने ततो अथ वेलायां समतीर्थ ... क क्रियां कर्तुं ...
नको ... स्त्रीयां ... ... ते सा ...
... रानैः ... स्त्रीकदंबकं ... किमेतत् ... नाम व्रतं ...
... ताः स्वर्गः अनंतो नाम ... विख्यातं ... री ... २२०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तस्य किं दानं कस्य पूजनं कः कालः कोऽस्य वा संख्यः तथैतद्वद सुव्रता [illegible] ततस्ताः [illegible] ध्यानं तस्य
योजितानि [illegible] ५ [illegible] रूपसेवतुरस्याः [illegible] ॥ [illegible]
५८ ध्यानस्य [illegible] सप्त [illegible] तानं तं [illegible] नास्य [illegible] तस्याः
थः कर्णेन [illegible] नेवा [illegible] यः प्रयत्न [illegible] ध्यानस्य [illegible] नं कथितं [illegible]
नवं [illegible] ध्यानं [illegible] पूजनं [illegible] कृतं [illegible] नरीतीने
अथ वा [illegible] वा [illegible] स्यपक्षं नं [illegible] तस्य [illegible]
[illegible] दानं [illegible] कृतं [illegible] नरीतीने [illegible]
तान्नेति [illegible] मानं तं समतां [illegible] पीतवस्त्रैः [illegible]
[illegible] तं [illegible] कृतं [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अनंतं कुअयो वितुण तस्याग्रतो रक्षं स्तुलं कं क ओ कं स्तुरो [illegible]

वतु रे रोग्रं प्रियस्त्रकं वामेकनतने नासे तुअं तेतााने नेवक्षी याया वडजं सभावनेतु ताव्रडजं स्वभाज्ञो तितावया

[illegible] पो तमारानि रुरु स नारा य तपो लाति रघुयो अनं तास्य अरं स्तुलं ना न

[illegible] [illegible] अनंतस्यं

स्वाम मरास्तरे अज्ञं समात्मयनवास्तु रेवा अनं तरुपी विरु यो अ यारवस्व नंतस्तु लाय

नमो नमस्ते पसं स्वानमं स्वनपास्तु स्तु सं विदं तुं वां कुं तिये क नु क लो तु वरे य सतासं

पुअवविवितु वके राम नं ते रे वं बद्धं ति रसिता कने वनरो नकं तो अनें नरो नकं व

वातो कृ वयं स्वरंघ आानस्ये ः नातान नायमां रेवं अनं तं विरवनु पितां तु क्षावां ते तु दोदे रां रदं प्रोक्तं व्रतं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तवास्या विरीलाव्रतं वक्रेद स्वोबत्वारश्शोन मन्थ्ये प्वाधेशरोजं विद्रायरतां तु क्रातधैवदाजनक नानासं द स्रा गोन
घेनस्वश्मा सद्वाय्थपतातीसदै वस्नन कैः तु तयस्त्वस्रा पारतु वृातेनानं तव्रतेनारख्याः अतु रणो थनासंकुलं थ्यप्रकृदं सर्वं
सिस्याजकृं यनजानग समाकलं आकलं वधाकलं न अन सर्वतात्त धिकुञ नं ९ यञानं तव्रतअसकातमा
९२ अमातं सर्वं सुविरमयाँ स्वाविश्मातापा कने कां वीतिः मु क्राका लैवितुजताःलयद — वनस्रेता सं बुं धारपा
स्याविसीप्रतिअ्गवतौ करासिरुपविप्रेनद शं नव्रं रशोन कं निकों डिनो पिरतामाद किसिरं बुद्ध
होग्रयोन्तं स्मशोनक खेतिकिमिः बुद्धतवतः स्थापवावाधकौं डितोभ नं तं शोन मत मं तस्याव्र
स्लाराहौताम्मं थनजान्मा निरपं वरं भिपलतं तिअतत्रः प्राश्चेतातदिरं नन्तं असयारतितस्यावनरसुताकों
डिं नो नातिकोपितःरीलायाः दस्रस्रुलरख्यं स्या से पं तरित्वें जाकोनं तरुतिरपैपातुवतानेन पां उवपज ४ पकिरु ९

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ह्मा ला कु लेव ह्मौ का का कु ला व था व ति ह्मी ला न की ला त ह्रु ल० सी न ल ज्यो वि नि सि पे तु ज्या ते न क अ जि पा के न त स्य
स्या सी स य० प ता म गो थ न० त स्क नै नी त० म रु० २ थ्य० न न० रु त० ज्ये प य म छै वा ग ता० गो रु त त छै वा स य० न ता र व
क जैः क ल रु नि त्य० र्व त्रि लै दे व न० त घा ज्य अ न० ता से प रो जे पा य जि औ० प ति ल० ग रु जि क स्व इ रे ते लो के ते न सा
थ० के जि ज्ञा न ज्य प रा नी ने ता जि स्य० त श्रो म न स्या ष्या ति उ रि प त ह्न नि वे रु० प न अ० वा ह्न० को० उ न्यो पा रु ता०
पि स्या० ज्य पि री ले कि मे त कु ता० न० स्य रु स्या उ स स० व य० कि नो य र रि प ना अ जः औ त० र प वृथ
न स य० ज्य प स्व अ नैः क ल रो गे रु न क स्व न्मा० प्र ता ज ता रा नी ने ति प्र स० ता पो म अ वे त सि रो उ ता ज्य
न आ ते नि नि य० नि त्य कि० क त० रु क त स्य वै प त्य वा वा घ त० री ता रा ति वि० ते न उ सि त ग ज्य घा यो
न० त इ ता से पा त्मा पा रा न य त० प न० ति वि ज्य ति र न स्य० रे रुः त र घि० रु य मा न न ज्द प ४ व अ कृः र प वि शो स्यो कृ न ना म स
अ दा व न० त तो कु णा अ कौ० उ न्यो नि वे र द्व न ग० रु न० ज्शि मा न स्या ष्या य रा न० त० कृ वि र स्या नि के रा व४

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

व्रतं निन्दरानं न स्नबस्नव येव्र तं क्रजिं न्भि। विस्त्वतः श्रयौ पाद्यं स्त्रौ न पायं अजवक्षितिगत लापरयन्मास्त्रा बुतायुज्वितः
वर्जितं तद्यार्द्धिवर्जितं वर्जि संख्यातैः कीटकै तमनै स्व घाय
तमण क्रु (व मोनंतः क
(स्व इक्षो असाद्मा(ष्य बुद्धि स्यौ मय म मातीम उ स्यं वे तास्य व तते स्योव्र वीति उ नानं तं वेद्भिउ साम वा द्विमं (र्व
८९ ए वं नित्काकृतं तेनम गम्मा व स्य उः स्वितः (क्व उ स्या स्मीति में क्रुं न्द्र सः मा वपरयह्म व स्व का णस्मित
ग मथो श्रथाव तो इत रवेतस्य पा उ वा स्योव्र वी घेव के बुद्धि यजनं तत ये स्तितः। न्नस्या वो वा वा
य क्षों उ नम नानं तं वे अद् (द्ग तताव्रम कु र द र यग्रि मो व जं रा कुले स्थित नानम पद् स्वाप न बुन्न गो स्वा अिना
मनं तस्य ये स्तितः। गोवज स्वध वा वेनं नानं तो की स्त तो मया ७ (तताव्रम नु र द रा ग्रि न मय ७ क्रु नता कि यं मज्ञो नम क
नक क्लो सवी वीनपं कसं कृ तं श्यतान ज्ञक मलक ज्ञान कुस्र रो ताय लसं उ तं स्ते वितं तम नैर्क सैश्व क्र कानं उ कै व कैः ४

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वनानीननैर्ग्दागतरणा॰ (नेविश्वात्मानं॰ वनविं॰ ध्रासनेर) तोब्रप्र पा स्वह्मरा॰ त्वनक्रासि नदा पक्रुउसेव
तगदरोयामासविधोय ✱ पुर्वोकुं॰ विरवनु (पाां॰ त्रुपवितु ति तै स्थात्मानं॰ अनं॰ तं॰ पन ब्रेरवनं॰ (त्यानु पसु ताना
६८ नं॰ पुतों॰ उसदरानननु(८ ॥ पवलनन रथ्माकीर्ता॰ (कि नोहो ब्राम्सरस्नकं॰ (रु॰ णता र्क॰ उलताके पता क्रुउरो
(तितं॰ नपवम्रपवलवि ॰रालास॰ पक्ष्मनातं॰ सुनेरवनं॰ (रनीवहुना॰ वा॰ नसो .. नरक॰ वनसानलविनु (जतं॰ (८
स्वर्णं॰ गरखं॰ दनं॰ दृश्ं स्वर्लोके स्वनं॰ (वितं॰ (स्यु रखे को (हपती कार (॰ कोमला नरनवोक्त लं॰ (८
नं॰ कु मं॰ कतमं॰ श्री ननं॰ (कतां॰ (प्रसनोनुदं॰ (तं॰ रस्या घवि ओनं॰ तं॰ प्रता म्नपृनत (स्घतः (८॥
कतां॰ मे (लपरोतुवाशो पावपनया कु ता (नमोनमसेवैकं॰ तु स्नीवहुरुतला॰ कु नपा(वं॰ नासस्मनाातपा
प॰ अरोजनः श्रतारमतितासे रासद्र पुजसद्र पालनमातप नाषु॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्ंरणा ना ाविताना यनमस्तुता अ ंगो रुआन मः पनस्त्वौ सीता यवाङ्खे वायवे यसो ७श्र स्वभ (स्वब्रस्वानुवेता ताय
स्वेविद्धु नुपतः नु उनुवेता स्ंयतानिमस्तुतम्ं (विमुतऔ (नि मोन मस्ते णो विंदुनानायमा मना उनु विविक्र मन नमस्तुताम्ंम
सोज स्तु नवं दिति ७श्रपप्ा पोरुं पापक मो रुं पापातमापापस्वं त वाखा (रु श्रां ७ं उ नीकासं स्वनपाव
रुनीत वाशुपश्र यमे स्वपस्ं मु नश्रजीवितं नस्तु जीवितंयच तवां (वि स्तुणां तो मे सानुज्ञा त
मनायते ७श्रयस्वा तुज्ञा रलिवितत हितं रेव दो न कंवतेन क सविपा के तवि तुतिनमे स यंमता
७पित दत्व वानं तदे वोपि रदौत स्वै व नलयं रा निउनो रा नंमां वत्तु लोकं रात स्वत ७७०
अनम्ं न त व नं रु मस्वे तो मो पको न कं ररमास्मानक वनंरी लानंतवटा (निकां मं जिनाति नमो
तक्षा तै ब्रावं ब्रता ऋ तम ६ ।स्वो (वि नातपा पनि मुकूः पानोतिपनमां नतिनम

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रनान॰ तद्वत॰ तकृतानववर्णा तिाव॰ वरा।ततः पापा(वर) धना।मा।व्रा।एतस्रो बुधि।मतस्मा॰(रु)मपगु तपोलाहा।मतमानत
क्वातोमानतहोशितालाम॰ तन्मह्मनोमा॰ व्रापन्माम्रुवेजनतरप॰रायेः(वद्मन पगुरु(विपश्च रू॰री।भु॰ राधूा पनापतो
१८ पद्याकौ॰ उनतभस्या अनुपकुअनिवुकि कि विलौदुरुल॰ मरा।रुम अनतपोतमता(शा)नतवेक्षिअ
गनुनोस्पवुतरसक रहलकाणौःकोवलतस्तदा।मा।कमालोतपल कह्मानैःरोतितं॰र्ग्आनोसन॰
अयारशामज्ञानताये कि॰तपुकुनाताववरप॰शप्नकुःरयः कु॰ क नः कोरपौ कारपौ ग्र(पो(वि)क्षो
तमःअनं॰तःस्पवुत वद्वोवि प्रोरपौ(विका नैवेरण(वितः॰शपआरपीचूडा स्त्रुं॰ नरपतमा।रा(क्र)णतल हानता॰
गतः(स्यागौवरिग्निना रहोनिजपडं लातोयवकोंता।(सनमौनोवुज स्हसरा।कूल॰ सतम मार्क्तितःलओ
लमक्रवेरप्पान॰तकापुक्तनातीवयन॰णवन्दिकाअनोगारुलकघोलवी।विपर्ये॰ कस्य॰क ल॰।व्राऊता(तौ)केरुपारप्या॰ (वि
तजिनौनातेपनरप्पन॰।४॰लमोलमसा।दिकं॰(वत॰नेनरयातहो।अिआ।विशायनकवविश्चतौअतथौ३तितालितालम

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तिस्तारतानवाग्धितः तेनणावेन कर्मणाविवीकल्लो लमालातिगंकृत स्रो वन स्वन गं सनः क्रोथतव्याद शकं मनो
क्र यविक्र यीब्रास्नातो स्यावनं तो रु ं ण दासं स्यानबनस्व नं रतन क्रास्त्र मस्या सर्वे गकं विवयधा स सं ततस्तु
शः प्ररा स्यामनेसत स्थानन्ते ब्लण ४४ पद रतु ब्रारुविण नातुक्ता तो नान्मनो न ब्लातुापत पौसैः प
निवृते स्रतो मोसब वाक्स्यरेपा ४ प्रपरु ति रत्वा वनं रव स सै वयरान थो यता कौं रे ब्यो पयो मतो नेन्दे नरा
नवृतम तन्त्रं रगीलच्या सद थ अ त्मातु क्रा तो नान्मनो रु ना कुम्प अं तेक्ष णामवरस्व यं नरतरं र
नवैस्य कं तम स्थारयो वसं क्रा तो रयतेनतस्मि क्व तं कु अनं तवृतय औतारम भ्यकुरी तो नया उ वृ
वता हे क घितं पाघवता नामु न अंवृतणत कृत्वा स्यवपायेत्तमो मु यातेनाल रय ं रायमर्पवु वो वृत मिदं ण ं गामं
पापेत्तमोम् यातेननः इ तिरन्तला अ रुतातानो थमिना क्रोसरुतु अथ ४ ८ तेकृतं कान सम्मा स्यस्य वे का अप ते प्रर ं निद

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त्वा निवलं सर्वं नाक्ष सीय भवाङ्खा तुभ्यं प नानीवाजनु जोका पिकु नु तेव्रता भ्रुतमना —— ते कासाकुलिलानथाच्या
विष्णुलोकं नामि ज्वातिपङ्ग पतश्रुताः तिस्वततं पकं तिस्व च स्वानुतः ते सर्वे पाप निर्मुक्ताः
स्वारस्यं ति पन्नमा ज्वति तथा — परातस्वीनु विजयो नु नज नातो कद्धा कल्पिंगि न स्यं वारमरनं तपञ्चाना तव्रत
नवनाती कधारनतां स्वं तां प — प ... प — पस्वीज नु त्पों नमः स निः उ स्वा स्वनीर कृ ध्रांत
धानाप पथां धातनत्वाज्ञ उतथास वारनं कृ आवृत व्रस तासं कलं कला आवाचतिन तिस्यतां कलाम्
तिङोप कस्य तिकाले रेवतास सीपे विष्णिवेतुक तरां व्रति ष्ठान्या तस्मिनु भीताः स्वां नुतना यां व्रतिसा स्वां रेवी
आवास्वाक लपो कृ पकाने ताकु अ ये तः पवं जाते त्वा (१२) ताति धौ अभेद अ ज्ञानिनु तो श्रीति नो ना स पो प कनंति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पुवक्रु रीप्यो के विज लथनथा नाज्ञत्वौ ताक्षक्रिं न स्यं तत्तिवृद्धि रध्यनलस्यौ कीर्तिलात्तरालुप नानमयसवको तीव्रास्य
पपछें स्तीमया कालिठा सालस्थिमस्न सनस्वतिउ नोपन मेरवनी शीतन छें स्कं रुज नातो क्रुत्र कानेता
कलतोक्रु थमानाम्न वादनादिजौ उरोपवात उमां कनिजै ज्ञानक्रुवनरे रेविरेतनरपनिक्षुदि जोङ्
मां न सातावनरेन मस्तेस्यं कनविसोस्यवतीछि मयन्वानि स्यवरेवस्यमालितन्य
रमं प्यहं समान क्रुतिज रेवनौः सयसुउ नोरे विनेमस्थ तं सां नियवदिमक
लपचादमं उ मां न सानाक्षं मज्ञातिः राक्रितिः सरुदत्वावा साञलनगावतिउमान
रुनारुनरि तोनकम — नीविसविताः प्रसे विज्ञानं थकानवन से विज्ञनाक मरुं त केरि तोमदा नतापत
सोन्वावावादनादिजौ उसोप वात उ च मां क्रु सवितु॥ ——— ६

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सुकृ वेर पा नाय ताा दे अं पा नु रवि कृ सैः का न चि नं अा ताःऽ अा दि उ गो अा रा का नि अ का ना रव नु कां सघा

सं ता वि ता नि य सो न य घा सं त घि त को पत नि स सो न व र वो ता क लवो कृ प का रे ता ा पा ना दि बो ठ रो व सा तु

का ं (स) अ सु तैं रै वी ं स ं रघा पा न्या सा प अा स न रघा वि ज न क हे ता हे अ अ प ला र ता सी

गंती ना व त नी त्ति स्न त न न वि ता र त व स्खो त नी या ल स्मो दि चै नं कि ं है अ िा ति र ा ा रा वि

तै रघा पि ता दे अ कं तै नि त्व ं ता ं र प ा प अ द स्ता अ अ व स तु रु दे र प वि अो ं न ला र कृा

स व अ ं न ल अा ं न लौ अ दि प ज्ञी ं व दु तु अा ं कु अा नी ं सि ं स वा दि नीं का न वा ं त अ चि ं ती ं ता ं स

व का अ उ प्या ं त अे उ गो अा यि त न व ती ं कौ अा नी ं अ ं वि का ं त या ा अ दि पा अ दि नी ं रे व व ं ठ का र स न स

ती ं वा नी रव नी ति अ अ रा ः पो ल्के कृा या दि न रै व ता ः पि ता अा या क रव रा सु सा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अं॰ वह्नि अं॰ उत्ता यदराक तात्मने। आयअथ्थे। सं॰ सत्वा यभं॰ नक सो। तं॰ तअ सो। अं॰ आ
त्मने। उं॰ अं॰ तत्तात्मने। प॰ पन आत्मने। ॐ॰ ह्रीं॰ ज्ञानात्मने। ना लायक॰ ज्ञायापले तयो। बी के तयो। के स
नेतयो। सं॰ सेतपाला यालं॰ पधिकात्मने। जं॰ थं॰ कलपया। रुं॰ आमारात्मने (७५९॰)
सं॰ वा। कात्मने। जुप॰। नं॰ आत्मि। आत्मने। दीपन॰ अअ तात्मने। अअतो। पदान
नै वे यं॰। इति पं॰ वो पवानगुऋः सअपपऊँ॰ आं॰ ह्रीं॰ क्रों॰ यन लवरावसदो॰ रुं॰ सः। ॐ॰ उं॰
उ गायेन अः। इति प्राणा इद प्राणाः। ॐ॰ आं॰ ह्रीं॰ क्रों॰ यन लवरावसदो॰ रुं॰ सः। ॐ॰ उं॰ उ गाये
न अः इति जीव इह स्थिताः। ॐ॰ आं॰ ह्रीं॰ क्रों॰ यन लवराजसदो॰ रुं॰ सः। ॐ॰ उं॰ उ गायेन अः इति सर्वेन्द्रियाणि

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वा कपाः पारु परंघसनो बुध्दिविताऽः कानत करु स्नोत ञ्जःस्त्रा घाताेरऽै वाणतन रु स ब्बिनं तिङ्गं तु स्वा का ॥ ऽ

आं श्रीं क्रों चनलवरा जसखों दं स्वहऽंऽं उं उ नातेजलनः अलआणकु अाणकु आवाद यआवादया।

आवाकि ताल वस्धापतातवस्रुवतिङ्गतातवरुवस्रं ना

२४ स्वातवङ्ति सङ्गं ऽ ऽानवदरथाअस्रुनीतेता॥ ऽं नमोतम तवव रातवरां ता तनअतिऽ

क्लिं वासनायऽं नअङ्ति थ्वावापकातवायनायचिअदे यवे वक्र नसयं श्राऽथायनका

उर्विङ्ग पवो ऽसातुऽतन स्वयंणाअघसातकानारा ऽ कन्नक मानिथी मन्दितिं नो

असअितवो गु तवों।पत्रअ गु तवों।पत्रमो ष्ठु गु तवो वचं नतापतयो उं उ नायो। सं सोलपाताया। सं स्वनखु कं कलाऽं व्रनातवो नअः

तवो। अं आत्मनो। आं पत्र आत्मनो। इति थ्वायेतु। अकानादिस कानां तं यात कात्मरयं कतायः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ अं नमः । एं नमः । ङं नमः । टं नमः । तं नमः । यं नमः ।
आं नमः । ऐं नमः । चं नमः । ठं नमः । थं नमः । रं नमः ।
इं नमः ओं ना । छं ना । डं ना । दं नमः । लं नमः ।
ईं नमः औं ना । धं नमः । वं नमः ।
उं नमः अं ना । नं नमः । शं ना ।
ऊं नमः अः ना । पं नमः । षं नमः ।
ऋं नमः कं नमः । फं ना । सं नम ।
ॠं नमः खं ना । ढं नमः बं नमः । हं नम ।
ऌं नमः गं नमः । जं ना । णं ना । भं नमः । ळं नमः ।
ॡं नमः घं नमः । झं ना ञं गं नमः मं नमः । सं नमः ।

इत्यादिन्यासं कृत्वा । ॐ क स न ल ट आं आं
ज्ञात्वा । ॐ ऋं यं ह्रं क्षं नं ह्रीं तर्कनीत्वा न्ना ।
ॐ ऋं टं कं ऊं कं गं कुं मध्यमात्वा न्ना ।
ॐ एं तं ध्यं हं यं नं ऐं ज्ञानामिकात्वा ।
ॐ ॐ वं वः बं तं मं ऊं कनिष्ठिका ।
ॐ यं नं लं वं रां लं रं हं करतलकर
ज्ञात्वा । एवं षडङ्गन्यासं कृत्वा । ॐ नं न्यासः । आत्मरक्षा
ब्रह्मरन्ध्रे । ना रतो चं रः । आत्मकालनीरस्य रस

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तीर्देवताध्यानं गपं वारा दत्तितैर्विद्धि तवेदनर्णोः पारस्य क्रुसि व सोदे ऽां तास्वक्ष पर्ये ललितराशिकला स्मिं ३ कं
ता नशाताः श्रस स्वलक्ष ता निं ता लिखित नवक नात्ती शप श्रा स्वनस्वा ं श्रह्म क सपा मनुक स्वनक पत
७५ तना ं ताततीं तां नश्रा श्रिपइति ध्याता ा प स्द्र सम सये भया येतुश्रा श्र ३ ऽां कत्रा पुर्वसं लेताध्या
येतु ॥ ३ऽं नान स्न लिङ् णा सली ऊं ःः ३ नादि वेता ३ऽं ह्रीं ३ं ३ णाये ऽां दइ सासा ३ऽ ह्रीं
३ं ३ णा ये ह्रीं रा नसेस्वा ऽा ३ऽं ह्रीं ३ं ३ णाये ह्रुराश्रा ये वौ षट् ३ऽं ह्रीं ३ं ३ णा
यै ह्रैं कवना युरुं ३ऽं ह्रीं ३ं ३ णा यै ह्रौं नेत्लत्वया यै वौ षट् ३ऽं ह्रीं ३ं ३ णा यै ह्रः अस्त्राय फट्
ह्र ॥ तुतु वस्वनो शिति दिग्बंधः ध्यानं रां स्वा तावराता तं तकना ं ल तो ताता तश्रो तना ं ३ कत

CSU Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यावितरक्षि नीहाग्रासंस्वघतां रारव नसि धनुतां वउनां उवानित्तां उनितवनरु नां नमानिपइतिथना
नं अग्रे देवी मूलमंत्रे आकंउय नवि अनशुप रुंदः सीमदानस्मीदेवता नं दारा क्षिल न क्लं दंतीति
वीजं अग्निस्त्रवं द रानननीतये प्रयग्न वनिले अवविनियोगः मरुाको रानिवासेनराक्ष
चैतपरोत्तितातव देवीप्रसादात् ममसं तुमनोनधाः दरानननस्था दरातुमां
सं तारस्वनिवेदि गीं ब्रास्मी मादे स्वनी वैवकौमनी वैस्ना वीतधा वाना रुीनानसि
रुीवनामं डीपनभो स्वनी रावउतीकानमातो मत्यु रवमण दीरवनी नं रावनक्लं दंतीव
राकं जनिरस्तीमका त्रामनी वैवउनावि कानमाती स्वराक्र यहः रत्येता देवतास्वं सीत्वमीरवनीतिवीजं।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ता॥ आर्वरू आर्तवेरः नूरु:।असतानू।यूः रु।वृं: वर्यतोत्तुला तुं:रू पेतू। बृब्वा:।अघ्या: नकु आं: कृजिब्रोप

नं:मितवनताायै। विकंट नसज्ञौ। रुवतानीतायै। रुतुआयै। कं:तुं:। रोतनालतायै।तुवौप।

पादौ कुअ याअ क हिं नातेप तुऔ कुप रुनासा आर्वरं:उरंघतायै।

अगअनवौ। विज्ञवलूतायै।पारवौ। कअलरुखायै। बृरायै। ललाह:कुप

अं: प्यौ कु। आपवलिं:नवसरंघ रुखौ कुप नासि कं। रुनसे अं:तसेविताया

अगवं:।रितायै। लायै।ावसरंघालं: नन कुउ कां:बृलै। रु:उवनेसताायै। सी अं:तं:कुप

आतुनी। वितुदलोदनायै। कअलक्ष्लोवनायै। अं:बृलीरु। नीलश्रीवायैप नेताातिप रिावोयै।रिानः कुप

उउ विक्र आयैउ उं:प उदनं:प रुतनौ कुप

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्त्रीअकलस्त्रौ। बकल७०७०८ असनात्मिकाचौ। रुनव०रता याऽस्थवीता७ लालि स्वस्थयोनिप अख
स्वर्णिणं०भुअ५ वरलस्त्रौन। ओता७७प० राथैगोद्भूरौ रेसिं अ।लुप०७र्लपौतर्णं०पानं० क
आ७ ज्पभुआं०क५ रात ७७यं। कठापतास्यौ। नोतुआ०।दीप०।कं०गा तां०लसिंञीरानां०
२२ कान्तौ। केतकी७७प०७ ७०नाग१। स्थअसेपनैवेअ०।लनं मूक्षर्नि०वांक्षः न
अग्राकालौ। तार्णवौ।कुअ१७७ अरक्तोतां०बुल०।नक्रो योनर्वआस्रूरौ
अल्लिका७७प०५ सिचलस्त्रौ। कूपेर्दुर्गा।नीनाअनं०।पअ।नरो१अनिपअर सैंतिल५
विकनालौ।वं०पका१७ आती७७प० अग्निसं०।नप्रस्व।प्रर।सुतां०।यास्या पत्रआस्पनरस्था॥
तैलोक्यवा।रवतौ। ताक्षवस्रलायौ। तरुकान्तौ।नं०भावर्त
नं०बका१७। ल७५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

परं च विमोऽंगलस्य क्रुते शरसा तं नानाम तो च विमुखे मयाल स्मी वथी मधि तः नो म सालक्षिव चो र या तु वस
ना स्वीं सर्व मों ग लक्ष ग लो स्तु ते न मा तो मै स्व र्थं व र ७ ल रिथ तौ च च च स क अ व दे वि तु
प्राच्यां सिद्धानने। इति प्राचीनम्। ॥ पर तिस्रो च वां भैः ७ आविर्भूतः ॥ ५.५
ॐ अस्तारे चौ नमः। ५ मास न पाता या मं अ धो कृ वक्र वा॥ ॐ पु वा कृ च व ७
नवनाती कलता ता विरो जता विरोधा या र तत्तिथौ रक्षं ३ ७ ना तो कृ प का ने ता च तिवे ता दि नव मा कात
म म मा वनि जन मा ता च त सिध्य र्थं न मो र्थ को ध्न मो स र तु विधि व ल ७ तु जा धि सि न र्थ
तिवं न व मी कर्तव्या न व रु मोघ मां क ते जै ति सं क ल्पो क्रा न ज्ञा न सिध स्वा न्या ना नो ने स य ब
ना ना व धि वि कृ य ला तातस्यकरा मा ——

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सोत्तानन प्राख्यर्छ॰ नाआस त्याजरक्क॰३७ नाााोक्कप्र — कानेााप्रतिपक्षनमीविर्य॰त॰कलनो — क्त नवनालनां॰
नवउ णोपु अं॰नवनालीव्रता॰ नत्वेनसीउणी पनमेरवनीरसमानाथन॰रनीसरालरमीरसमानाथन॰सीमात
कारानरवतीरसमानाथ न॰ क्रनिजेद्रत्तिरर॰कालपरुअरुतेदेवी॰ रर॰रघाचप्रतिपमा
दिनितैवप्राात प्रतिझायघोक्कवक्कआकलयार्वनि॰र॰रा वनि॰कआप्रतिपमा
दिनेवमीकतकाःप आयआ नत्नवुमा॰ — क्त यो
देवतारधानआनतां अं॰हपावनिपुवेकं पआयआतिकावेहुर्य॰का॰वनस॰नपुवके॰(उ)का
दाअखआकीति॰नन वैरुर्य अं॰दित॰।अं॰उकाय णतिक्रों॰त॰न॰यजुपमनोर्द३॰।ननवाअनज॰
ताउवितानैउणरोतितत॰। आतीन॰पक कश्लानैके तक्रीआल्लिकादितिः।न॰रा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

२८ [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नम्राय
अथस्थाय
अविज्ञानाय
अवैनाशाय
अनैश्वर्याय
वरुणाय
न प्रवर्णाय
लिङ्गरूपाय
रमामनोज्ञाय
अवैन ज्ञाय

तुतरूपाय
नीतवर्णाय
अनैश्वर्याय
गारुडरूपाय
नीलव-
र्णाय
नीलमध्ये
अनन्ताय
आनन्दरूपाय
संविन्नालाय

उल्लासकन्दाय
नालालापज्ञाय
पत्रेभ्यो
नालेभ्यो
केसरेभ्यो
कर्णिकायै
बीजेभ्यो
अं अर्कांशूज्ज्वलाय
द्वादशकलात्मने
अं वह्न्यंशूज्ज्वलाय

दशकलात्मने
उं सोमांशूज्ज्वलाय
षोडशकलात्मने
सं सत्त्वाय
रं रजसे तं तमसे
आं आत्मने
अं अन्तरात्मने
पं परमात्मने
अं मायातत्त्वात्मने

विं विद्यातत्त्वात्मने
शिं शिवतत्त्वात्मने
सं सर्वतत्त्वात्मने
चतुःषष्टिके
योगिनीभ्यो
ब्राह्म्यै
माहेश्वर्यै
कौमार्यै वैष्णव्यै
वाराह्यै

इन्द्राण्यै
चामुण्डायै
लक्ष्म्यै
स्थानस्थित्यै
सम्पत्त्यै
विभूत्यै
शान्त्यै
पुष्ट्यै
तुष्ट्यै

मेधायै
अनुग्रहायै
फट्कुम्भायै
ॐ नमो भगवते
सर्वात्मिकायै
सर्वैश्वर्यै
सर्वसिद्धिप्रदायै
सर्वतत्त्वात्मने
...यै

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कलाधिपतये [illegible] स्वाहा । [illegible] वर्णाय [illegible] नमः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] धिपतये [illegible] स्वाहा । [illegible] वर्णाय [illegible] नमः [illegible]
[illegible] धिपतये [illegible] स्वाहा । [illegible] वर्णाय [illegible] नमः [illegible]
[illegible] धिपतये [illegible] स्वाहा । [illegible] वर्णाय [illegible] नमः [illegible]
[illegible] लोकाधिपतये [illegible] वर्णाय [illegible]
नमः [illegible] धिपतये नीलवर्णाय [illegible] स्वाहा । [illegible] नमः [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ नमोतनवतेसर्वेरवजिते ७ रसुं रतिस्वोउगवितमेरव स्वौ ऐं ह्रीं स्त्रीं वा मीरवनी पनमवा मीरवनी
भ्रुतैर्भि अवानाणभ्रगणस्त्रे ति अअप्रसंनातव॥ अघाउलिन्नानं॥ अनु ताकअलसं स्थातउअः
फं अवाताकितमअल स्थतेशातातिये आंज आवलितामकरविजि तालं कृतापअमालेतुरि
तुतुरनमातासंततं स्त्रीजियैनमः॥ रे अवस्याजिं उरसं उाथमी स्त्रिं सं सावित्रीं
तीतिकिस्वां लितोलां से आनअस्थां नीतवस्त्रां प्रसंनां रेवीं उर्मिं तिखेतुपां नमाजिपवंवाराउनतेरैविदि
तवरतनेः पारउकुजिवसो रेसंतास्वकपरलिलितरासिकला जिं उकु रोनरातां अससकुं तजिंतालिस्तितव
नकनातीशपआसनस्थां अज्ञकलपामतुकं रस्तनअ पनततनं तानतीं तां नमाजिस्मिनारों नाजिलोताभञव ना

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

इं॰ग्रा(इ)तीयावर्तानि
अयततीयावर्तानि ३।
भ्रातृभौ। भ्रातेरवपै॥
कौभायौ। वैश्वावौ॥
वानायै। इं॰ग्रापौ॥
वाह्रं॰उपौ। लरस्थपौ॥
इतिततीयावर्तानि
अयततीयावर्तानि

जलभालायौ।
कमला यौ।
बाला यौ।
अयसौ।

कुलिशायौ।
गदायौ।
वक्रायौ।
विरुतायौ।
वस्रायौ।
इतिवक्रयावर्तानि
अथपं॰वभावर्तानि
विरुंतायौ।
पतरावेरपं॰सायौ॥

प्यं॰तायौ।
पारायौ।
राकृयौ।
रं॰ठायौ।
पानपालायौ।
जुभाविजे।
कुरयौ।
इतिपं॰वभा
वर्तानि।

अथजभावर्तानि
अभिता॰ंगतैनकाया।
उउतैनकाया।
वं॰ठतैनकाया।
कौथतैनकाया।
उन्मतैनकाया।
कपालतैनकाया।
तीजाततैनकाया।

रूपं॰कानतैनकाया।
इतिजभावर्तानि
अथरसभावर्तानि
श्यालिनौ।
कपालिनौ।
अस्थातयौ।
ननरायौ[illegible]
कभं॰ठलायौ।

इतिरसभावर्तानि
अथजभावर्तानि
नाकलस्थौ।
तोनलस्थौ।
वीनलस्थौ।
आनं॰दलस्थौ।
नकलस्थौ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्नि॰ङुनलस्त्रौ। ड्णवाद्विनौ। ञाघनलवुमाण। जिनतालौ। बिलुपसण सोवञ्ज डाडतोनुत॰ ञरुाद वप्रिराय॰स दापनवु

ञाह्तलस्त्रौ। स्त्रि॰ङवाद्विनौ। काडास्नौ। निग॰ङीप। पल॰प्रयक्तास्निपबिल॰ दोस नेरवनिाबिलुपतसडार्पााण।

५१ स्वतनल स्त्रेण॥ ञरववाद्वि नौ। ७ तुनपतन॰स्य नालव्लानालौ। राक॰न ऐनिलस॰ बिलुपलण जडुताखै। जिनप स्वयालौ।

इतनशडावतािनि गळुवा डॊ॰नलाखौ। वेगापलण। जिलुपलणडाखालौ। बिलपास्वेरवऐंबिलुपलण

ञघनवडावतािनि ज्रिनौन डान्निकापलण स्वर्वकालौ। एतिनर्तिाः बिलु पतङुआः स्सडपयाासिना॰

डाख्नवाद्विनौ। नाना डालवौ। बिङ्गक॰तीप। ताजनडयी॰लस्त्रौ॰ स्पासा स॰पतडसापिनीरङु

कबतवाद्विनौ। डातुणपलण ञरास्त्रनौ। वङ्कि॰न॰प्रगास्पाञ्जिस शण॰लेनस॰कतेउलापनेडेरव

ऋ॰स्नवाद्विनौ। नााानिले मिता। जिनिङ्गोलौ। ङुवापलण। यौ ङुस॰के न॰रा॰ता॰मी॰त्सडला॰स्ववो॰ङसाङ्गनलि

शकुङवाद्विनौ। स्नोङलापनेडेरवयौ। ञपाडाणप डा॰ला ज्विङ्गोलौ।

रातिडवडावतािन। लण॰२

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वर्णिताः। उक्तं कन्नो मिन्नाकिं नौः पल्लवैर्निरुन्नोह वैः। सार्वं चौ। पल्लवपु आः। अ अपुष्पपु अः। उल्लसीनं प कौ अतिथैः केतकीक

कननीनकैः। उक्तं लिखालि कार्यं स्यं सर्वपुष्पाणि तावास्सेवं। आपद्य पुष्प उक्तं कणिकैः

उक्ता चैः। कैमवतौ। लोकसाते। सर्वपुष्पाणि तासु। प्रेतवासनौ। तुवनेरवनौ। ननतोकिनौ।

नं पकापुष्प। उपिकाः। पुनपुष्प। आपद्यो मिनी उक्तं। टंकानौ। कुबकिसनौ। पटकानौ।

कात्यायनौ। शरवचैः। मनोनमायौ। उत्थोननौ। स्थकिनौ। नोनवेतानौ। चोनतुपायै। बीनतकायौ।

केतकी पुष्प। रपुंगथोपुः। वकनपुष्प। पिकचोमिनौ। ज्ञाकनौ। उंकानौ। पितुपायै। उत्थारनौ।

नौरनौ। कनकीतपुः। तवानौजं। सर्वमंगलायै। सर्वमंगल। सिद्धयोगिनौ। कालनानौ। पत्निनौ। उद्धां चौ। कनकप्रिया

कानौ कमल। भावतनिपु। पुंनानपुष्प। दासिनौ। गतोरवचौ। निरासचौ। यौ

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

५६

नास स्यौ।
नक्र श्रोनारसौ।
तरवं क चैवं
वीनकोष्मा यौ।
नंडौ न।
भंडुभाजितौ।
तारुनिनिनौज
नोद भ हायौ।
विश्नां तक्यौ।
कं हकौ।

ज्ञालिनौ।
हार्दिनौ।
यशाकुतौ।
कांडेकौ।
काक हसौ।
आनोहसौ।
नंडोश्रना।
निनिनौ॥४॥
तानतौ।
तारसनौ।

कोलिनौ।
स्वल योनि
नौ।
कालाशौ।
नाक्षितौ।

नक्रौ।
कंकालौ।
स्वरस्वासौ।
जुर्कटात्माभः
विकमालौ।
श्रोनजिनरुं
भिनौन
स्वभ्राजौ।
डुवलिंनोक्षौ।
भ्रालिनौ।

रत्नायौ।
णोनवतायौ।
जुह्रासौ।
श्रोनासातनायौ।
उशनयौ।
नीललोहिताया।
सुंतनिरतमश्रि।
सीमदाकालिमदा
लक्तिमदासनस
तौ नडं॥

नवुः जशकोला
खोनिनौ नमः
नराना वारुनादि।
आंकाहोरवयौ।
आंनागमालिनौ।
उंवलवासिनौ।
उंमदनिचायौ।
उंसिवकुतौ।
उंरिवायौ।
लुंकलसौंदयौ।

लुं नित्यायौ।
पं नीलपातकायौ।
पं मयायौ।
ठं सवमंप
लायौ।

ऊं क्लासालिनौ
अंविलावारिलोयौ।
अंलिनरसों नयौ।
मसाकानिमकालानिम न
आरमनस्वतौ भगनादि।
आयरुनाशौ ननमाम
उआं कानिजौ।
ऊं चोनलिजौ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

उगीदो।

वेव माता यै।
र्‍रुं ता यै।
निरुं ता यै।
वोल माता यै।
कुम्रा स्वै।
वंठ रुंडा यै।
उ गा यै।
नवराकृत्वामिस
उर्गा यै।
विणमात्माकउ

गायै।०
नन्ंकयायै।
स्वनखेशा।
नक्र रस्ताये।
नगा यै।
दिनदवा
जिनयै।०
नो लवै।
नोजै।

भ्रूदेवौ।
रुंकनवल
तायै।०
भ्रास्वौ।०
रावकु तवै।
रवरिा क्रि सनविवायै।

कोश्रायै।
त्रिश्रुतवै।
कलको पभायै।
कलवै।
वंठकायै।
स्वतरायै।
गभानुकायै।
रुंस्वानुकायै।०
सिन्कानुकायै।

त्रिरुलउम्नुगव
अरिसद्भुंगनानितायै।०
अरुमालानविंदायै।
नवै। कान्यै।०
वेरणतायै।
रवणापोनितायै।
रिहणायै। वक्रायै।०
त्रिरुलायै।००
रपपायै। आ- निकायै।०

तवायै।
कोमायै।
जिनायै।
विलालकावै।
र्‍रुं तानिरु-
तनिपाति
नवै।०
सनकेत
मनिमोरु
नमतिनवै।०

नक्रवीकनिरुंत्रिनवै।
अलउगायै।०
रुद्रनउगायै।
वनउगायै।
जिनउगायै।
आमिउगायै।
स्त्रीउगायै।
कानोकातेरतिंजउगायै।
शुभिकात्तरुंवै।

अरुनवाहिनवै।
नघानुकायै।
पंचनववाहनवै।०
नक्र वपायै।
रुक्र वपायै।
गोरवपायै।
कोठवपायै।
पातवपायै।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

५६

सकलनस्त्री

सोमितवशाचै।
गौनवपाशिः
स्तुवशावितशाचै
राक्षि स्कल गतातत्वमानितोपै।
पारतां कुरामातनं गतत्वमा
नितोपै ॥ २०॥
रां सचक्र गरां जकुलानितोपै।
वातोकोदं उसदूः गमानितोपै
मं जकवक्रधानितोपै।
मसादरातुजांवलं विनौ।
तापवराजन्तं सनौ।

चावतन कन्यै।
सर्वजिस्त जनाजितनौ।
विदरा वन्दितायै।
सर्वविदसत्तुपातोपै।
चाकन्त ज्यै
नक्रूं तस्यै।

~~शाचै। सर्वसाक्षाक्ष्मानित्सौ। सीनसारउवासिनौ। क्षमां उमांउलायै।~~

मातचौ मचै।
कंगतनानाजितायै।
रातान्क्रितोपै।
ननत्यै मालयै।
तनुमध्यायै।
विज्ञानिचायै।

चेतनानिजितायै।
कनदाम्भिकायै।
मं जिकायै।
सेचौतुगातोपै।
सर्वरिचाचा।
स्वभायै।
सदाम्भिकायै।
सेथायै।
पतनिदं सनौ।
स्वतुपितोपै।
क्रेरायै।

क्रेरादानितोपै।
दानिवउं स्पतव
सानितोपै
सस्मामाचा
यै
सल्लासनौ।
सर्वतनमातृजितायै।
सीसनस्वत्यै।
उनाशो तननामसउमा
सस्मानस्त्रीमशो तननामसउ

कांकनिनौ।
सीमस्मानस्त्रै।
सस्माकानौ।
स्पनस्वतौ।
सस्माकर्णिकायै।
सस्मादेवौ।
सस्मागौ चै।
तक्रान्तग्रदका
जतपै
स्वमकारातुप
तै

सस्मानापा
माकेसचैन
कनचालौ।
कालनालौ।
विलोवनायै।
जयलरनौ।
तउकानौ।
मपालिनौ।
मानिसेनालि
नौ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वीणापुस्तकधारिण्यै । योगिन्यै प्राप्यायै । पञ्चावृत्यै । वेदिकायै । चन्द्रमण्डलसंस्थितायै । उग्रायै । जकारस्थितायै ।
सर्वशक्त्यै । अक्षाङ्गवीणायै ॰ योगिन्यास्वपञ्चा अर्ल्लास्यै । वेदरूपिण्यै । त्रिकोणायै । चक्रमध्यस्थायै । कलावत्यै । त्रैलोक्यसुन्दर्यै ।
उग्रायै । अक्षतेनर्त्यै । या ... न्यै । गिरिसंचारिकायै । गिरीशात्तवामाङ्गनिलयायै । कालन्यै । जगन्मायै ।
अंगनायै । स्थानदायै । नानाशोपवी तिनन्यै । कौलासस्पर्शयोगिन्यै । राजराजेश्वरी काक्यै । वेदरूपिण्यै । रमणीतायै ।
वाण्यै । सर्वशास्त्रधारिण्यै । कल्लेखायै । कल्लेखायै । सर्वति पा । वेदकायै । रक्षोघ्नतायै ।
सीनस्थसुन्दरासिद्ध्यै । सुरसमण्डल संस्थितायै । पञ्चस्थितायै । तस्मात् रा । अनन्तायै । ब्रह्मसंस्थायै ।
बन्धाङ्गमण्डलायै । सोमार्कमण्डलसंस्थितायै । न्यनन्यै । ब्रह्मतायै । कैवल्यस्थान
उग्रातिनित्यनन्दै । सूर्यबिम्बकमला सूर्यमण्डलसंस्थि- सनातनायै । उपायै ।
सुभायै । ज्ञातासर्वविवर्जि- ताप नय विवर्जितायै । जितायै । १०५४० वह्निमण्डलसंस्थिता॰ पद्मासनवर्जितायै । नित्यानन्दायै ।
तायै । १०५ वेदान्तज्ञानरूपिण्यै । श्रवणरूपिण्यै । चन्द्रमण्डलसंस्थि- चतुरस्रादिमध्यनन्दै । उमायै ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

५८

सरस्वती

मनुकौहतअजिनै। आकिंतलसतकौ। अप्सनारिनै। मरालस्नै। पनमेरवर्यै। सिंहलस्नै। पनमेरवर्यै। सिंहलस्नै। मरूगौरवर्यै। सधोमातायै।

वामदेवौ न। अच्योना यै। ततगुणा यै। हीयान नुवतये पकारयै। योगिनै। योगिध्यान प्रायै। सिंधातलस्नै।

सिंधैन। कमलायै। पमनात प्रियायै। ललितायै। शुभकनाञ्जायै। सीमरालस्नै। रति मरालस्नी अ सोमनामर्ज [illegible] सरस्वती [illegible] अ श्रो ननामपुंगंकरिनै।

सरस्वत्यै। मरातकायै। मरामायायै। वरवदायै। सोमदायै। पद्मनिलयायै। पद्मास्यै। पद्मवक्त्रायै। रासानद्रायै। सोनमुद्रायै।

नमायै। शुभकपालिन्यै। कामरूपायै। मरानिकायै। महापातकनाशिन्यै। मरानिसै। मरालस्यै। जकांनायै। मालिन्यै। मराकान्तै।

मराकारायै। मराकानायै। मराङ्कुरायै। जनीतायै। विमलायै। विस्वायै। विरूपालायै।

जनासिन्यै। चंडिकायै। चंद्रलेखव — तुभितायै। सावित्र्यै। सुरसायै। जकारायै। जकालंकार तुम— तायै।

वागेवै। तीव्रायै। महाभोगायै। अकाकालायै। गोरवर्यै। गोमतयै। ४०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अहिल्यायै। सुरवंजितायै। ब्रह्मस्पृशायै।
जल्पवासिन्यै। सद्धनायै। ब्रह्मात्मिकायै।
पार्ङ्गिन्यै। अक्षरान्त्यै।
खेङिन्यै। सुव्रतायै। अक्षाविस्वोभ्या
पीतायै। निरायै। नितायै।
तोणरायै। सत्पायै। स्वात्मिकायै।
सत्यवासिन्यै। नीनकलोव रास्वनुपायै।
सौरासिन्यै। नायै। सुंचारुस्तनमालिन्यै।
सुंन्पकुत्यै। लैकुत्यै। पञ्चाशनायै।
सुतद्रायै। सुतनायै। लिकीलक्षायै। पञ्चदशाक्षरायै। नक्षत्रनीलनिदंस्वै।

गुह्यलोचनदर्पिण्यै।
निरन्तप्रकाशनितायै।
चारुकंठायै।
कान्तायै।
सर्वदेवस्तुतायै।
अनघायै।
पञ्चाराद्भनिरूपायै।
सुधाकलराभा नितायै।

ब्राह्म्यै। कान्तायै।
आदेस्वर्यै। जलमंपानले पनायै।
कौमार्यै।
वैष्णव्यै।
वाराह्यै।
वाराह्यै।
जिलोबनवितु भासमाला
चितायै। भनायै।
चिलमालाय नायै। जितनायै।

तुपस्यै तापसायिन्यै।
खेतानानायै।
नीलतुडायै। पीवनस्त
नलुण्डितायै।
सुस्तनभायायै। नक्षत्रायै।
उक्षारायै। नीलकंठिकायै।
भुजितुपायै। कुलितुपायै।
निकलुपायै। जपानुपायै।
२००५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

वाणीस्वरी

वतुनानन आयौ।
सोसनस्य तौ।
अक्षो तननाम उआ॥
अणवानीरवनीअसोत
ननाम उभः कतिवो।
उ ऽ॰ चोन निरायम।
देवकाता यौ रु॰ तायः
नि रु॰ तायारौलक्ष्मो तायः॰
जु आयौ। योचनो
व॰ उद्धु॰ आयाउ नयौ

नवरक्षक्ष त्रिक उणयौ
नि ठाण त्रिकायौ
लनंक्ष सायौ।
सुनरसे भूरस तायौ
नकुउतिकायौ

मणासौ।
णकाकुकायौ।
भात्तौ नौउ आयौ
असारेवौ।
र॰कनवल्ल तायौ॰
ब्रास्नौ त्ती मायौ।
जावकुतौ त्रिवौ॰
कौरि कौ।
स्वर्गयक्र समवि
रु तौ।

त्रिमुतौ।
कलणातौ।
कलणातौ।
कलरु
जचासौ॰
व॰ ठिकायौ।
सुतवायौ।
णकाउकायौ।
रु॰ सौनुकायौ।
त्रिकुलणाजितौ।

उनुणणाजितौ।
सउणणाजितयौ।
असस्रालानविं आयौ।
आगति तिउनेपरायौ।
णरानवा॰ णरुलक्
कानच॰ सातयाप
चारा क्रि से हचान
सानवक्र कमं॰ उल्वस
मलामाउथणाजितयौ।

६०

स॰ कासनाभेदेवकायौ।
सर्वाभिरेवतायौ। नतौ॰
कान्यौ वेरनतायौ
सउणणाजितयौ वक्र दसायौ॰
वेरउ लद स्थायौ।
अ॰रवर्प दस्था चौ क्र॰ विकायौ
तनायौ तनुकालयौ
कौ मायौ विकायौ

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

विलासिनी । अभिरुण्यौ ।
?ं तनि?ं तस । धीरुण्यौ । नक्रवाणौ । पारागं कुसरुमस्तत्र अजिताद्रौ ।
?जनौ । ? अनेक तेदतिं नरुण्यौ । ?क्रवाणौ । रां रा क्रीणरां लक जानितौ ।
?कैटतसर । ?जिक वासिनौ । कज्ञावाणौ । नागाको दंडसरु जानितौ ।
?नमजनौ । ? सकनवांसिनौ । स्वनवनौ ।
नकुबीकनिसं लिनौ । मधुनवासिनौ । नोरुवनौ । अंलुक ९ ? जानितौ ९०
कलरुण्यौ । मितिरुण्यौ । नघारुकाया । राक्रिरुलन । अज्ञादरारुरु आवलं लिनौ ।
स्थलरुण्यौ । ९० नवरुण्यौ । सिंदारुतनया । दातरा जानिता? । तापतस्य विवं सिनौ । रावतं ?नौ ९
सवानिशा विना सिनौ लिदस वंडतायौ ।
२०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

श्रीः

आयोरो

सर्वदेवस्तुतायै। सेव्यानुस्तुतायै। क्रोशयांगितायै।
दाकं न यै। सर्वसिद्धायै। अदभ्रमायायै।
अतिसौम्यायै। अकालरूपायै।
अनन्तविस्तृतायै। दानवानिहतदानवारिन्यै।
कमलासनपूजितायै। सर्वलोकवन्दितायै।
प्रकृत्यै। जिह्मविघ्नायै। पाशाङ्कुशायै।
नातिदीर्घायै। सर्वातन्तातुविनतायै।
वेतनालङ्कृतायै। सनत्स्वरूपायै।
अणदात्मिकायै। स्वाहास्वधानुस्तुतायै। वाणीस्वरूपिन
ऽकांजिकायै। शोभायै। सनातन्यै। ४१८ ५

वाणीस्वरूपी अस्तौ तवनाम्नां पुण्यं त्रयमपथ्यामि। अथ वक्ष्यामि
शौतव नाम पुण्यं कतिने। अस्य सौभाग्य शौतव स्या
अंतस्थ। अनन्तादन् नाडे(?) ज्ञान पर कं।
नादि वेताल बीजं ५ अक्षरातौ(?) ॐ कीलकं।
सीनु गायत्री छन्दः सिद्धये विनियोगः।
बृहौ वाचक ऽ० आयायै। आत्मा न्यस्य ५ गो यां कोमा
यौ। त्रि अवासिन्यै॥ वाणीस्वरूपायै। अशाश्वतायै। कन्यौ।
कं कालभा नितायै। पीता स्वातन्तायै॥ २०५ — ५

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ श्रीं स्फुरत्कं न्यै १ कलङ्कवर्जितायै । तरङ्गितायै ॥ विश्वान्तै । अच्युतायै । अवन्तिकायै । कन्दुकायै । ऋणमोचन्यै
अदृश्यायै । विकत न्यै । अनन्तायै । जीर्णप्रलङ्घिन्यै । प्रोत्तुङ्गितायै । आनतायै । आनन्दितायै १ विनितायै । अशोकान
सुराङ्गनाराधितायै । अनघन्यै । वंशवेणायै । विश्वरूपायै । आलोकायै । पावकान्यै १ सर्वजितै । ज्यायै
वं हौं तीर्णतायै १ कक्षयै । अखण्डनायै । अरुणरूपायै । वसुन्धरायै । सत्यतारकायै । जिह्वायै
अनिर्जितकौलस्थापितायै १ तेजिन्यै । वज्रायै । तटायै १ स्वरूपायै । स्वर्णाभिन्यै । अनन्तायै । क्षेत्रायै
नमितायै ॥ नामस्थै ॥ १० दण्डिन्यै । अट्टहासायै । उग्रतायै । कौशिक्यै । सर्वसत्त्वै
नम्रन्यै । सोमजातायै १ सोमायै । कपालिन्यै । लिङ्गस्थायै । ललाट सौ । निसृष्ट्यै । ललाटसौ
नत्यै ॥ नन्दिन्यै १ असकान्यै । आश्रितायै । चामुण्डायै । कृपायै । कपर्दिन्यै । निष्ठायै । विरूपायै
चान्द्रमसीन्यै । गामन्धवत्यै ५ तत्त्वकान्यै २० ज्ञानश्रितायै । चामुण्डायै । निष्कन्यायै । अनिन्दितायै २० । लिङ्गनाशकै । कपर्दिन्यै
जितायै ॥ ३० बुद्धितोयै ।
५०

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पत्रु आनिव तो आनिक्रों अनाजिवरुजि वाकरनीनानिके नाक्रः
सोपरुं सां सारयकरिंनैवे गं मआतां देवी सुपरसं नाकुलेखजिसआनिवेदितं सर्वं विसअनुतन आरुतप
नैवेद्यं ॥ अस्रादेविमस्रा ——— कारये अस्रानौदे अस्रा पतोद स्राप्र सानवंदेविग्रस्रताम्प
नअस्रवनिके सप्रसालनं) पानीयं सोतलं स्वच्छं कर्पुराग्निविसेसितं तं सं गअस्रतां अस्रा देवी गनराव
मनीयकं जनरावअ नं परारक्तकाले सम्मृतनादतानपम लाननोर्फला नीमा जिनस्रमा गाणि नञ्जी वर
नगुक्तितो फलिस सर्वाणि तांबुलं पुनरायकेलं लवंगेलाजिसंयुतं कर्पुरेनुगासं यकं तांबुलं प्रतिगअतां
तांबुलं निनाजनं परास्पा अतिसदेवितत्रवरोलादिकां नत्रका ओ नाज्ञानकुतेन क्तो सतेनी नाजनं ॥उ मा का तवाजि
नीरं ओ अजिनो सुन सर्द जिरोयस्रा लवां प्रयच्छ जिसुं सीता नवरातवाकीप अलालासमर्पतां ॥उ मर्देविन अस्रताः नस्रसै

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स गे ङक्ष्म प्रदा अनि त्वं स्तुता स्तुत ये का वात्त वं तु व न मो क्र य ॥ भप स र्व स्मनु अनु वा ता अन स्मद्र सं स्तुता सं गीप

व र्णि रि विना ना यता न सो स्तु   ते ॥ भ क ला काला त्रि तु वे ता व जि ता न नव रा अनि चिरव स्मो व ज तौ रा के ना ना य फा ॥

सर्व ज्ञं ग त ज्ञा ं ग त्वे   ज्य वै स वो घे सा थ के रा नं ता पे वि यं नु के रे वि ना ना ॥ व ह्व फ क्षि ति वि ना रा ना ं रा

क्षि तु ते स ना त नि ॥   ता ता स चे ग ता ज्ञा ये ना ना ॥   रा ना ता ता न त री ना ति व जि

ता ता व ना य तो ॥ स र्व   स्मा तिं दि ते रे जि ना ना ॥ र ं र ॥ क्र वि मो   न स्थे ब्र ज्ञा ता नि तु व था

ज ता कौ रा तः रु नि के   त्रि रे वि ना ॥ स खु र क क्र ट व ते म सा सा क्षि य ने न चे कौ ज्ञा नी तु व स ं ख्या ने ना ॥

वि रु ल वं आ दि य ने ॥ ज्ञा स व ज त वा दि नी ॥ स्म रे ख नी ख नु वे ता ना ना ॥ ज्ञ र ं स र क्र ग ता सा दि नी सी त व ज्ञा यु ये ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नस्रो रवै क्षवी नुचे ना ना ००८५ न्रू ऊी तो ण मस्रा व क्ष र० स्रोथ त न रु० थनो । व ना रू नु जि ति सि वे ना ना ॥ ००७५ न सो० रु नु पे तो

श्रीमाद० तु रै ना रू तो घाक्षो । तै लो क व ना ता अदि तो ना ना ॥ ००५ क नी हि नि सस्रा न क्ष साद स न य नो कु लि व नवा मा

रु ने रौ० जि नो ना ॥ ००८५ रि वे उ तीखनु पे मा रु त रै त म स्रा व ले प्वो न नु पे स स्रा ना वे ना ना ॥ ००७ द र० स्रा क न ल व र नो रानो

आ ला जि तु ना तो वा भु० हे ह्रु० ठ म घ ने ना ना ॥ ००७ त क्षि ल क्ष के स स्रा वि यै स ये ७ श्र स ये नु वे ता स्रा

ना लि भे रा जि क्षे ना ना ॥ ७७ क्ष पे स न स व लि रा वे तु वि वा त जि ता मा स्ता नि य ते त० थ स्री रे रो ना ना ॥ ७७५

स्र्व तः पा ता वा रु० ते सर्व तो सि त्रि नी भ्र सो स र्व तः स व ता प्वा पो ना ना ॥ ७७७५ सर्व स नु पे स्र्वे रो

स्र्व स वु ने ना य नि त्त ये त्त्वः स्रा स्र नी रे नि उ यी रे व न स्रो र त ते ७७८५ प व वे र र न० रो न्म० नो व न त ज तु जि तो थ

पा तु न: स्र्व ती ति त्त्व: का त प्रा च नि नय ७७ ८५ क्षा ना स ना न स्रत ण स रो जा रु न रु र न ० विरु त० पा तु नो ती ते त उ का लि ना ७७

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अस्माल स्यै व्य॰ छि लो क्रव उजेनअ॰ दर्पताण॥
तवानौ आं॰ सेलक॰ ल्मीद गापरे मेरव यैरिशिवबी अण स्यर्वदेवि नमस्तुत्यै स्यवैपवान्तुआः पन्तु भीत॰ वाक्य॰
श्री वप्रदद्रास्लिसिक॰ पनःव आपतां॰ न्न ना या घ स्वात्म॰ न दास्यैतु नः पत्र = स्यरस्मत्ये तिस मपतीन प
इति सी स्कन्द॰ रपनातो — नवानालीव्रस॰ स॰ पुराणि॥ पदेवी प सर्जन॰ ॥ — प
तेवीजस दराम्या॰ प्रातरुष्रा यनि तत्क्र सतिवतर्ततुमितः प्र — तः पुरु यलोदराम्या॰ विलिप्
अनि॰ वकि॰ नपस॰ प्रेजाता — तुक तविका॰ नीतवादितानि स्वैनै॥ जोडरो पवान्तुआं॰ कता नीनाअनाक्रिक॰ क
श्रीतु प्रा घयेतुप — प पतुप॰ दे — क्रि यरोदे क्रि स्यौ ताम्य॰ देविदे क्रि अ प्रत॰ दे क्रि नन॰ दे क्रि
सर्वकाआ॰ स्वदे क्रि औ॥ म क्रि जन्नी अस्रा आयेराअ॰ उअ॰ उआ लिनि आयना

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नोभ्रद्यौस्वचं देविदेवेन ब्रोस्तु ते। इति संप्राप्य देवीतु ततः प्रापये विकां नेतु ति शब्दरन संलेपा स्यवरो हंसानरुद्र

याउ विभूदेवं देरे परेतः कुभांत न स्वविकृत प्रसभक लपापां असातिः राक्षितिः स्वह। नकनरू पनं स्नानं

रव स्थानं देविवंकौ। ब्रम स्तोतो मलं वध्यै रक्षीयतां वक लेखिस्र। पक्षतितु प्रापपासक लंनी

कापर ब्रांत कां मयादेवि यघारप्रको — पपा। तां नस्वार्थं वसमाप्त

यत्रक स्व स्थानश्र — त भणतु नेदेविकवनुमातः — रवस्था नं नकं पुक्रितोसं व

द्वानेकतीतेतु पनमान मनायवै। स्यांतु देवनमाः सर्वे पुष्पा भास्त — यक तांसस्र का मवरानार्थं

पननान मनायवाउति प्रव स्नाना स्यपतो। सवाः उत्पाय अ नेत् इति देवी विसअनि विसि। — प

स्तीरानरा तुतौं — नमः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तदि
कातीक
स्तो भवा
न्वत

झीस्ता॰नसरा(स्यिन्द्रुतयिनअः॰ऽऽ५ पनअस्रेस्पोअनाघ्यास्वशाग्ग —— तातिविनाराने।स्पोअवानवृत॰रा॰तोकजनो
तवस्य॰जथौ५पकत्रुक्रू॰वन कृ॰ववर्वौपोजागक॰रावि॰रक्षानरानादिके॰तलसरापर्ति(अतिस्मृत॰५नविद्धा॰कृत्तेरे
वस्यवाचीसिपर्लवरन् रैवतास्थानअागत्मअ॰दपार्वनिपुर्दकवकनागनावअ यत॰तुन॰नानियत॰कोदिध्र
रानवर॰स्रीकृतस्रदिओ वरानविपत॰दे अदि कोदिअर॰७ वेकास्रालस क॰पति दिन॰वानाथन॰
स्रीपते तेना॰७॰तापरा ताभिके॰निनिस्वते यत्हपोअवान वृतनस्रे अदिवृ तको(हिरोनर्कलि२॰स्यास्या
तचैका२रीतस्पाः॰को दिव पापक्रय॰त्पृ यतकत चेवनानविदे।यवननाव तयक्रकोदिर्भिलद॰तवृरपानाय
गा॰तीर्थस्नानवयाधिप कः॰र्फलिकन॰यहस्रे नवानवृत॰॥—पअास्नपापायाअ॰स॰कलपपपुवैविनितपवन्
गोतगादितिद्यौ न स्रीर्थकोअन अं स्नव तुविथिपर्लि७ तुणार्थसिथार्थ॰सअस्वपापक्र यार्थअ॰तेतुअलोके निवोसविध्ध
र्घ॰स्ता॰नसरा(स्येवशीतार्थ॰नागनादिजोठ रोपवानपुक्रा॰क—— निबोधकलरार्वन॰रासार्वन॰क नाविनितरम

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नमास्थानगां कृत्वा शिवसंस्थाप्य न्यासं कुर्यात् लिप्यस्यस्ती —— अथ ध्येनम् श्रीः अनु ...

समाशिवनुञोदेवता । ॐ स्था यो आतायनमः शिवाय अंगुष्ठाभ्यां नमः तर्जनीभ्यां नमः शिवायत अनी । शिवसो

आन्यौ नायनमः शिवा यामध्यमाभ्यां स्वाहा तत्र नायनमः शिवाय अनामिकाभ्यां कवचाय हुं स्वाहा

यनमः शिवाय कनिष्ठि काभ्यां नेत्रत्रयाय वौषट् करतलकराभ्यां नमः शिवायक नेत्रलकर । अस्त्राय फट्

एवमंगन्यासः उपाजिन्मा सः अध्यायं न्यासं पादयोर्यनाय तत्पुरुषाय यो: ——

शिवाय अंगुष्ठयोः नाभ्यां नाभ्यां तदनु वैष्णवी विधिनानायाक स्वाः अघोरायनमः

स्वे पार्वती प्रियाय नमः तौ श्रीः स्वनाय कुसौ सावार्द्धे ऐश्वर्याय नीरानायसद्योजाताय नमः कनायस्नान यो तु तेरास्या ।

कुसौ स्वंगु पानायवेतु अघोर हृदय नमः स्वं तेकि नमः शिखायै नमो —— किनीक केनीलकंठाय ... [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अं०अं०कुकाया
पं०कंकंदस्ताया
कालाक्लिन्नकाया
उत्तवाल्यि
आभानरावर्तै
ठुलनकतै(कुश्चाय
अनं०तालस्वेनाद्याय
पपृथ्वीनतसिं०कासनाय
साध्वेसरा(यावाया...वा अत्ता नेन०उ
पार्वतौ(अं०भद्र यौ(के खना यन

यभ्रुनाचौपारखे
नताप तये
वतः सायु

नं०मिनाआय(
सेतवालाय
पुवेसां०तौ
पश्चौत्तस्यौ
सां०कोजदेतौ
नआयप्कानाय
वैनाकारवा(
पेरवयाय
परिखेत्रे(
अनआय(

आज्ञानाया
आवैनाभाया(
अनेरवराया
पुनाजिवारस्तोतो(
रव०रवकाया
न०नभ्रवे(
त०तमरवे
अ०आचार्ये(
किं०किमाये(
प०पमाये(

उकाकानेतभो(
पुवरिशचेतमा(
न०उनो
त०जनो(
अका कालाय(
नतापतयो
उनाये(
दीनतमाये(
असातैनवा

वं०ठिकाये
ब्रात्मादिस
प्रआतकेतयोन
अतिआत्र
सजिय
तमो०न
उ०उानसादि
कपातेत्यो०७

सअसेरवततयो
सअस्तमतासप
निवेनरेवतात्यो०७
रसितास०डेरवताय(
पीकपुआ०स्वलाय(
अमनवराक्रिअय
वानाये(आमाय
सहाये(नोडाये

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कलविकरिण्यै
बलविकरिण्यै
बलप्रमथिन्यै
सर्वभूतदमन्यै
मनोन्मन्यै

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तिरवनुपकं॰।रवोमेरवंन॰सामनक्र नदातोमम॰अया — कतं॰।उक्ता॰व पुनयोमे काअ॰नप थे [illegible]
उऽ॰नअः।रा।ओवाद्दन॰।उक्रावैउर्च सवितं॰आनुरपिपनिव्क्तं॰।उपविश॰अक्रोदेवु॰।स्पऽ। [illegible]
नाथ॰वतुतं॰वसवदेवा मकं॰ ।रावं॰ब्रस्ना।विज्ञ।वा चोक्मान॰।स्था।पथेक्र॰ क न [illegible]
नसः।रिएआसनं॰।।८ देवदेवऊन॰ नाघअहनारोत्रिसौचन।पाप॰ नक्ताग।देवेर [illegible]
रवातं॰।उदेस्रः राता यपाश॰।सवेरासवतुतेरा — पनआ.न॰नकान ता॰।दनअ [illegible] अयाद
तं॰।श्रीकुउथ अदेरवन।उऽ॰नपअ [illegible] ॥न॰ना।स॰ नकीवेताीरउ नान॰दस॰तव।ता [illegible]
ल॰रआनीतं॰आरवनम॰ कुउरा॰कन।उऽ॰नपआरवअनं॰।रव॰रोातः रवनकु॰ता॰प॰वत्र क्ना।त्रन॰।लत [illegible]
आनीताः।सनतिरवापः।स्नान॰कुउअदरवन।उनी।स्नानश्रुउ मोसीनसाराययपिअ॰वाआस॰उते॰।राकीनरोाउ

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तंसो म्रम्रकृपकंन्रा म्रितोऊँनम्रः रा म्रकृप कंनिरव्नसीनरुलंवैवम्रकृराकंनया कृतंपंनाम्रत म्रंवेतकीकृबन्नसेस
नाऊँनाप्रंनाम्रतननालि केनसैरु स्वस्वर्ननतोरकैः सरु स्नानं न रुताते वेरास्वनतीसम नायकऊँ नरायस्वा
[illegible] नंस्ना नांनम्रानसानीयनृ सिम्रवखसस्रानी तंरवां नसरसं नवं स्वविवनम्रखुतनं स्वोम्राय रा सि तौ लि नौ ऊँ न
वस्तंपना नयसोप नीताय देवरेनक पतपतो सिवा न नना या यतक नृजा नतौ
नाना निविलिना कनं म्रक स्पदवितुजापांनरुतापार्वती कांतन्न क्रोनामसा नना ऊँन नः न वायवनी
स्तीखंउन नु क पुनिकं कु नाविविलेपनंकंथंन रुतावेरातुरिनो सरसे नायकाऊँ नस्रोतनाया
सु पस्तप ऽ हि के सं कारा नुवंत्रको टिरवम्राप तंनम्रसता रेवरेवरान रुतालं ता पतोऊँ नाथंथा
ताग्नि लिखेप वै रखतुल सोउ तु नंनाक पकपक नक ताल क सातारिक नऊँनाम्रस
तानं रातउप्रकनऊं नाना निवरुनां या जिपपातिवृते ऊँताः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ नमः शिवाय ॐ नमः
अथांगपूजां करिष्ये।
तत्पुरुषाय नमः पादौ।
संतके अघोराय गुल्फौ।
शिवाय शिवाय जानुनी।
सद्योजाताय ऊरू।
उत्तुङ्गुजाय कटिं
संकर्षणाय नाभिं
नाम नमः
हंसनाथाय स्तनौ।

नानागुणं
गुणंनाथाय
वामदेवाय भुजौ
हराय
चुतेश्वराय मुखं
नमः

नमः
गौरीपतये मौलिं
सर्वांगं
त्रिनेत्राय नमः नेत्रे
सं कालाय कर्णौ
नीलकण्ठाय ग्रीवा
ॐ कं कण्ठं
जिह्वा ॐ
मुखं

स्वर्णकुण्डलधराय कर्णौ
कुण्डलभासिताय कर्णौ।
अनलनेत्राय कण्ठने
लायै नेत्राणि
त्रिनेत्राय ... ललाटं
नललाटायै ललाटं
रुद्राय अङ्गानि ... यै।
शिरः।

अनन्ताय ...
शिवाचार्य ... पूजा
अथ ... पूजां करिष्ये।
सद्योजाताय नमः
अघोराय ... नमः
ईशानाय नमः शिवाय
इति प्रथमावरणम् द्वितीयावरणं
... नमः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

शंकराय। (शिवायेति द्वितीयावर्णं) स्थाणवे। अं·श्रस्थायाय।
वृषभध्वजाय। आद्यन्तौ यावर्णौ ज्ञेयौ रुद्राय। उऽग्रवर्णाय।
१०० शूलपाणये। वीतदोषाय। उमापतये। इति चतुर्थावर्णं
कामांगनाश शंतवे। इति तृतीयावर्णं अथ पंचमावर्णं
नाय च
देवेशाय। गौरीशाय। अथ चतुर्थावर्णं रंभ्रपौनामातः
श्रीकंठाय। अजैकपदे। उऽग्ररूपाय। वं·श्नतो।
ईशानाय। अहिर्बुध्न्याय। नंदिकेशाय। विद्यावेति पंचमा
पार्वतीपतये। भुवनाधीश्वराय। गंगाधराय। नातिं५वीको पनिरं·मा
रुद्राय। त्रिशूलपतये पशुपतये शिं·कवराय।
वांनेललटाजा।

लं·इं·त्र्यायस्ज्ञानिवतये वृग्रं सायरन्वनेवोयसां·
गायस्याज्ञायसकासनायसपविवोनायसराकृये
सवालिं·कानतुजितोयगुरुपानिरीयारं·यायामना
दजेनं·अझये तेमोजपतयेराकृयेसाय।
नकृवामिय नेवकासनायसां·नाय।
अझये७५ सं·अमायत्रेतांजपतये रं·
ङरस्तायनील वनीयाअज्ञिजवासनायस्तां

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सं० निर्तश्चेन सोलिपतये सहूरु स्नाय कज्ञावातिर्येन नवाद नाय स्वा० नाया निर्त त्रोत्मा नाके ॥ निमान नता० कितायाः
वं० वनुतायक लालिवत चे वाराद स्नाय रत्तवातिय साक नवाद नाय स्वा० ना व नुताय ॥ कुर्याये कुव ति० नाय
सं० कायवे फ्रातपलिवतये अं० कुराद स्नाय ओ पवातियद तितावाद नायस्वा० ना ॥ वायवे ॥ कि न० ताका स
सं० सो मायन रुवालिपत येनराद स्नाय द तिरुतातिय अखवाद नाय स्वा० नासो स्नाय ॥ कि न० तापलि वाय
सं० डी स्स नाय कि स्ना लिवसये कुल द स्नाय दे मवातिय वपत्तवाद नाय स्वा० ना डी रातायाः रवता न्त्री
पे० कुन्ना तो लो कालिपत ये पमद स्नाय रत्तवातिय द० सवाद नाय स्वा० नाय वुन्नातो न्मा ॥ रवता ति० नाया
वं० विज्ञावे पाता ना लिपतये नील वातियनक्रद स्नाय पउउवाद नाय स्वा० ना याविज्ञवे न्ना न्ना दि रुन० ॥ दिका यदिचलि न्ना
अश्र क पु मा० स अ प यो ज्ञ अच ना स्नाय पु आ० क ते पको ॥ ——— ॥ ३५० नि मान पतस ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

१०२

तत्वाय तत्वलिङ्गाय
शर्वाय शर्वलिङ्गाय
शिवाय शिवलिङ्गाय
ज्वलाय ज्वललिङ्गाय
परमाय परमलिङ्गाय
आत्माय आत्मलिङ्गाय
सर्वेश्वराय शिवाय
इति नामाष्टकः।
अघोर तत्पुरुषाङ्कः।

तत्पुरुषाय देवाय
बिल्वपत्रं।
शिवाय देवाय।
तुलसी पत्रं।
तुष्टाय देवाय।

दूर्वापत्रं।
श्रीमहादेवाय।
अर्कपत्रं।
उग्राय देवाय।
निर्गुण्डीपत्रं।
भवदेवाय।
नन्दीपत्रं।
ईशानाय देवाय।
सर्वालिपत्रं।
अष्टपुष्पपूजा।

तत्पुरुषदेवाय।
ओं गन्धपुष्पं।
शिवाय धूपं।
रुद्राय गन्धं।
उग्राय सोमाय।
पुष्पाञ्जलिं।
दीपं।
श्रीमहादेवाय।
रुद्रकाय।
सद्योजाताय देवाय।

ओं कं।
हराय नमः।
श्रीमहेश्वराय।
त्रिलोचनाय।
अघोराय।
तत्पुरुषाय।
ओं सोमाय।
सोमेश्वराय।
शान्ताय।

शङ्कराय।
शशिशेखराय।
नागेन्द्राय।
नागभूषिताय।
शूलिने।

रुद्राय।
सर्वानिवृत्ताय।
त्रिनेत्राय।
पिनाकिने।
नीलकण्ठाय।
त्रिनेत्राय।
सोमाय।
वामदेवाय।
वीतरागाय।

तत्पुरुषाय।
तत्पुरुषाय।
रुद्राय।
श्रीकण्ठाय।
अनन्ताय।
पशुपतये।
भैरवाय।
अघोराय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सनातनाय।
कपर्दिने।
करालसिंहवे।
कोमलाय।
कामअङ्गनाशनाय
विश्वरूपाय।
विरूपाक्षाय।
निरूपाय।
विमलाय।
उरगाय।

सत्याय सत्यव्रताय
सौम्याय ... नकाय
त्रिणेत्र
कायुः
तीक्ष्णाय
तत्पुरुषाय
तामसे गौराय

गिरिशाय।
मृडाय।
गङ्गाधराय।
यज्ञरूपाय।
नागाभरणाय।
नागाभिजाय
स्कन्दादिवेद्याय
अघहराय गङ्गाय।
गुरवे
नीलग्रीवाय।

कालहर्त्रे।
कालकर्त्रे
कामिने।
अव्यक्ताय।
अव्यक्तिरूपाय
पञ्चवक्त्राय।
पञ्चभूताय।
वं जाय।
त्र्यम्बकाय।

शिवाय।
कामनाय।
वरदाय।
वरदाय।
देवदेवाय।
देवदेवाय।
नादाय।
नन्दिप्रिय

नागाय।
वनवासाय।
वनकानना
याः
मनोन्मनाय।
सदाशिवाय।

ॐकाराय।
सीताय।
ज्ञानविशारदाय
वाचस्पतये।
वासवेशाय।
सर्वज्ञाय।
यज्ञाय।
यज्ञपतये।

ओङ्काराय।
कनिष्ठाय।
पुरुषाय।
अपरकाय।
अपमार्जनाय
अपवर्गाय।
अनन्ता

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

१०७

	नसस्वराय।
भुक्षाय।	रुनाय।
राम·ताय।	सुनेराय।
सत्याय।	सविन्द्यकाय।
स्तोकाय।	ॐ नमः (रा
अप्सान्ताय।	वायन नमः।
वनाय।	अशोत्तननामकु
कस्चाय।	आः २१ अपि
सनाय।१००	।।०।।
शान्तस्वपाय।	

त्रिदनं (त्रिक) ।।।। काने तितोल वं च सोस्व नं (नित्वपल प्रच्य कामिस्रो मोयकृतु फोतिअ(ह
नमः (सिवाय (जित्वपत्व सअ षोति परस्ता नं ००० लं कुणं सुनं मं सुअनोअ नणवं
नागनुसं च कुं (कुपोयं पपकुॐ न। कुपं। क्रो (तर्व यायतैलोका क्रो(ति रुपा
यतोनमः (रीपं नुराणारे वेरा स्वर्ण त्तबतत्र कारा का। ॐ नारी पं पपकोणं नं पा
यस्वं वान साकनीसन्यं स्वं कुतं नानास्वाउ नरैणा वै कृं श्री स्वमाय (निवैन ये तु (ॐ न।
नैवेद्यं देव देवकृष्णं नाथानु (तरुलथ नाउतं (क वुनैन (कस्कु) न भारव स्वारो पानीयअवाउनाय।
ॐ नान्त्वरुद्रकं (रु सप्त स्नानं नं (नकु जातां (कुननाव सनं (नान पलं कुणफलं कुताकेउन
(सिसितं तां नुलं २१ वरे वेरा स्वीकु रुव नमोस्तुते।——

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ऽ॥ लिता॰ चुल॰ उत्तर नगा स म्रानाः॰ खाञ्च नगा कानतालीनाऊ ने॰ नरुतो ३॰ तैलोक्य न्ना न कारानेउ।
मन न्नाकुना॰ खुकै मं॰ तैन नैखनौ३ कै॥ मं॰ तङन्च॰ नरुतो ३॰ मं॰ जक नमोस्तुते उऽ॰ नलीनांक नंन्मा
नानन मखुतपं॰ वुकुपासा यतेनमः॥ रुनावर नमखुतपं॰ अं॰ विकोपत येनमः उऽ न (मं॰ तङन्च॰ रा॰ क
रुनरा॰ तो मारारे वरति नमस्कारान॰ यत्कुतं॰ मं॰ लतो सीनं॰ स्वार नैखविनाम रुनरसिता॰ न्याजिकानिरेतिध्र
कः॰ तोकुणितां॰ कुनजम स्नानतिप-पतस्मै नमायतेनमः॥ पापभस्मानतिन्ति तणतभ्राद सितायासीनं॰ त
श सीरसुमसौतुवासा नरु खावदोत्तवायत्कृतं॰ तं॰ नकृतं॰ यर कृतं॰ कृविव ना॰ य स्वभवतेनानेनरा॰ कना
तं॰ सावतवनामासननमायोक्र नितन॥ खावेतकृः सावेतक्रिः सावेत क्रि ति वेतवे स्वदातुयाहा ददाचनितं॰ जुतयोः पापारिव ररातु यासमातु याहनरामस॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रां कृतस्य च नित्यं कृष्णस्य । वन्दे रोहिणीतनयं कीर्तनं नीलकण्ठं तव पादसेवनं संतानं [illegible]
जन्मनां विनाशनं जीवनं । अनाथस्य सर्वेश्वरस्य कृतौ हा हा कोटयो ब्रह्माण्डनायक गणनायक कोटयः स्मरः
१०२ लयनाना हरिः वैतिको । तनीवृ इति प्रार्थना । अघा अर्च्यं तः । आपसीनकुरा ॥ आदिवल्लरी निलय लक्ष्मीः ॥
अर्च्य सतैः सरां सेनमर्च्य । असां गहनतो निमः सो अवितुजाय सो अा । यानितते कृष्णे इदं अर्घ्यं
नदास्या निसो मोच । कृत्तु मो जाव । सोमे खनायाव याद् इदमर्घ्यं । आदि सो कृष्णो वैष्णव सोम
वानेस्वरा विनः निरूप्य । अर्घ्यं मयादत्तं पावित्र्यार्थं रां कनास्यो ते खनाया । अर्घ्यं सो मः स्यो मक लानम
कहाकृष्ण कृष्णतापते इदम । अर्घ्यं प्रदास्यामि स्यो मो ॥ सो नाम अर्घ्यं गौरीवल्लभ तरेवे रासपीत्रा सहितो खनावर्ण
पापविरामाय धर्मस्यो मानरा सुमोलिनो सोमो इदम् अर्घ्यं ॐ स दामिश्रना रासराख्यो दं पार्वतीपते इदम् अर्घ्यं प्रदास्यामि

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सो श्रो यप ॥ श्रो ओ ज च्यं ॥ नमस्ते देव देवे शान मस्ते तयरु निता ॐ । जि के वन्दे गौ नीलरुताता च्यं ॥ शि वंवि यो श्च विः

कायार द्वप्त च्यं । नमस्ते पार्व ती का । ताते लो कव्वन वारु नलि य । न कम दादे वर रुताता च्यं ॥ न मो रखु ते रक्षा । निकान दीस

ऋ तरि वा यज च्यं ॥ — मचा कृता नि पापा जि प्र क्र जि ओपते सोमका ननतमि दुःअप यमा नि सता

रिवा रत्त च्यं सम प ता । रः वा ने कि कारि घता जि ननु नो मके खना । न क्रं । तो भता जि देवे रा अप

या मि सं दा सि वो न कृ सर्वे तता । जनः जन्मा । अलिः यसि वाया प्र ए प्रत यो सुरक्षा या नवतल काया

रुल पाता ये देवा या सू । आया प्र रुना । पत ये प्रेतु पा आया पावती पतो सिवो या को मके रा या स्था ता वे पिने

कि ने खि जना । तका या ना ग यसो प वी त्रिनै नील कं । काया वि लो रना या वृ रो स ना या नील श्री का या त दा या त न ना सि

नेमसा दो दे वा यजी मतो त्रया या रा कीआ रा सि औ जनै या क्षा यत्र श्रनां स्वा नां या त्री सा या त अ आ ति ता ॥ ... [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सालीविश्वसहाय कृं॰ गोच्चते नसम श्वितं॰ओनेन कालिकेदीपं॰ नरविचानमोसुतोअस्मानवां॰तरामनं॰नेत्मं॰सा

नपरं॰रुतनात्तरापं॰ब्रह्म स्वामिश्रीतोतवरु म्रापतोसर्वज्ञानिपरं॰रीपं॰सर्वसौरम्यस्सुपरं॰तित्ररीपं॰प्रदास्वामिरां॰

१०४ तिरस्वस्मराम्रमाइ तिरीपरानं॰कैलासवासीमौनीसात्तणवानुत्तबेलरु वावनावनात्मकोलिं॰नं॰नुनी

उरसातुवां॰क्रितं॰रति लिं॰मरानं॰यस्मस्मतेनिनुमास्मपत्तिं॰॥ इति

कथा स्कं॰रुनातोकातीक सोम्रवानावनविजः॥५—५

सीपउऽ॰सनकम्रा नाउदावा॥सोमवानसामराक्षां॰बुद्धिदोनं॰नकिस्वनास्यस्मसवा॥आलेनासवर्पा

वरुयोत्तवेतुकिं॰तत कार्यकापुआरिवैकेनप्रसीरतिक्रिं॰रुं॰तान॰कि॰पञ्लं॰तस्मबुद्धिमें॰नमविप्ररु॰उ

नं॰उकेस्वनः॥रु म्रयासद्धितोरेवःसोमरत्ता॥त्तसीयतेतिकिनें॰सोम्रदानं॰वसरुरं॰तानप्रदासकं॰श्यतनिनेशेव

रुआं॰तकोहिमरुपञ्लं॰लतेतु।योत्तकृत्वाकृत्तेवुर्तेमदारेवप्रस्मीरतिा॥॥आतनेवनलैःकार्यं॰रं॰तथावनरुवकां॰।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ठाकानाभिनेपरलोके स्थोमवान्व्र तं पानं [illegible] रसारिवस्मनुरुन पं कृतमेतम्म याथुं नात्मनेनपीयतानेवोममणोतिपतिः [illegible]

मवानव्रतेनाथांणोनीवतिनेघाकयअःमीयतां तंगवानीराः सर्वकामाद्यौस्त्रियचे [illegible] क्षौं नमः रावोचे तमसाोनेग मापरोत्सोहवानवतेना

१०४. स्पमंमसौस्थां वच कुंद्ध। ०७८पतमक्षास्समं लं तुव्रतसोमं स्मावयेतु मयाख्यानं तु कतमं मरापुमां समानतेतु७०१

तेषां ७ गायं प लिं वकु० नराकयं कोपिवहिमनैः सनत्कुमारः॥ नराख्यानकुलं स्य अनकु स्वतुपं वरमेवतो ७०५

मराप्रुआग्रकानं वनेंर। स्वनणोगेत आनं रीखवः अशोतनस्वरूप्यं वाराट

तानां स्वपनं मराख्यानं. वकीर्तितं तीर्थे केनतापेनसाहस्यं लसमेववा७६ अशो तनं तुवा७०५ वं तान

स्वानं तउ कतोपं वामता नांश्रोगां स्पाअलानां स्पाजनं तवेतु७८५ साहस्रको हिस्यं स्था स्यौवार्ता नने ७ पादिमरा

नोतिराचेप्रुआं मराप्रुआग्रकीर्तिता ७७ पअनखोः पलिवें साशाक्षवैदेवाः सवासवाः तैलो कौ स्वर्चमितं लं गा७ नमेनगोरवना७ ०

नागायतां पनं सौ स्पां नाऔ स्वेतारचो नपागसो मवाने तुमः का स्विमराख्यानं सहानवेतु॥ ७८८॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्व भुत्र मेसु लां च्छ्रीं तक्षाको हि क्रीणन्निवां अरुणाम् वयोत क्षास्य करे वक नों ति वा वा उरुं उस्सा था अने तञ्जे रुमां विरापं
ननाया नौ स्वलो ये नो द्यु मेखं दुलैः सोमवासने वन्धव गुणां साने जा खेत स्य गुणां ततो ध्यकं पोगुआ तं दुलादिना पति
स्यं स्वाम यावती ॥ ८० ॥ तावत्काल व सो ज्ञातोः कैतास्ये यिवे स्यं नि धौ । वाले ना नावर्थै न नौ: पातः पु नी व लेन
पिाकलस्य: पु मयतिवि खेरा अरा पुआ पलिं लते ताशु कातावे रव गं याकौ : पु नामं रां क न स्य तपुव
अरुतो गम्भ्रः नृगां रा वाखाद्य मकान ताणं वक्षु पुआं तु यः कया तामहस्सुलम येः रूते: मनावस्त्रैः स्य पुण्
विरवैरां मरा ना अथ ग्राय कं तहस्र तं तु सं स्पा या तावृक्षि वगु ने वृ स्ये तु ॥ ८४ ॥ ततः सातिं समारा धना आतवात
था निकं: उच्चाज्ञे न तधारां तोः पुम नं सा वेद शिरं उज्ञपपा यस्येतसावे स्यौ व सोमवाने तं तु क्रतः ऽङ्ग ना ह्य कता वो
पानूप्र दार स्थ तिमञ्जे खनः वेदपरस्य ज्ञतं ग्रजलं उ था ना अरा पुआ स्तुस व द्राह्यातिं साहां स्पय पाय पान ला नां ओ ऽ रो ब ना । ७८ । अतोप
यस रस्था तानन्म्नं तेनात स्यरा यः । कृष्ण क्षाश्रयां स्यो मवाने अरा पुआ पलिं तते वाष्टे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यः कस्वनानिओ पिसऋ स कृत रैः रः) तेन सोमवानेन नः सक्षत कृ भसा ७ पप ठवाङ्ग चायु पु पञ्चौर — ओकाराव्वान० गो प्तेन
स्तुन० धित० रस्तुन० त भीनै कै लैव जिसका वां धि विनारान० १७८ — तरी प० तुयोर पावु स्वो लेवु राव मं० ज नो सवावि
ता० विलितिविसान — आ क्षो तनस्सं० राचः ५८० परार्क ती ज नाता० कर्यो रु० नो स्यैव विरोजलः अमास्यउं०रु
२०८ निर्ऋक्षः प न० स्तौ स्थामवा — नु स्यातु ५४५ सोमवानेतु यो थेनं० लिं० नं० स्थापनस्याथनं० — योर रातिसनहणं० वस्तुरी ला०
वपयाखिनी० ५४५ स्वहो — थेनु नो आतिया वृद्धः० स्थाजितुतलो पाववकुवस्य कसा — तिजुवलोके अर्थीयते ५४५ पाव नु
आविथानो नञ्ज आ० कस्रानि — वेदये वृलैवेय पायस पिसाअ पुप० व भ्यतुस्तत यस्य ननि हं तु तो ये० सघु मा० स्थ तु व कें येवुप ५४
ताञ्चुत० व स कायुन० रव — ता० वा अनाचिके० व्याप्य० उ आविवर्थानिवेतो प्रा सितां० न भारक्षान० कं राति भ्या सभावि तथ्य
तवः त्रोवेदनो ऊ ३ः रा० का नः — पार्वतीप्रियः ३ श्रो मये स्वनः रा० तुः स्याराथा नी स्वस्य ३ यरो वः ७८५ प पतिनामो वर्षे विप्र ४ उ म न० र
अमावनेतां अक्षि० वेतन्वतञ्जुष्याति वर्ष ल म उ ल तो नवि ५४ सोमवाने विरो जेता ज्योवे लि०नं० स्य मवे यो ता प का त क्व त० व

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्येत्थं सो ऽमदि तेन न ऽ ऽ अक्षम् ० वन्तु रेण ० सो ऽन कं ० सम्यक् नेतु ऽ मस्तानि नात्य अदेव सोऽभवा नकृतं ० कृतो ऽ

नुतातिनिकं ० तत्त्वर्कं ० सत्य तां ० अवतां ० वन्यं ० वेणापाने न सं ० कतया तौ नैन कं ० सदान नेतु ऽभं ० पक्वान्नारख ऽ तापति

यरमः ज्ञानारमेवत्त नेभिर्वानत्वकृतिऽ पापदाजुतया रावेस्यं ० तुसि कानकान काः ऽ पस्योदानानं ० दयायुतयं

नीतिरं ० तुन्निराशकेति स्थाक्रेज्ञातियानं ० तुरावेसं ० तुसि रं ० रव ऽ ब्रह्मचर्यसुयः रारवीतवेदत

विवेकं नं ० पनरखोऽव तं ० कज्ञापनास्वेगतारखना ऽ ऽ नो रालमनुपा पत्रावेसा ऽ न्यसाकृत्यातु

तम्रं ऽतं ० रावेस्ये वस्रोवाति ० यावेमस्यके ऽ ऽ स्योऽवानेतुपनय ताः सयनात्क्योतवं ० न नऽ लिम्

सवेदज्ञा पुचे नेनवत्र नं ० ऽनो ऽ ऽ स्त्रुचेलो कं ० सज्ञासाज्ञ कुसुमी तिहते

विनां क्रुनानं सं ० ऽ कं ० कं ० रनं ० कं ०

यवनिणनं ० वृक्षेतुतिलक्ष्यानौन रोजे स्वपनाता ० तुमरा पं ० लं ० ऽ वं ० रवराक्षा कुज्ञा व्रतं ० ऽ लिं गं ० सर्वेदिज्ञा ऽ ऽ

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

त क्रुावाउनचेकनणगीरवनणस्यवन्किा मानवाझोतिसणक्रेगीरवनंपनंपभभ्य स्यौता पदनर्थनंन्हाा० स्गीाा न्नैषस्र रपष

२०।रच स्यौस्मषर०ज्ञाप० सवनोनविनाराननगलंयंकाम यतेतेजा० तंत नाझोत्मसंरा पवाररं न ल स्पंपन

०२ मं०पु०ाापपापशनारानणि सोमवाानत्रतभिरंरावस्या ज्ञ्रसोथनणइतिलै०ण्य ज्ञनाोसनक्रमानन्ाके

रवनस्यं०वारे स्योमवनव तं०स्य०पुाप०प ०ँ०ँ०ँ००ारसीस्पाजरपना।रावरे तयोनलम ०ँ०ँ०ँ०ँ०ा ०ँा

वैकुंठर सीस्यनकुमानरमारावाप स्वामिनूवतभिरंप्रोकु०वताऽनामतसं०वतंनानी वाऽनुजोवाप्व उमयोनक्र

तुररीव सं०युतः॥ापकातिकैमा गेसोजैना जक्रपरोवतुरीातत्रोपवारसःकतकाःरावना

ता तौतछौनवाज्ञाकिं०तत कायिं०काउआरावः केनप्रस्यारतुा।कि०ज्ञाप०कं०परलं०तस्यावुद्धौनं०रकेरवनारपनं०रकेरवनोवा

वा॥ग्रातःकालेसम्ञ्राप०रं०तथावनउवकिंण(ज)यवस्नयनोतुलाक्रोथलोतविवर्जितः॥८॥ततःप्ररा०नदतुयःरमानेतोवर्त

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मा पातिं गतिभुकुधानपाः का दिगिरिवश्चं तेपाश्चं तितं भुपश्चुलसं तेतारे वेरां याके त अमाश्चके रवा उश्रचसेततुरिपाः
निरागानो श्चके रवनपरिगृह्य लावने प्रततोरिगाम्निवाग्नि श्चं कमुपृच्यारिवाश्वं रवं कनायक्षोधाद्गिनेरिक्षवालितेनद्

गाधागपृ का स्यपरित्वश्चतः
सपुर्वं वततोनुश्चं स्मनर्व
साजुसपारिवशीतपर्धं
कनिजस्तसंके स्पयप
निमलायाशुनासवेउसिता

सं धपां मनोवाक्कायस्मतिः सिसं बकेनश्चं तेताश्चाणमोक्पविधानताश्चपवजहं णं नका
धेतुप पकुवीकृत्यापिरिकालौ सं कीर्तिरितति
दैकं कवतुरसीवतां नवे नकतन्तोकृष्णानाष्मावा
ततः कनराद्यनं संशाद्यनं कलाश्चाधदानपाताकु
दानेदाजं जैमिस्थकालाणपविश्चसाने जं नासौ

यौ श्चमासमहापापकार्य
यनाजिनोरपोपनातश्चं
श्चं कर्यादुपुवदाने दानतिसौ

सनस्वतौ मासालस्यनेवासुपुजा सौलतुदर्दीपदेवतात्पो शस्तपालपुश्चः सनवतो श्चसौधपौतपुश्चं कतिहोव॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

आथान राक्षोनकः । स्वं सताया ।
कुलघ्नकृतौ । नं नमस्तौ ।
कुमोयाना । तं तमस्तौ ।
२०९ मोनं ताया । मं माया ।
वनास स्वा । यैनमः ।
संक्षद्वीपितौना । विवि
स्वनार्वर्तीया । याचै
नन्नश्राकानाया । कं कं नायै ।
कलावस्ताया । वं वमायै ।
स्वनार्मों ह्राया । नं नानाया ।
नह्नासिं दासमाया । पलेत्तौ ।

कनिकायै । अं स्वर्भमों ड लाया । उं सोमसं ड लाया । मं वह्निमं ड लाया ।
वामायै । अवेक्षायै । रेवत्यायै । नीयै । कान्तौ ।
कलविकरणायै । बलविकरणायै । बलायै ।

बलप्रमथिन्यै । सर्वभूतदमन्यै । मनोन्मन्यै ।
अघोराया । ततपुरुषाय । ईशानाय ।
उं नमोत्तव वतेसकल ततत्मकरा कृत्तास्य

मनस्ताय सोमनकीकृत्म नेनमः ।
पीतकुमाः स्तनापयोमः ।
अथानवराकुंकुमाः कान्तौ ।
तीव्रायै । ज्वालिन्यै ।
नन्दायै नमः ।
तोगदायै नमः ।
उग्रायै । सत्यै ।
कामरूपिण्यै ।
तेजोवत्यै । विश्वनारायण्यै ।
भ्रतायै । मायायै ।

नमायै । विरूपायै ।
सर्वेभ्यो नमः ।
सोमसंवत्सरायै वायै ।
वेवसाक्रकुमाः स्वहायै ।
[illegible]
[illegible]
नानरणा ।
आवाहनं ः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

१०८

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ तत्रायनमः
शिवाय
शंकराय
पार्वतीपतये
उग्राय
पशुपतये
महेश्वराय
शंभवे
शशिमौलये
पिनाकहस्ताय
१०

स्वंस्वकार्तत्त्वापहाय
रमायास्सर्वज्ञाय
त्र्यंबकाय
तत्वाय
तत्वाराताय
सर्वाय
शशिशेखराय
तर्नराय
श्रीखनाय १०५
सकारिशाय नीलकंठाय
तीक्ष्णाय तत्पराय नित्याय

नीलग्रीवाय
पशूनांपतये
तकायदेवाय
शर्वायदेवाय
श्रीरामनाथदे
पशुपतेर्देवाय ५०
रुद्राय देवाय
उग्राय देवाय
भीमाय देवाय
महते देवाय
रूपकनाय

श्रीरामनाथ
वामदेवाय
अघोराय
तत्पुरुषाय
पशुपाय
ईशानाय ४०
नीलकण्ठनाय
शर्वविद्याय
भूतनाथाय
विश्वेश्वराय
विश्वरूपाय
सर्वात्मिकाय

राजराजाय
नुतेशाय
करुणाकराय
शंकराय ४०
विश्वेश्वराय
त्र्यंबकाय
त्रिपुरान्तकाय
त्रिकाग्निकालाय
कालाग्निरुद्राय
कालकंठाय
सर्वशिवाय

सर्वेश्वराय
श्रीमहादेवाय
नंदीश्वराय ९०
नामना य
सदो ओ
तत्पुन
नीलतद्राय
शंतवे

गिरीशाय
अनघकपर्दे
अभिरंजिताय
भुवनाधीश्वराय
पिनाकीशाय
गिरीशपतये ९०
पशुपतये
स्थाणवे
तत्वाय
हिरण्यबाहवे

हिरण्यगर्भाय
हिरण्यपतये
अंबिकापतये
हिरण्यरूपाय
जातिकंठाय
कपर्दिने ७०
शक्तिधराय
गिरीशाय
शिपिविष्टाय
२७मतये

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

१०० दक्षाय। कृतिकासखो। ता॰ त्रवे।
अग्रगण्याय। लितोनाय। तव नाथाख
पुण्यव्रतो। दरान्तुनाय। नाय॥
सर्वज्ञतराय। सर्वतिनपातु
ईशानाय। भिरोयत
आनन्दकाय। नमितथीवाय
महाय। १००
महेश। सरदस्वासौ
ख्यातवे। सदसवादवे। सचो मातया
वंश्वकाय। सर्वज्ञुताय। सीसा॰ वर१
वृत॰ कनाय। सर्वैसवनाय। नाचिकासर्८

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

विस्य॰ब्रह्मदादेवतास्त्रि॰ कूपत्याकनाविरवे॰नाघमन्नपाप च्यं॰नमोस्तु देवराज॰ नाच्यं पतत्गुणाचेतरा॰ प्रत्ययर्थ
पव॰कामोपादान स्यात ततः कुशा॰ समानवेत्या कुर्वीक्षे नमकाचेपापके रवे॰ति चे॰वक नि नमस्कार॰ ततः मूल स्थान॰व॰वत मादेत
स्यादत वानु समस्ता न्त॰ पुरु नाम पापमोचकः तथा वृतेन सेतुः प्यादिमोरा॰ चपचायावादित्य परस्वाय देवरा॰ नमस्कृ
तनक्षिते॰ त्रिस्वैः प्रत्यक्षि पाप॰ततः कुर्याद्यवर्तिक त्रिस्थानतः अशोतत्तरा॰त कृतापवापना॰ स्वपुनः पुनः स्पर्श
स्मृतोतिसमर्पति॰॥ ब्राह्मणापायस्य घोकुप्फलता॰कुलत्ति ता॰२ तथा — पदे त्रिवेक॰ कंबतुरी
वृत॰ स॰ कुर्नि॰॥ — ८ . पस्रीप अधप्तत कुशा॰ कनिर्वै परा॰ कन्या यात्रि पत॰ विश्वेरवनाया अर्कपते॰
वितुपासायस्नुगप्तत॰। स्वपुको हिरवना बाजुर्पित॰ स्वपुको हिताना मनो लक्षीपालितो रनायस्वामीपत॰
काना अपिवत्का॰तीपत॰ विरा नायमावीपातु स्नुपायाआकीपाससाते असोत॰ निना नपा ससारि को यैराप्ता पाता सेअर्पणा आमब
~~पन्नु अपा सिनायक नवी नपु पुरसनकोसनायाकोनो पान जलकु पितोभर्कं~~ नपाइलि॰ नायन॰ पकापाम कलि ने पु॰नाग पाप नक्कनाप
न॰ प्राप्तिपुन्नलिनाकिने युधिका पुर को स्ना यैक स नपु॰ परु पतरो। अतिकर्नका पुन॰ को हिरवना च कुकुन पास्या वावो जलदेवि प्याति सेपु को निवरुप

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रीगारोरा यत्र नआरो गारो सगुणं कुलाकुमुच्यस्यैकांतस्सा पयमन लिखेन गगामानतयो मानगुरुआध आत्मरूपं लिख

हृदयाय कलामस्तुतकुकानाय ५ — आलानित्यकअतिारां तथा वनवुर्वकि। कलानालयं नता गुमानसालिंग रख वाणपपारोनसामामस

१११ प्राणानायनमसं कलघ्न — ॥गुरोविनितयवं गाविरोजायविस्त्रिं शाखां रा ततिथौ ममनेत — मम्हपसस्याधिं आरु ज्ञानकुरा

गुणाननेकगुणलावाहयदं — सोगुणामसे खनमीत्ययं आग्निशोभाति नोलवाकपे — यन्त्राकस्तुसारत्सेथकिनावाह्य

शिवनाली हृदि॰ नं॰ गादिगुणपतीपादि — वासपगलावाह्यदं सोगुनामस्वन — पसाग — लिङ्गादिदं रुकलोके अक्रैस्वयं

वृता॥ जिवनदं॰ इदं — कालमार्दफलासंनत्यं प्रतिवर्त्मितं वारक॰ २७ — नागोक्त प्रकानेगारिाशिवनालीव

ता॰ नवेन पधयाम द्वितीं — यन्याम ततीयथामचतुर्थीयोम गुमामननाग॰ वमल्पे — प्रणान॰ रक लगोकु प्रकानेगाख्यानां

आवाक्त आदिजोरसेपवान — गुक्रा॰ कनिष्ठारातसं॰ कलन्यायावृशवततिरा॰ तौ मा पेक — शोवतुरसी॥ तावतरुयाप्रतोक्ता। लि

नस्वपामिसाके रवना। शिवनालीवत॰ रेवकनिष्ठेतवसं॰ निथौ। निर्विघ्नं सिध्यिराख्यां॰ तुग्रसं॰ नोतवरां॰ कना। एवं॰ रु॰ कलम॰ लातपाग्जिदेरां॰ गु

अयेतताः गुआतिजेकं॰ कलाध्यमक नासगनः सननपनासनवृथानेनगुका॰ कस्यसिनादितः कपर्दिवं॰ अधौलिंवरुलसहूपगथानिता

लिङ्गाकपातिदेवेराध्याये हृते खरवं॰ सित॥ — ॥ कता॰॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अघफलस्यार्वनिःरा — स्र्वनि कलाा पुत तस्ते तिथ्यः हकु पालाा अघवान पालकु माः कल जोप

इन्दु वै दानेशानस्विचौ
तनाख्य शुतनाख्य
इस्तिताक्रानेशोनस्त्रि
वलाचाप्रवलाप्त
— पुखिवाने।
अयाचालिकुयाख्य
कुतनशनेद्वानस्विचौ
व ग्राचाप्रव ग्राख्य
वतवनिरे वतत्यो र
वानपालकु मोः स्य

अघफीतिकपु मा॥
गः गुतणोःमा

गः जताप्रतचे।
सः सेतपालाया।

स्वः स्वनस्वतौ।
उःकुणचौ।
अथानराक्षौ।
कुलभवकतौ।
महूख्याचा
कुः अचि।
ओनःताया।
पद्मिवौ।
अमतसङ्गाया
नन्दापाया।
ननेमःदाया

कत्नकसाया।
खेतकुःताख्य।
स्वितकाशनातणां।
गअया।
सोनाया।
वैनाख्याख्य।
ऐरवस्याख्य।
अथअचि।
असानाया।
अवैनासा।
अनेसख्यया।

अः अल्काख्य।
नःनकुसो।
तःतअसो।
अः साच्चाये।
विःविद्याये।
अः नःन
कुःग धोन
स्वःविःनानाये।
नकुतिकुताप।
विकुतिके सनाया।
निर्विनयकनि
काचेन

वामाचा।
अवेशाया।
नौकै।
फालौ।
कलविकणिप
वनविकणिसि।
वलाया।

वलयमधिनौ। सनुतिनमाप्त
मनोज्ञानास्यन मः
अः अकमःउलाचरराकलाप्साने।
अः वद्धिः अःउलासशाराकला।
उः सोमअःउलवोडराकला।
अः मात्मने।
उः पनमात्मने।
ओः अः तनात्मने।
उः ह्रीं सानात्मने।
उः निओतनवते
सम्राप्य अनन्ताय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

॥जितवन्तो॥ नंयं प्रमसतां खेतवातां स्वस्निथ बोक्षिकें संनिता कृ॥ स्वमक्या॥ अनेवेशनबद्धतां पनोक्ति नोमसतांथवलांपवमस
सं कृलगचकाकुसा पात्रं मध्या रतं नकापात्रं सकारिवा॥ असताकृ॥ हा लतोमल्लि को आतशाथ वीकस्थ्या विशकनवीनें: क कृ कि
११२ लें तु नसीसात पलकें:॥ अ कविश्व रं तु नकु स्थ शारीविरां कनातत पता विता नमनकापावनत्तोसनातेव?
जव्वें सं तैतें तैस मर्वसे तु॥ ज्वं॥ अथां न कुआं क तिज्जोप — प — प — प — प — वै पथक

सं कनाचा।	वं शार्श सौ	विखमुतचेै।	स्कं थोकृ।	परपतचो।	कतिवे।	सयनं कृ।	कनं नधाना।
शिवाचा।	लिनेन	वंश अ रक्षो।	अं विकाचे।	विकुतौ।	मक्षोवाय	लिजनास्त	वृजां तकापाकं नें।
शिवें: कु॥	सर्वसिं नलाया	अ सं जा।	कमलाचे।	स्कुचनं।	शिवाचा।	कोचन	विकुनासायानविकोचा
सन्नीतितै।	सौलिनं	नीलग्रीवाया	जाकुकृ।	जातपशायिने।	कलिन	नतौ।	कोज समनं कुआं।
अलकाया	लितोलाचा।	कंठग्रीवाया।	विनाकिने।	कोमलाचा।	नंजपतासा।	गुस्मन	कमलनकुनाचा।
	अविकाया॥	कंकण	अशकाल्वो।	उ ररनं।	रंकोलातिने	स्मनरुनाचा।	उज्ञानानानिमौं कु।
नताहं कु।	मेलाति।	दनायावनरापु	रुसानु।	सं तनेपा	कालाचा।	कोत्यातिने।	मांरेस्पना सा सा के
				पवटिन	तवाचा।	उ उं कु	

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible] उनयामि।
रां कनायाक्रमाले
यानौजप
सर्वा मनोस्पर्वस्वरूपाय
[illegible] उकस्यामिव
नवावामि उमां कप
दीसनानायाउर्ध्वक्राय
ततपुनायया।
उवतिक्राया। अनोनायः
रक्षितावक्राया।

वामनाया।
उतत्वक्राया।
सखो क्रातया।
पक्षिमवक्राया।
अखेज दीसा
नायान

हउनेतनुरुया।
अलोनया।
हरचो।
वामरेनाया।
उस्याया।
सखोक्रातायया।
पाराया।
दीसानाया।
सां तिराया।
ततुरुजाया।
सां तौ।
अलोनाया।

विभायो।
वासरेवाया।
प्रातिज्ञाया।
सखोक्रातया।
निवृतयो।
रविवच्यमावर्णि।
चरुयापस्वपर्ण
तं उतीयावर्णि
अनं तायसुस्माय
सोवोतमाये।
पकनेताया।
परुरुपाय।

तिरुतयो।
सौकां काया
रतितलीयाव
उमाया तानि
वं रखनाय
नं तिनो।
मचाक
लाप
मतोरखनाया।
वजताया।
तं निहितो।

[illegible] दति
वत [illegible] वितानि
रं नाति अशौना
मतिः वृद्धाता।
विजवे।
रुनाया।
अनं ताया।
रतिवं रमावर्णि
वक्रायो।
राकृयो।
[illegible]

[illegible] काया।
वारनाया।
वकायामं कुरमाय
नदयालिरुनाय
पमायाववक्राय
कज्ञावारतिव
शावतारुआगन
अघपवरुकान
रां कनाया।
निलपवर्ण

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

११४

विरव खनाया
शर्कपित०।
त्रिपुरान्तकाया
मंनेणपतन०
सप्तकोटिखनाया
उकपित०।
राक्षकोटिगणमने।
तुलसीपतन०
विलोचनाया
रामीपत०।
तानकेखनाया
कनवीनपत०।

ॐ कानाया
विज्ञ्ञका तीर्थं।
विरूपलाक्षाय
हासीपत०।
सुरसानुजाय।
कामीप।
अरुणतेजये।
तं गिमाक ॥
विरूपाक्षाय
बदरीपत०।
लंन०नकाया
अपामार्गवि।

कालाग्निरुद्राय।
उनुनपत०।
सीतानकसरादि
वायन
सप्तरस
कालिसन
अघ्घजव्वजु।
क्षोमकेराया
कनवीनजव्व०।
तानकेखनाया
अञ्जलिजव्व०।
नरलनुलितो।
अकजव्व०।

जटालिंगाय।
व०पकाज।
ॐ कारखनाया
बकुलज।
विरालसाया
केतकीज।
र०डीखनाया
कुमज।
नीलग्रीवाय।
तैलज।
कपालिने।
ज०कामज।

तस्मानगराय।
मायुरीज।
तस्मोचुलिते
विश्वसाधन
ओमाज।
निर्मलाया।
न०श्रावर्तिजा।
पिनाकिने।
वृषिकाज।
कोमायर्थौ।
कमलज।
वरुपतये।
नतिकर्निकाज।

कोटेखनाया
कृष्णज।
नागयसोपवी
तिनो
ककाज।
सीउमा
अदेस
नायन।
सर्वभूतात्मा।
अघ्घजव्वा०अ
लिंकनजव्व०
अटाकलापतुजाय
च्य

पार्वतीरमणनुमाया
गोनीराया
लिङ्गान्तकाया
नीलक०ठाया
वीनतराया
वरुपतये।
विरूपखनाया
तनायि।
तीमाया
पनमात्मने।
उराया।
रारिमौलिने।

गो।
रुद्रसहुनयाति
गिरीराया
रा०तवेरा०कनाय
मलु०कयाघं।
नआयारुनिनै
वीनाया
नकमातनगाय।
चापधारिणे।
तवायरेवायदूतलसो
नामति:षयुजन०
कनि०स

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

अथ शिवाष्टोत्तर... [illegible]
ॐ शिवाय नमः।
शंभवे। शंकराय।
वृषवाहनाय।
नीलकण्ठाय।
[illegible]
पञ्चवक्त्राय।
त्रिलोचनाय।
[illegible] १०
महानन्दिने।
महाकालाय।
नागाभरणाय।

महामायायां
अजाय।
सौम्याय
यज्ञ
सर्वज्ञाय
तत्त्वदेह
[illegible]याय
पार्वतीरमणाय।
[illegible]य १०

[illegible]य।
नानारूपाय
[illegible]
[illegible]काय।
स्थाणवे।
[illegible]
[illegible]काय
अनन्ताय।
सकलानन्ताय।
[illegible]
सनातनाय।
२०

कैलासनिलयाय।
[illegible]
कामनाशनाय।
निर्गुणाय।
निष्कलाय। निर्मलाय।
निर्विकल्पाय।
निरञ्जनाय।
कृत्तिवाससाय ४०
[illegible]
पिनाकिने।
विंगलोचनाय।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
उग्राय।
पुरारये।
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विश्वात्मने।
वेदात्मने।
करुणाकर
[illegible]
त्रिगुणात्मने।
त्रिलोकेशाय।
त्रैलोक्यमूर्ते
६०
त्रिपुरान्तकाय।
[illegible]
[illegible]

[illegible]
श्मशाननिलयाय।
[illegible]
विरूपाक्षाय।
पञ्चवक्त्राय।
गणाधिपाय ७०
क्षेत्रपालाय।
लोकपालाय।
कपालिने।
[illegible]
देवदेवाय।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF
CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ गंगाधाराय। अतिस्निग्धाय। नूतनध्याय। अदपतये।
ॐ गरुडध्वजाय। अतिशीताय। ॐ नमोऽस्तु निने। सर्वपापहराय।
ॐ गरुड्रवे। नीरजाय। तस्मै व्यापिने। सीमानंतरस
ॐ गतकर्त्रे। सं॰कर्ण्णे रासिराध्या।
११७ ॐ गदाग्रजितो। मारुते। अव्देखनाय। तत्वप्रियाय। अशोतन
ॐ गणाग्रणे। दत्ताय। अस्मात्परोगिने। नागधुकाय।
ॐ नानिप्राय। अस्त्रा। तोयितने। वस्तुनांप
ओं शंखभृते। लायन। कल्याणापतवे। तयेनमः।
ओं नोयन्ताय। अंनकात्मवे। अंतर्यामिने।
ॐ वनेनाय। अदातेमाय। त्रिपाआंताय। ꣸
ॐ वसोतमाय। उतारामाय। वारवस्परायै।

नक्षत्रादेवदेवेराररता॰नं॰गुणमं॰रतं॰रा॰ततुनापरा
वक्षिस्यासोमातायवैनमः। वनस्पतये॰ तवो दिक्षो वंदना
देवायरासोदंपा नतृमानितेनमो देवाद
मादेवेरानस्थणो वतीपतेऽनुपमागीपंनरा
यनितिकायनिर्भ पतसंयतनजिनेबना
लायनमो नमः॥ नीपंप—
सपतं॰तसतोक्षादिरार्कनोपनसंयतंनवैधंप
नमां॰न॰वनदानावन्नोतवानोपुमापिसनवितं॰विस्व
रूपंनवेरयेतुगास्तानामितुवनस्थारानैवेधं॰प्रतिपल

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ताः ॥ नैवेद्यं — पतां बुलं तु मंत्रः स्त्री तोकं नेत्र विनिर्मितं । तानि वस्त्राणि नैवेद्यं गंधं त स्नानं तस्य परमतांबुलं —
आस्नानि नामपादे वस्त्रं वदे वेसं अपतो ॥ रूपा अर्लिं समंतात्वर्तितं गुरुणा गुरु आपते ॥ स्तुवर्ति दिव्यं ॥ नी नीजं नं वविरवी
त्वा स्नानदीपवद्ति तत्वा । गुरुं रामं गंलाघपि येदे वेरा पतिगुस्तता ॥ रामं ॥ नमनी नाऽनं ॥ देवदेव अस्माद्वेव नमा
निवजोपते ॥ विश्वं केतिम्ं देताम्ं तं पूर्वरका अस्यं ॥ मं तपूर्वं ॥ रारावतं स्थितं ॥ रुधं रा
राः केयं सुरोत्तनं ॥ विश्वाविश्वे खनं हरे ॥ रां कं नं श्रीमान्म रुं ॥ स्यानिकोन्नि ते तिपुरे
नितां ॥ नमस्ते देव दे : वेरा रुलस्य दूरं नथानितां ॥ वागवमीं वं रथनरारा शिवं नमो स्तु
तो ॥ नमस्तुत्यं विभुपोस नमस्ते त्र्यक्षर रूपे ॥ नमः पिनाकहस्ताय अवसारे वाय्यते नमः ॥ नमस्कारं ॥ —
देव देवन मस्ते स्तु सर्वपाप — रगोत्तमा — पस्यपूजं अकृतं पापं विनाशयतु रां मनार तिपोदनं ॥ —
शिवनंतीं वृतं देवं पसंजतं पदा त्रिनेत्रं । भृनिके नरानेदेव दत्तम स्वं ॥ शिवपत्नौ प्रमस्वं ॥ —

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रावनालो रा श्मच्यं स्वेवपावक्रपो कतुगम्नाक वचोरे नन मव स‍ः नोतवरा‍ः कनानमस्तुत‍ः जनुपारान मसे
मः विनाकरु स्थायद्यरारे वाचतेनमः॥ वतुर्धरो श्यन्येपरावत्रेती त्रत‍ः रे वसर्वकिनवप्रणारान ‍ः रङलोके स्सं रक्षेवन
तवपनः‍ः मति‍ः॥ वतुर्धवाम प्राध्वनि‍ः लि‍ः मरान मः तः॥ कैला सवारीणौ नीरा न्न मवा
लि‍ः नि‍ः तु गीकसा तुवर‍ः क्रि त‍ः यलि‍ः मरानन‍ः॥ अजानिनामयादेवद्रतमेतसु कनतेलंदवुवनारतातक‍ः
फलि‍ः कुरुरा‍ः कनर्प—प पानपासमपति‍ः॥ अस्पस्मत्मे तिसंमर्वति‍ः॥—प लतिणतन्मनम विक‍ः नाविसे
रवीसुतउवाचप॥——प रावोनुउ‍ः परुपलि‍ः नीलक‍ः कोमचेरवरः॥ रतनवनिविलिःसामाधा‍ः॥——प
लधनः‍ः तक॥नपरा‍ः तुनीरपो अरुदेवः नाश्ना सेतानानुक्रमातुके लासलिरवनेनसे नानाथातु विविलको॥ नानाथु
लिनगामकीगिश्रघाभेउपरपोत्ति त‍ः॥ तलखेत‍ः अरुदेव‍ः सुरासु नन अरुस्कंदुवपषप्रशापितमनरुरे विकोवतीलोक व‍ः विता॥ आपकेतुर
नैरानान‍ः व्रतानामुतम‍ः व्रत‍ः॥ पावलिजुकावपसिवनाली व्रत‍ः रेवभु कुमेसु नरसनसा विद्यान‍ः कातरा‍ः तोच विद्यानव विपितामा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सीकज्ञायननननकुर्वीवृत्तितेत्वाद्दिरेतततिघोममसमस्सुचापरयांश्रें॰ सकृतांसौताणप्राक्षु दे॰ ममसमस्कुत्व...यवयांण्पु

रा॰ सवकु तपोलातिर्ष्यांघं॰ आवनितिवृत्त स॰ पुणिस मात्र कीलाकाक्षघे॰ सीममविज्ञुसायुज्यप्राक्षद्दे॰ सीकेपालिकृत्ताधात्मदे॰ [illegible]

पञ्चसप्ति कुशकानेतारा॰ सवकुपात्मसु सकृत्वत॰ कृतिर्वेषकतरास्थापन॰ कृत्वा॥ कृपति कुणिपन॰ कृत्वा॥ कलतरावेन॰ रा॰ सारनि॰॥

मन्त्रता... उतशेतिमं॰ हृतं॰ थ्यालाघ वानपालपुकाः॥ पुत्रवीनोततकायास्युतत्र यारक्तनरा ॥ कौमायाराकृतोरसितावाने॥

१०७ मयायविक्रयो॥जलाया प्रवलाम्पविरिसकृत्॥ अवमायारा॰ सायाण॰णा ये॥ यमुनायौ॥ उतने॥ अं॰त्र यसवंगयाणीयै॥

सियै॥ ऋ॰ जयशौ नामतिः वानपालपुकाः समपुमघपीठपुजा॰ कृ॥ अाथानरा कृते॥ भूतप्रवृत्तै॥ कृत्तसिद्धमन॰ तायावना

कायवृत्त्मातो॥ विज्ञवे॥ सिवाय॥ थमर्यामेथमर्ता॥ कीसनायांस्नातायावेनण्णायअवेनण्णायावेखयायाजानैखयायासं॰ सलाया

न॰ नकसो॥ त॰ तमस्ये॥ अ॰ आमानो॥ मः अ॰ तनाक्षमनो॥ प॰ पनमाम्मनो॥ स्ना नाम्मनो॥ म॰ मकुकायाउ॰ उणीयो स॰ सेलपाताया॥ स॰ सनस्ततै॥

न॰ वासुपृनुणायायाज॰ जनुतयो॥ वतुः जहकतायो॥ गेत्रीत्तर॥ वाकमा दिस्पष्टहा॥ तांमो॰ लस्कौ पञ्चाप्तामायौणजिकायौनप्पिमायौनमः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्नानं स्वीकृत्य केशवः॥ स्नानाद–पवीतवस्त्रं च कौतौ स्नानुक्त क्रमादतं मयाप्रतोत्र जीलाकमताकान्त संशत्ती स्वप्रोतवसः॥ वस्त्रं–पस्तु–त
स्नानमस्तु तत्त्वं तत्क्रान्तानि शपथक उपवीतं तुव्याहतं सर्वकं सौरितावदं उपवीतं–पनतनैस स्वनितं स्वपाणिनिवि नानिटां कोरुत दानक
रकं तुनाणां प्रतिगृह्यतां आतताणां–प – पनं थमसां नसं खक्षं वंरनानुमिस्विततं ते पनार्धं मयातं प्रसंनीतत माथवाणं
११८ गुञ्जाश्ववीवैशामसताम् सर्वर्षि गलानुरापाली यां तंदुलानुरातानु सक्रामाविनाक्षितानुक्रमसतानु॥–पनानाविधानि
ज्यालिखवामिद्रतानि वा पुनार्धं वः प्रयच्छसिवतस्यानुताप कानताानुष्णुजूल– (अर्घ्यं गपुष्पं कलिजोऽ॥ गोविं
दायाणारौद्र नयेणतौर वास्रोवृत्याक्षं श्रोवामनायामाननी। कालत्तुणा यामुनं उपेन्द्राय कहि क्षनाद नीयाना
तिं वैकुंकायं वसुस्थलं वक्रितोवासुदेवानुता यादद्य नं अनन्ताय केक्षं कृष्णाय उस्याप विनिवेनासिकं
मनिरुधायने तानिनाथो सआयाकनौ नसिं काय ललाहं सर्वरक्षनायशिरोनः। सी गोपाल कृष्णायासदरीं नं धुक्षया॥
अर्घ्यावर्तानि कृ आं–पणो गोविकान नं दायागां वर्धनीं यासीवक्त्र लां कं नायाणो कुलवर्धनायाश्रितिप्र प्रसनावतानि अदुर्दितोयावर्ता
कनरी सा शर्कनादनीयाक नामननताव क्षिताजा ओशा यासुन्नत धिनदनो क्र सायाक्ष यजुना याओ तिर्थी यासारदुर्दितो यानर्णा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कृपावलंबनाय।
कानुतपाय वा।
कुबेरभिक्षाय।
धनुर्धराय।
काकदुग्धाय।
कौंवीनु ७ नरोत्तताय
कतावितं जनाय।
इति तृतीयावर्णं

वंवला॰ कुजाय।
नवनीतचोराय।
वनानंदाय।
वानुवाकनिवेद।

चंद्रोत्सवविकाय।
कारुण्यसारनाय।
इति स्वधारितानि

अघघ॰ वनमाली।
पांसकन्याय।
सुरसिनाय नाराय॰
पद्मासन राधितो॰

कौस्तुभधराय।
कस्तुरिकाय।
श्रीवत्साय।
इति चक्रावर्तानि
अथ पल्लवाणि
केशवाय।
माधवाय।
नारायणाय।
वनपालं।
विष्णवे।
विष्णुकांतीय
वैकुंठाय

आम्लिकाय।
विश्वरूपाय।
भूतपालं।
दामोदराय।
कुचेलपालन
रुक्मिकेशाय।
नंदावतंसिय
माधवाय।
अरोकाचलं
नैश्वाराय।
राधिकाय।
रुक्मिण्याय।

तुलसीपाय।
श्रीगोपालकलाय।
अनाथपालाय
अघ ७ ववकुआण
त्रिविक्रमाय।
काळीफलन
मधुसूदनाय।
बालकाय।
रुक्मीकेशाय।
वनपकं
वनमालाय।
पुष्पाय।

वातांवरस्थराय।
अरोकाय।
अवतंसाय।

बंधनकाय।
रानंदितो।
ज॰ भावर्तेनाय।
गदाधराय।
कुविकोणा

नवनंगुपालाय।
सेवंतिकाकुसुम।
स्रीनपासापल्लवकुसुम
सं॰ कणिकाय।
नाग केतकी कु।
स्रीविष्णवे रक्षस सगुणातिरा।
अघनाम कुन कनिणा
स्रीकृष्णाय। विष्णवे
अनंताय अनंतानिकताय
आदिमेयाय दशीकेशाय
पद्मनाभाय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

श्रीवत्साय । वनमालाय ।
रामानुजाय । हलायुधाय ।
गोविन्दाय । श्रीधराय ।
हृषीकेशाय । गोविन्दाय ।
वामनाय । माधवाय ।
७० त्रिविक्रमाय । अनन्ताय ।
कन्दर्पजनकाय । केशवाय ।
कृष्णाय । वासुदेवाय ।
कौस्तुभधराय । श्रीगोपालकृष्णाय ।
उपेन्द्राय । नारायणाय नमः स्वाहा ॥
पीताम्बरधराय । अकृष्णाकृष्णो [illegible]
अच्युताय । [illegible] ॥
[illegible] ।

[illegible] ला [illegible] तस्य [illegible] गो [illegible] त [illegible] विनत [illegible] तातोदेवास्सर्वलोक [illegible] तपु [illegible]
कपिलाम्भोनस्य [illegible] सं पावस्य [illegible] तिसं [illegible] लैर्स्नात्वा [illegible] नारायण [illegible] सौतानाडीपं [illegible]
गोधूम [illegible] तैलं नालिकेर [illegible] तवे [illegible] स्नात्वा [illegible] तासं [illegible]
[illegible] तितांतुलं [illegible] स्नान [illegible] स्य [illegible] तवर्तिस [illegible] स्नानप्रकारो [illegible] नाक [illegible]
तव [illegible] नाम [illegible] चीरस्य [illegible] ति: [illegible] कलि [illegible] तुला [illegible]
[illegible] ततो [illegible] कुर्यात् [illegible] तिसं [illegible] यातान्त्राथे
[illegible] स्नानं [illegible] पञ्च [illegible] दशिता [illegible] पनम [illegible] लोक [illegible] नमस्ते [illegible]

[illegible] नमस्ते [illegible] काम [illegible] नमस्ते [illegible] नमस्ते [illegible] रानमस्ते [illegible]
[illegible] सर्वता [illegible] स्नात्वा [illegible] ॥ [illegible] दनरत्न [illegible] पति [illegible] कगो
[illegible] नालिकेर [illegible] स्नात्वा [illegible] सप्त [illegible] रणः
[illegible] ॥ [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

समस्वरेवरेवेराकृणसीला॰णातितॆवखिन्सानातोवस आना॰ प्रस्वी१ अंअके सावपदृतिशाद्वे ते॰ [illegible] इताव तो दे [illegible] अनुनानि [illegible]

सीस्तुतठ वाव॥ —पस्तुतानिसर्वरापूस्रावतानिस्नकुनिवा सा॰ प्रत॰ ठोस्व [illegible] स्ववृत॰ पाप प्रापा सान॰ [illegible] वावु भीसो स्पादा [illegible] —आसतस्वव

कध्वे तन्वरेतुकातिकिमा॰ नै वरादस्या॰ सावरु घोघ्रे तोदनि॰ [illegible] तावतात्र॰ तमेव॰ स्यात् स वर्पी पैः प्रभ कादो [illegible] व॰ कोठमसाणाप॰ कुचानि सधु

स्तुरनणीपा स्तुतः पद्रु तनोः॰ कः प्रयक्का [illegible] स रव क्कारतु तनं कृतण यो नदी पौं नता के प्र न न क॰ ने र नरस्यातापस्य

गलैवोपाद्दस्तीम अतिसोसं [illegible] नात न॰ [illegible] ना कारमीनदेरोतु विघृतिक्षोभस्तातपाडमाना कृापवतृ सस सवति केवे रानण

पानणपः तस्यपनीसकाल स्मीपातवा कवपना मातापा [illegible] तस्मै निवेदित॰ स वं॰ रा॰ सात

कृसकृतवः स्युपा रेवधवस्या [illegible] भिवतोपापनुरु देके॰ रा॰ सन कृ॰ त्वाधापक्ष॰ स त्रिके॰ स्वदेशं॰ नतं॰ । प्रतन कं॰ तसकं॰

कृषोद्धिवाद्वारसा॰ कृत॰ [illegible] जिनेदिनेनु कृ वीत वाग्भसि॰ विरोजतः कालो केनैवकं कृषात्तु कां॰ कुर्यात् दिवसं [illegible]

कृातितुप॰ वसोवर्ज॰ रु चा पनजिथाने तः कलरा॰ [illegible] वचा॰ प्रतिमा॰ सन्दित॰ तद्या [illegible] स्वधा पापविधिवकालो कृकां॰ नैवद देदि ने काण

न॰ तवकृ वीतन वनीतादिस्न॰ लठैः [illegible] रस्या॰ पृतु धाय [illegible] त्रिचतुले रस्ना दितोः रवम् क्षो कुविथे। नोनप्यो मं कृर्यात् दि वसा [illegible] पचासेनमतेन

वसलिता कारवतु वसुतु आशोहरात॰ कृवाप्रत्येक॰ न स्वभावनेतु प्रतकृ [illegible] नरस्त्रीवकानवतक् तठा॰ [illegible] तु तानप

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

११८

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कीकृत्तवाक्ष्य।। रुभयात्रु तुः। चापान ॰ तद्रुगुजच्यः सर्वब्रताक्यान् तमेंब्रतं। मात्सत्यत्वतीदीनेकपुरण्यत्सभ्रं वा। व्यशत्परप्रवृत्तिं स्त्रनकाचैस्त्रत्न्यवतनत

देक कवल्ली बकीयाः॥ मरतुत्ता ॰ वत्यत ॰ विलो॰ प॰ः ॰ परप्रभ॰ तुठनयः सर्वेब्रतानाठतम ॰ वत ॥ सा॰ प्रता॰ मेस — मावत नत्र्वै पा त आगारान ॰ ।पकेनवीती

शोलग्रा नसकसानरक॰ नैवप्रय तांजेशुतः॥ पवैक॰ कब्रतमाद्यावक्त्वपु मा॰ कब्राजियानतम्र स्वैसमय कक्रवीतिता नाना ख्याल नो जनगमं॰ ह

१९९ प॰ कानच्चेथीमानुलाना कोलस्मुष्यकैः॥ वह्नस्पीतास्य॰ कं॰ नैः तोन पा॰ पति कलितना। ३ कोपक नाना व्याघ्रचोलवयेकोप

लिपनान॰ नवत्नजिप माबिनीतपीतैः रिसिता स्त्रितैः। तम्भ्यीकतनान्स्याप कुरें क आनि निक्षिपेतुपय्य

कुरानाना॰ नरमानाय दावचा॰ निचम॰ तघाकुरावय॰ तुजङ्ग्रुखजातुं रानान वाकन्येत्रुवालातेमामलय॰ रात्रे

जितातेक रनुपितनश्चा नवावादच्चेद्रेवजोऽरोतुनवान कैः॥ प्रिज्ञारत्न॰ पानत्रत्र्य्वन॰ यर्जुपत्र्रीनिकातैवेपन्नल

ता॰ कुतं॰ नीनाकुकुराम॰ जलण्पर॰ पकरजितानतस्फान॰ नानास्रोलेननेकथा। रुप॰ प्राघीपकतन त्यं॰ वनतकानन ॰ नना

तचासस॰ तुक्षचिवपुत्रेनामममनातीसुनिकं॰ ता। पेवकु का॰ विध्यान॰ नुपतैवनिरातोठेनेः॥ जप्यस्तुतमरतोत कुमस्या॰ न क्रे। क॰ नकल॰

म॰ जिनरमाताताकुः स्तुतम्जितिङ्कारिचोरक्र्मासकोवतुर्दरपा॰ नका।तिकता॰ ब्रत॰ व हगनहारसको।पत्तुः पिवहानेतुत्वा॰ तोनको

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

प्रभ्नं यका नुज्ञा तोति प्रं लतश्च कर्त्तर्त्विपर्भक ऋजुला युगोक्तं मघा विकान्यस्त्व नलि मोक्त त्रप्लौताष्ट्यानत्तपतु
आनागं उम ये तप स्नाव ख्यालं कान तु णातौः। थेनुं पस्य ख्यिनीं रुगा हपतं का नागाना पयेताक लं धागमं ववस्य ताम्रा
न्ना तोतथः ष्रयप येतृ ४३५ बालाला पाक्षामये तप्या स्नायघा वितार्नु स्यान तक्षा वितरा क्यं नक धीराषा लतोतपः
प्रयपयेतृ। पवं विथवि यानेन्नु त्रह्म कातिकावृता। मत्त्यं लौ के न का रयं ति वृतं कुर्वीत येन रः पत्र अपयाक
का व्रततं तेन कविपौ रं वृतं क्रि या वृतो दापयनततु वं कनि वोनिच औ तवेतु प अन स्नातीरास्त
धनं तिति कोपुपवर्ह्रं पेतृ स्तत्वर्त्ती कस्त्वाकन्याप स्नात वभनं तवेत ४२५ नै लाक्ती स्यनस्वती
तीर्ने विक्रा सम स्त्यिपतश्च कलातवविरो बोगासञ्जे तो मायदोतवेतु गालौ कं रें रो पेततरागाता
सं नि ता। स्व वरि पे वस्त्रं जं नञु पलावपायरो तितः। नु चिर्थेधा नररं त्यं स्वनका रा त स्नाविदा नरः। वृवीतेन
न तोतिस्रं रोवला कुं न अ सितः। हं का लौ का जं लौ कै स्वक्षि तेराक्ष स्य मौ पतः। नु प ण काव्र वीनु क्या न्नोमले
क रुं पिसे नन्न के निका जनतो बुद्धि कोप्यतः क्रौं व विस्थिरः। रोवपार्व कोसं मौतका मला न न न कां तनन पिंच्या

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

११३

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रामोरनाया।
उरग।
वामनाय।
वसरथलं।
अनुरुद्धनाया।
नारुन्न।
स. बुद्धीकाय।
स. कण।
सीधराय।
अरण
दजीकेराय।

नाल्लिके।
कणवंशाय।
नेवे।
कनारिनाय।
लताहं
स्तिचेन
तचेन
स्तिरेः
कजाय।
सर्वीं नं गं
कआजेन

अथावर्तीभुक्तां।
ब्रह्मणोस
ऊनुजोत्तमाय
राजगणाय।
स्यामंगाय।
स्फ्रिकर्त्ती
वनुरितुवना
आखनोयाग
इतिप्रथमावर्तीण
अथद्वितीया।
सर्वविकान्तवेशाय।

अजितमानसदं सया
ताज्ञातीशनराय।
विस्तुतये।
गोपालाय।
सीकूजाय।
इतिद्वितीयावा।
अथतृतीयावर्ति
इं आदितृतीयावा।
अथचतुर्थावर्तीन
केरावादिक्रीरा
नमतिं चतुर्थावा।

अथपंचमावर्तीन
कजाराय
विज्ञवे।
अनन्ताय।
अपराजिताय।
अरुकोपाय।
रुपीक्रेशाय।
पद्मनाभाय।
दनयो।
इतिपंचमावर्ति।
अथषष्ठावर्तीण
नतवेअनंताय

लक्ष्मीसायाकौर्तनाय
गुरुठंवकाणनक्षः
उपेंद्रायवामनाय
रामं तायनमः
वनमालाविलुपिताय
कंठपेकेनकाय।
इतिषष्ठावर्तीं।
अथसप्तमावर्तीन
कजाया कौस्तुभाय
तारकसायनमः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

(११८)

पीताम्बराय।
अच्युताय।
शार्ङ्गिणे।
वनमालिने।
जगन्नाथाय।
अस्कृताय।
अच्युताय।
गोविन्दाय।
इति स्तव आवृत्ति
अथ अष्टनामा
आनन्ताय।

अनन्ताय।
केशवाय।
नारायणाय।
अनन्त
[illegible]
[illegible]
ताय।
वासुकिने।
श्रीगोपालक
लाय नारायण
अंश्[illegible]

अपराजित आं का
कल्पा अक्नवीनवल
नैवेद्याय।
श्वेत तिलकाय।
अनिरुद्ध इताय।
नन्दावत्सलाय।
उत्तानगाय।
कमलनया
कामुता सिंथवे।
राजेनपतं
संकर्षणाय।

कृष्ण कापतं।
अच्युताय।
मल्लिकाय।
उपेन्द्राय।
उवरलूपा।
उकारूपाय।
वकुलवतं
नारायणाय।
नारायण पकाय।
श्रीकृष्णाय।
श्रीमते पतापा

अतनुजनुआं
मानकाय।
मल्लिकाजनपं
केशवाय।
केतकीजा।
गोविन्दाय।
पारिजातजा।
पुण्डरीकाय।
नारायणकाजा।
करुणासिन्धवे।

कमलाजा।
उपेन्द्राय।
रंपकाजा।
लक्ष्मीशाय।
कमलजनपं
श्रीकृष्णाय।
समोसनजा।
गोसमर्प
रामं

अथ अष्टोत्
नवीअनुआं
कृष्णाष्टोत्
नपमक
लाय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नमस्ते नो जितामीकां तनमस्ते तकृवहाला नमस्ते गुरुनाथनतना नायाननमोस्तु तेप्रभ अं नानाचे पक्षपो पाप नना नारा
देवदेवन नं नाथ दां सर्वक्र ना नाथ नागु पायनं प्रतस्या अभिमानतीशव गौतव ॥ ३ पायनं पः ॥ पश्रीनाजयराय वेराप गुरु
नीतिकारन (आय) यनमनं० नाथसवर्तीश पतलग्नाय स्वाधीनं० प ॥ पयथ स्मृते तोलान्यता० प ॥ ६९ ॥
॥ ६९ ॥ इतष्वेन विधिः सप्ता ह्याः प ॥ ६९ ॥
पसी स्तुतः प ॥ प त्र तमम प्रवस्या अस्तु (ग) ॥ जनिरातमा स्वर्वपार्वतं ७ ॥ श्रीकृष्णनर्थं नं विज्ञप ॥
स्वर्वदां नकनं० स्त्रीता० सर्वो पदेवनाराना । गुवरंयनरं सर्वं । स्वधि० मोस तापं विज्ञेती तिकेनं० रातं ॥
वारस्तीव्रतमुतमं । भारवीक व्याख्ये स्वप्राप्ते रराजीयात्स्वतंतितदपाराः सम्यक्प्राप्तविज्ञवे गुमनं० कडा । तरनुसामकार्याराजः
तथावनगुवर्कं । स्नानं० रुनिरयाकाये० नौतवत्रस्थनास्ती । निपनं० तत कुवीतकत्वये मा० स्वं तमं० भुपवतं० केरावरस्मर्ग
गुतपौतपरुलप्रदं पकार रथां रुद्र काया स्नातस्नात्वा यथाविधि नौतवस्त्रधनोतु तार्लं० गुनाना तिनं० कितन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मनारु स्थिनो तुला हौनी विनयनुवकिं। थ्यरेना णाने रु चौ रे रो मोलचे नो पलि कि वा था तु तिः पं चव श्मा लिक चव तौ। सिता लितः

व तितिः पं च जि खिव री पं प्र क्वाल चे हु थीः क प्रा क प्रिस ने रौ ने णम ना कृत के या वा मन पु आं। ण रुपा पो मां। क ल वो कृ प उल रो ता वा म

नेनमं। ते नामेन पु आं। क ला ... च घा वि थुकूं ००५ च र सि पान म स्का नैः न व्या पि पो नन्य रा वं। च तिः सि ल सी व लैः पु म ये सकु पा

पानं। वि कु पा पिं रु जी के ... च। श्रा थ वं। हं धुं सु र नं। न म्मा ना या स्व पा रै पि ना म्मान लिय घा कृ म्मा तु। उ प रव मा स व्रतं।

का यातु का तिके रु कुप। ... रु को। उ म य हु म ये रे वृ का र रपा नि यत व ती। लि ... उ रो न मा ने न तं। उ ला। रवा

पि निक्र ये तु। सु वा सि नी ... तिनो नी तिः ना स्पं। ती तिः र वि रु ता। रुरु रं। ठे न सी नां ... तं। पि क्षं। स म्मा लि नि न ये तु।

ता ति न श्रं। वि ते व थ त क खा रु झा ... ये व व रा प ये तु ज्ञ प प वं। व र सि ना ण रा प द्र का या मा त्म वै र ... को। रवे य मे कं। त घै वा प वा र म

उभार्थं ता ता हो म ये न तः। न ए प व ं क यी त व। च व ण ं उ भा व न च घा त वे तु। म्मा रौ न ध्ये त घा वा ं ते व तो धा व नम का ते। का ति के का र सी स म

क उ पो ण प का र सी रु वे। उ ष्पा ये मं। ह पा का र वि ता ना न्यौ र तं। क तं णो म ये नो पा लि पा य व तु र श्रं। रु रो त नं। पं च वा पौ र लं। म ता।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्ववर्तोत्तिन्लुतनगंतन्मथ्येरच्छापस्येथान्दं प्र रं इरमातं न्दि यनतः। अत्रग्ना नुतनं कुं नं थानुतं नुतिम — नतं (जपं नलमाके
पेतं पं स्वनन्न स्वसाबितं। स्वन्न ह्मं रच्छापपेतलु रा यतो येन नुनयेतु (जं नय तन्मोपनि न्न सेतमालं ताम्रं पचाना स्वमतः। माजमालमन्न।
तोनर थुवपौनिरनुंधिना। नु।नीलवािष्ठ प्रज्ञां नं मौपनोपीलिनीन्तं वेग्ना पालयनं कुडां नं नमालो विधुमितं च्छुपुतेस्तारे
११९ तालिका कां तुकुभये तलरपिपनिन्कोमअं तं नकवीतिस्व न ख्योक्तानिथान ढाय पिन्न स्वनस लियोनानीवैरमो
नापयतौकिके। नुतः पालविथानेनला का आझ्यन्न पनिखिनातु। नरं पत्र स्वमं सेताअक्षोतनरतं द
नेतु। अमाक्रं रातिन्न श्रोनां आयाजु (रं नानो सोमा तेतिपनि कामप रेवामपुनं यका पिष्ट्ररता।।
नं नकुपीतस्सोतिचाय कुजजनोपितकौन। च्यविप्राय स्वविताचचपापंतिं (नओ यपायु रेवा यजा स्या निवालमा
अमात्र पनवाणनि श्नुः स्वस्तु तं न्नतः रां तं चन्नको। मानं कुर्वरिरमतिमों नां नवाक्ष्माना। यमप्रकतितारेवनुमां रवदितिं
मां नमायाचा याहि वे येतु ब्राह्मणा पाद्रोत्र पे तत्र स्वात स्मानवनाना कुवकिं चंप नं नवलं प्रतपनिप्रकारानयकातिकानि धनान
तिपेयं तं क पार्स्व ना। नमें नपनयाकं तुतेनानीन नोत (कु स्ये अ निन्नं पेका तेन) नुहमान्नोपरा कोनुतोणमनदोकयाउम्ब्ब दः

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कान तु यः स्वियं ना क्रं जलपौत सत्र बितं श्लेवो दास नं ती मं अतिस्कारं नातनं ४१ मधुनानामन गने उर्प विन बेना नना
असजलवती सा वीननयानसपम नितो रणवतु जेता सं कना सावितीप्रति मोवत्तो मलय के सम चे स्त्र म तु तिज का कं गमा य
के ण्यं किं वि र रखातुना स्त्र नानायतोतिन। पतपरं ना स्त्रना स्त्रीति वग्रं तो तिस्तु का यं वै। द निस्त्रनाना मातेतातस्यप।
प ज पं नता अलं तरे न गं नाघव यक्षप्म तारु प्य कं। न रुवान सत्ता सा यति सां ने धी ति म व दं कथना स्त
नानाव्याणा चेति तु वे वव विग्नोवस्ता मारु वास्त त दा क ज्ञाः तं रा क्वं जु नासनं स्त्रतान नंजनः
बाद राख वालस तां यतं केन्द्र रे स्त्रीति वस्व नं सुवा को पसमा विरातु स्वकतारक नं जीकं
जिल्ला पं ततयरण यैवा नक्क बीमा दिकं ना स्त्रय दक मेनतो त्तवे तु। वीम तन खेतं वे वितअके तु वि बिति पतु। तिवो
कं व नस्वं यो मा तु। फल व म अवतदात स्त्र काले रैव वसातु पं व लगमवे हा तिकि मे तु यातवैवा यात्त स यं तीनां नमा
पवंसा स विनं कालं। तिना ति न रु वहामातु। रका पान भिरती कां तं नदा सो दम प कन्द र स्वाभिज्ञ तेततणवनु द तस्मा तप

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रसना स्तुत्वा पद्मनाभाय नमः व नकं वृक्षमूलो केनसो प्र घ वसा मनाः तेषां अस्मात् [illegible] स्तावितु स्यात्
यथा अनुमान्त्रा — भय — पञ्चात्रीरस्कं रघुनाथो विंशत्या ददशी भूतक घोर पुत्राणि — स्त्री कृष्ण [illegible]

सोतनश्चा पाप [illegible] ॐ अनन्तव्रतमाहात्म्यं ९ ॥ ६९ ॥ ॥ ६९ ॥ [illegible] १४६ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९

ॐ अनन्तव्रतमाहात्म्यं | कथा श्रव्या स्वयं तन्त्रोक्तं पेतां वान तो नसा विति रघु | यो तें अपवर्गाय पलेन संसा
तु शोनकः घिसुक्तिं तत्र | तथा नीकं पत्रानां यस्य वरे ते लोकय पाप न [illegible] पक्षी | कृत्स्नाः पञ्चनक्रमेण कालोपरः
तवेवंकम लतः तस्मा | तत्रोक्तं स्नानं तर्पणं ध्यात्वा स्विधा चतेवं [illegible] | कृत्स्नं त्वया श्रुत्वा कस्मात्
व्यासः लोकस्यैव तु सर्व | स्यन्दना धिः सत्य [illegible] तं [illegible] रक्तानि कन्नान [illegible] व्यथान तः विद्या पयो वक्ता
रागं तेन रत्नां शं वृतं वने तु [illegible] कान्तं ललाव दोनं वडुव विप्रं धिसं यतन [illegible] वावनं करुणाकाराची वन चेतनः [illegible] आगच्छ
नीतिरे वद्धा [illegible] सवारः प्रतिज्ञा पापा स्नान वावृतं अं लततः [illegible] स्वरा रोक्लेन मात्रां विनय जनं [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

१२० [illegible]

[illegible]

ॐ श्रीमद् [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मासानकु
व्रतोद्याप
ना

[illegible] कृतमस्तु तेन कृतं [illegible] सर्वतीर्थानि कोटि [illegible] विधिवत् [illegible] कारयन् [illegible] व्रतं कु
[illegible] सर्वकाम [illegible] कार्तिके [illegible] तत्र [illegible] मानि [illegible]
[illegible] व्रतं [illegible] १५ कार्तिके [illegible] सर्वविश्व [illegible]
[illegible] कार्तिके [illegible] व्रतं [illegible]
[illegible] व्रतं [illegible] व्रतं [illegible]
[illegible] इति [illegible]
[illegible] व्रत [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तरस्य स्मरक्षे देवं रां कनं यन्नरेखवनं। न ज्ञकाणा स्तनं सपा मं गौनी प्रियारम रप्रमग्र अस्यं लोके स्वनायेति रामाणास्त
नीयकं ज्ञानं ज्ञं सायज्ञायेति रखामाकारावासले कं नाधायो पवीतं मं यं का पा लज्ञा गा अरुतानी स्वनायेति गुणं
१२७ आणिताम्मने गुख्यासाये तिलुपंचते को नीयाय गीवकं लोक नसायनैवे मं तां कुलं लोकरसा सितो वर सितां य नाये
तानमारकानं तकायवा पतीरिनाय तितिकृपा गुमये जिजिमापतिनिष्ठ गुअं तेना पये रस्यं जासन
कृवलीदिकायपार्वतीफां तोवेराबुना विज्ञ गुजितो मस्यं नकाणा कायानेमवार तमुमापतो
सीरु मांमरे स्वनायारु रनस्यं गौनीप्रिय गुदासोवं वं कुमारे स्वना मस्यं रुपाणा तन्वाकृतसं
आणकोनकारररम्यं पम्म कारा अमुतिलिकपालं पतिगुक तविन्नजाय नकृ स्यकं रां तोन कौलास्य गुरुसो तवीरामस्यं
रानालिपसारये पाये नवयदविश्रीपितण तोषं रा रुपा मविप्र नदीखने सेवरलीनाश तिरीपं सरता रवतनानारु नो यतापुलं
अनो नयानितिरको तां बुलमेवरापा नयोग्य देवे रां रां कन वज तय मणनमो यकनिपो तत्पं पार्वतीनि नाणा न तोमास्यन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible] नस्मात् कृत्स्नो [illegible] सम्प्राप्य देवेश [illegible] ध्यानं [illegible]
[illegible] तस्मात् [illegible] [illegible]
[illegible] सर्वसौ [illegible]
[illegible] ततः [illegible] [illegible]
[illegible] ततः [illegible]
[illegible] विधानेन [illegible] ततः [illegible]
[illegible] ततः [illegible] ततः [illegible]
[illegible]
[illegible] विधानं ततः [illegible]
[illegible] ततः [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ततः पातः सम्यक्प्राप्य ज्ञानं कृत्वा विधानतः । नरश्चेन्द्रानजस्रोणे सोमांकुवीतवा न्यतः । पं वा सनेयाम् लेपां कुरु
यातिलिथान्यतः । विलेपन समित्स्वस्रस्रो तन्त्रातं कुर्वन्तु । स्तेन पन्न मां नेन अप्सो तन्त्रातः कुर्वन्तु । ततः स्वस्ति कुर्वन्तुं ॥
२३१ वा सो मसोजं स्वम्पाय एतु । आवाप्यं पुन यतो नवस्ता लं कन्यानामित्रिः स्पर्णीयं विनसोह्नं वेदराम
विरान्न्दं । पुत्रां कृ लोकुवाणादि देवाविता नु स्थानतः । ततस्स्व तमातानं ब्राह्मणो यो यथा
कृष्णं व्रतां यते न गोदानं लिंगानं ततः पन्नं दरादानानिक सायकीपदानं स्वाकन्फल
दानं पकुवीततु निरा नं यथाक्रमं व्राह्मणानां ज्ञो मये तपस्या ब्रतस्य पनितुतीयो भारतीर्यां वद्धेतिपः
प्रायस्त्वं स्वर्ग पपं । यास्य ख । रपन्नानां कुर्वातु जं गुल स्वस्य मन्वितः । तत्प्रस्य धाविदानुसानेपानीवमाला
पयिं तथा । फलाविता नु स्थानेनाविते राक्षयं न कानयेतु । एवं विप्रवनैः स्थापितं उद्यापनविधि व्रतीकृतु ते स यदिः
से ह्राः तस्य पापयं दानिवं आत्मशो मस्ताक सस्य वाक पेयरात स्पन्न । अरवडोथ स्वक अस्य फलमाशीत नस्वरा यम
पुनरेव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यद्२०७ ताप मारुपान० आत्मनत्रुवतोस्नि तन्त्र तवरास्वपु पप० वलात्ते नालस० सायः स्तु पु स्वे कुनवयेद्येवान्
आत्मनःप्रवृत्तीत्तदेतू ५१००५०५ ००१० ६७ ००१०-५२ ति स्रौस्क ०२७ तातो कातीक मा त्मनःप्रवतो न्यापनं स्रुणिपु ००१०
००१० ६४ ००१० ६४ ००१० ००१० ६४ ००१० स्त्रीरावापिपामिस्तु ५ ००१० ६४ ००१० ६४ ००१० ६०१०

ने०कटे ॥स्त्रीरुतमस्तु॥ म०तव रुन्तर्धे० ९० तपाय० कलमा का तो यामे राकुमा० कुर्यौवु॥ कुतौर्तं त्वामक
सुनक तत्ति र्यौ नामरु० पातीक्षा स्विर्थवर्ध० स्त्रीसद्धेक तेस्वनमीतत्र्व० तात्सो तु०भानौमावदेनातिपोठ
तप सोपिवानकुआ०क जलेवे॥-पतगतोनेतित्रतासेन्प र्धक्षितो गमापति कुआंक्षनये॥ कनस्पनविता
नि मात्मार्तनिसत्वाक स्त्तिरक्षानांतकता॥-५) ततेतिमिंत प्रं०प्रातता॥-प्र नपालपुअंनपिवयेपुविगु मये
मारत्तियौ॥ग० नाचैरप प्रुनायोरा०स्पनियचोप मनियचोपमामतसो॥०सायाः॥न०तापन् तितितोद्वाने
शानत्सिचौ॥स्वनस्वतौ॥गोतावयौ॥ कि-नाताप नियचो॥न जनियचो॥ गोपौन० मस्यप्न न० ठाया पस्नि तेगपेयत

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नमोनाचौ।
खिण्नचौ।
निरर्थनियचो।
कुमीनियचो।
१३१ अदानियचो।
स्वनखतौ।
नलाया।
पनलाया।
उहनवानेका।
कावेजौ।
तीमानचौ।

महानियचो।
निरखनियचो।
सेतपा
लाया
तताया।
सुतताया।
चतुर्दनिदेवतात्मो॥
आवरदनाउवनानाबृसा।

अघावीकुआ।
तलानेदेवस्वररसि
तादिलोगेस्वगु
उंगंधाविलि
चानकर्घ
गुनुपर्दिपुमयेत
मालेना।
पिलेना।
उपअनपवे।
नानराया।
स्वनकाया।

काखाया।
वामत्ताने।
गणपतये।
वानकाया।
उमायै।
स्वनस्वतो।
सेलपालया।
चीकस्याश्रोताने
अंहुकाया।
कोलाक्षिदुराया।
काचानरापूकौ

कुनायि।
अनंताया।
वनादाया।
दधिचै
सीनाक्षये
खेतवीपाया।
वश्रोचानाय
कलपरसाया।
मालोकनमंहपाया।
सुवातिविदिकाया।

दारवुभुजाया।
खेतकुलाया।
लितरामणात्मां।
नलसिंहा
समायन
नमाभि।
सानाय।
[illegible]
पैसयाचो।
अपनायि।
ओहताया।

अवैरायाया।
अनैतयाक्षि।
अनंताया।
मायाचौ।
जियासौ।
अनकुवितायै।
आन्रंगिताया।
[illegible]
सरतताम।
परमायन
आकाराताताने।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

॰ धाराधारात्तिरात्मने।
नीलाञ्ज कान्ति कोवा
य॰ तारत्वकात्मने।
योगराकेसरोत्पौ।
॰ क्षया त्वने।
॰ स पत्वेत्तपो।
कलात्मने।
रलात्मने।
रत्नाये तत्वो।
प(धि)वकात्मने।

वनिवेषाय।
॰ स लाय।
ड॰ न क सो।
अ॰ ट अ सो।

ॐ॰ अर्क अ॰ ड लाय।
उ॰ सोम अ॰ डलाय।
अ॰ वह्नि अ॰ डलाय।
आ॰ बृन्नापौ।
उ॰ विसवे।
अ॰ अदेखनाय।
अ॰ आत्मने।
अ॰ परमात्मने।
ह्रीं॰ ज्ञानात्मने।
विमलाय।
उत्कनि विताय्यै।

ज्ञानाय्यै।
क्रियाय्यै।
योगाय्यै।
ब्रह्म्यै।
राक्षौ।
ईशानायै।
अनुग्रहायै।
ॐ॰ नमोत्तनवते
विसवेस्वरवि
नेवायुदेवायल
वर्मिसंयोगपीठात्मने।४

इति पीठपूजाद्युक्ति
नत्पवाने
आदिम नीके दुन्य
कमलांतरात्य
तेमोत्तु
प॰ देवं
सुखण्डप्रमलौ
नवाच्यावतीर्यौ

वादकाली त्व॰ तेलकु
लम॰ तेतानाद्य
नक्कामि प्रज मा॰ कृ ध्यौ
यं॰ विमलायौ
न॰ उत्कविणितै
ल॰ ज्ञानायौ व क्रियाये
स॰ योगायौ ब्राह्मौब
र॰ राह्रयौ ल॰ ईशानायौ
अ॰ अनुग्रहायै
उ॰ न मो तत व ते

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सकलगुणाभ्यानेसक्रि(ग)क्रमचयोगमीकाभ्यानेस्तीवे॰ कहेरणायास्तु वर्नवीकं॰ कलमयाति।स्वाकस॰रुवम
अं॰रुच॰ लाभयवतु जोतमाग्राग॰गपाणिवेद वा॰स्तिश्रुटमश्रा वाद्स्वा म्नद॰।।मुचु विरत्वनो॰स्त राक्रि
स्ता॰ग॰ स्तीलस्तीवे॰ कहेरवनमावाद स्वाविश्वावाद नादिपाठ॰ग्रदरमानानायामायाविक्र्से वा
१३४ स्तुदेवायथामद्रि। त॰नोवे॰कहेराप वोरपाव्रुाऊतलिवोन नम्म॰द्याव्रुव्रम्नाच्पेदा।
पलीक्र॰ःःस्तीवे॰ कहेरवनोदेवता।का॰द्रयायाया।वी॰रा वि नस्वेस्वादावु॰रिस्वायेवा।
ऊ॰कपवायुद॰।वो॰ नेलवयायैवजक्रावःमाश्चायःकद्र। ।थमान॰।माये दे॰ कहनाम
नामम्मनिरा॰स्तीतु स्यमेत॰पन॰रयामं॰न नकिनीटकु॰उलय न॰।केरुनदानानिवत॰।वत्रा।
वक्तैवनदं॰कनै।विरथत॰ काद्र॰तपपायो।निधि॰॰वाश्रोर्ककेन॰प यो अनिलव॰णद्रा यताद॰॰स्रा।स्तीवे॰कहेरा
या।रतमसवान॰दुपिला।ण्यायेतु।वे॰ कहेरानम स्तेस्तुवे॰क टावलनाज्विते।स्पवदेवेदस्य॰नोथेस्तीका॰तमनुगारन।।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मानंमिवतानसाद स्मा।गा गतानिमेथ स्तुरनामसाक्षां नावतानागि कखिनमानातिवैतुविानासानगतेवद्र
स्मातयो।क्षा।पिस्थेतुपं नविउस्तवामित स्थांउमाविजा।सावैंकस्तवलवा।सानिंमावांद नतेवदेवद पं नाद्य
गातः क्षेरानासानान — नक्षिंका सनं विखं नकागातथ्य स्तुनि। मासानवक उषमेदयांदे
सं सानातितिया पद।पाघं नकागातनवनु चीपवं ○ तनिकेतनापाचं।कासि
तं कुतुमेदेवउध्वजं वैवनारावादष्वस्तवकीलोपेतं न कागा चं निर्मोक्षुतेम्र्य
सीवत्सां कंकण क्षीकं सीथनं सीनिकेतनाकुपं नदे क तथ्रीरान कागानननीवका
मारमनन नोनदे पनमस्रे स्तुदधिसौवसमनितं।तथ्य पकं नकागातो मयानुं दि के रानं
मथ्य पकं।रां रसवक्र गकापातोसीवत्सां कंकणनमुतोराकीयसानपितवेगो।वं।तायनओनसमा
मलानकवति क्षानन्न योंा — थिम्यतः वैवराकनामथ्य सं तुतश्र स्थानं पं सां स्ते नैवदकागानवनावनानना
मतं।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रोतित॰ स्वर्णकुं॰ तस्थः॥ अतोऽन्ने तितं॰ ततः। आनीताः सर्वेनिधाय॰ स्वर्णघ॰ तवत्रे॰ कर्तुं घ स्नानं॰ नम

सेस्नानुपाय स्नानम् अभ्यातेन अपीतां॰ बन्धन॰ रे कां॰ नराणातन के राबाव स्वना किनी॰ क हि रु

तं॰ नकेऽ॰ वलय दयां॰ (अं॰) तीयकर नानि कु नाति निघ॰ स्वतां॰ आनता॰ सौवर्ण दिम

१२७ तं॰ याधस्वसरु तं॰ सुरोतितं॰ खं॰ नस्वतां॰ द पीकेरा लोकानां॰ स्थितकानक। इपवी

तनवं॰ रनागनक स्नुनीपान स्वानस्य सविनितं॰ नं॰ धं॰ नयापादेवेरासर्वणं॰ य

स्यसन्नितं॰ ज॰ धं॰। कालतां॰ पीतवर्णं॰ स्वर्णं॰ रनेन स्यस्नविलीनु स्वीवे॰ कत्तम

स्वत्वां॰ जसतानु पु तिनक्ष्मतां॰ जसतानु। आलतीमल्लिका पुष्पैश्च पकैर्विकल्ले रथ धाराबिल्व

पवैरस्वकुलस्ती रनैः स॰ उक्त यामिन्द॰ पुष्पाणि। जाघतुलसीपत्र कां॰ आनं॰ तायां तुनसीपत्र

यो वि॰ तास्यानु लाभ रुद्र ऋकायानु काम्येनराया तुलार पीमे रायां तुलसी। — ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

योनिप्रेतवो तुलसी।
त्रिविक्रमपाद्या तुला।
तस्मिन्निचयो यत्।
त्रिरूपाल सिन्धु
वे तु त्वा।
नन्दा या तु ला।
वें कट रा या तु।
आवलनिकेतया।
तुलसीपत्र।
तुलसीपत्रकुसुमाः।

अच्युतानन्दकांका।
त्रिविक्रमायाकारो।
गंगा यातलौ।
दिव्यरूसेनाया
नानुनी पु।

अनादिनी याकंचो।
पीतांबरधराय।
उदरं पु।
गरुडवाहनाय कृ
लोकतत्वं स्व।
पद्मनाभाय नाति।
श्रीमोहनाय पुरुष।
कौस्तुभधारिणौ।
दरुपा।
वनमालाधारिणौ।
रत्ननौ।

कंजलोचनायांकुश।
जगद्गुरुथथना यारक्षको।
रां स्वपालायेजाकृ।
वक्र रूस्पापारू स्पारू।
सीवत्सां कायाकसौ।
समतद्रसायाद्रस्प।
वेदरूपाय [illegible]।
वारुदेवाय [illegible]।
उपेंद्राय [illegible]।
उपेंद्रीकासायानेते।

विश्वनसवसोकनेो।
नैकुं कवासिने।
वामकनौ।
अथवाया।
ललाटं।
स्त्रीनिकेतनाय।
त्रिनः पुरु।
रुद्रयेशिरसे। अथ द्वितीयाध्याय।
सर्वात्मने।
सर्वान्तं पु।

अथ आवाहनं।
इन्द्रादि तिः पृथ
मावतानि
[illegible]
[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पाञ्चरेपाया। रा॰ स्याच गताय॥ वनमालाया। विष्वक्सेनाया। स्वाधुरकसंभुताया। भूदायाशीरक्षाया।
सङ्कर्षणाया। पद्माया। राकायोइति इति चतुर्थीविभक्तिः। इति पञ्चमावाविभक्तिः। समा सिद्धिः
प्रद्युम्नाया। तचोयावधारि। अथ पञ्चमः। अथ पञ्चमावतारि
२१८ अनिरुद्धाया। अथ वसुधेः। लक्ष्मणस्वभुदाया। दनुजलोमनुजाया॥
नारायणाया। श्वभाचाणजाया॥ इन्दुस्वभुदा। विष्वक्सेनायाष्टंडीकाय॥
रा॰ लवौ। स्थितवौ॥ रा॰ स्याय। रघुस्वभुदा। नभितपः कुलस्थवै॥
स्वनस्वनौ। पद्मावारितौ॥ स्वर्पिस्वभुदा। भयालस्मयौ पुलौ॥ इति नवकाविभक्तिः।
इति द्वितीयाद्विवचनं। कौस्तु भाया। विघ्नेश्वराया। दधिरेया। स्वनस्थतौ। अष्टाराविमान।
अंशानन्तीया कुसलाया। आकीनविशेषः। सीनराभ। ब्रह्मागोविजातेः॥
वाणिविश्व॰। खड्गाया

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

केशवादिनामोदन० तिदीतिकेनाचस्स
तं०स्मग्रहीनवाणिन स्माजित्पतेक्रसेना
भवयस्तुतिः। नाथ पप
ॐ नमः कीर्तिकेय न
नमः कन्यकं ढलरा०
मसनकृणशालकपम
पीतांबरधरस्त्रीवहस्तं
क्रितरसस्थानस्तीतु
क्रिअकितस्थाक्ष्मको पनशाक्ष्मनेः।०वृत्ति

सीवेंकटेशाय। नरसीपतये।
सुदिं सन्मर्थ्यि भोसमाय।
माधवलयुजाय। गोन०तिकाय।
वारुरेवाय। नारसिंहाय।
केतकीपुतल०। कृष्णरपतये।
व्यघ्राक्षाय। मानुताय।
विष्णुकांताय। तुलसीपतये।
मनिरुचाय। कनारनीय।
०नागराय। दाहिनेपतये।
पुरुषोत्तमाय। कपेन्द्राय।

सालिकाप्ता। विष्णुक्रांतीय। नोदि [illegible]
सनये। बलतराय। कालीय।
सोवं०तिकाय। कुपिकाय। सुनराय।
कमलाय। वारुरेवाय। चं० [illegible]
कुधिकाय। कमलाय।
सीवेंकटेशाय। स्त्रीवहस्तको
स्वर्णितिपेनाय। स्तुतनराय।
अघोरपापुजाय। कनवीनय।
सीनिवासाय। नेतकीतलयाय।
नकुलय। सरोनाय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

२२६

केतकीपुष्पाय
कुन्दिनेशाय
पारिजातप्रिय
निर्वसनाय
नागरंगप्रियाय
कमलप्रियो
मल्लिकापुष्प
मन्दाराय
गोविन्दप्रिय
सीतानिवासरो
गंगाजप्रिय

अनन्ताय ओं कृष्णप्रिय
जनार्दन . . . . . नाय

गुरु . . . . प्रिय
नारदवन्दनाय सो
गा पुष्प . .

पीताम्बरधराय
आनन्दप्रिय
विश्वरूपनाय
सर्वतीर्थप्रियाणि
आधारशोभनाय
पुरुषोत्तमाय

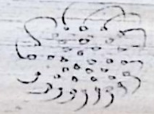

॥ ओं श्रीकृष्णसीवे कदेरापो तनसत कृष्ण मसोरत
॥ तस्य ब्रह्मन् शिवसीवे कदे खनो देवता कृष्ण सुभक्त
॥ नीलमोसीर तिनी कसी निसर तिस कृतवे क
॥ देखनर तिरु धान्या ते कदे खनब्रह्म।
॥ रसि ध्यादेव विनिर्गोनः (ध्यानं) रां अं
॥ ओं कोत्वा पवीतजनी भु स्थापय वै अ
॥ न्ताभिको वौ कानि लिका भुः कं ततन भागः
॥ देवं सर्व ध्यानं दि वेदं गं ना रस क्रा घ स्थान जः
॥ सरा रा कृ सकि नीत कुंद लं रुपीतर खं स्व

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नरीनृत्यत्संसाराब्धिवक्षस्स्थलकौस्तुभसिंहासननमामि विभुं दानवसारगुञ्जिनः॥ — ५ — ५ — ५

ॐ नमो वेङ्कटेशाय।
शेषाद्रिनिलयाय।
वृजदृग्गोचराय।
विष्णवे नमः। (विष्णवे)
सदञ्जनगिरीशाय।
वृषाद्रिपतये।
मेरुपुत्रगिरीशाय।
सरस्वामितटीजुषे।
कुमाराकल्पसेव्याय।

वज्रिदृग्विषयायनमः
सुवर्चलासुतन्यस्त
सेनापत्यभराय
रामाय
पद्मनाभाय।
सदावायुस्तुताय।
त्यक्तवैकुण्ठलोकाय।
गिरिकुञ्जविहारिणे।
हरिचन्दनगोत्रेन्द्रस्वामिने।

शङ्खराजन्यनेत्राब्जविषयाय।
वसूपरिचरत्रात्रे कृष्णाय।
अब्धिकन्यापरिष्वक्तवक्षसे।
वेङ्कटाय।
सनकादिमहायोगिपूजिताय।
देवजित्प्रमुखानन्तदैत्य
सङ्घप्रणाशिने।
श्वेतद्वीपवसन्मुक्तपूजि
ताङ्घ्रियुगायन

शेषपर्वतरूपत्वप्रकाशनपराय।
सानुस्थापिततार्क्ष्या ... य।
तार्क्ष्याचलनिवासा ... य।
मायागूढविमा ... नाय।
गरुडस्कन्धवासि ... ने।
अनन्तशिरसे। अनन्ताक्षाय।
अनन्तचरणाय।
श्रीशैलनिलयाय।
दामोदराय। नीलमेघनिभाय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ब्रह्मादिदेवसंसाध्या दिव्यरूपाय
वैकुण्ठान्तस्थचेष्टा विमानस्थ गताया
ज्ञानस्वरूपाय निरितारोग
मनःप्रमोदनाय
वासुदेवाय नमः
तारकेश्वराय नमः
वरदेवप्रियाय
कनकेशप्रदाय
ज्ञानकान्तिप्रदाय तीर्थकारणाय नमः
नानाचिन्तितवरप्रदायिने

नानायातनेराया
ब्रह्मरुद्रोहनयाय
रासरक्रन्दनप्रिय
सत्कर्तलाय
उद्दामन्मदारुक्रविप्रदाय
केशवाय नित्यपावनमूर्तये
अमितार्थप्रदाय
विश्वतीर्थविस्तारिणे
तीर्थस्नानमोक्षस्नात
मनुकालीनप्रदायिने

कुमारस्वामिकार्यस्थरोरितप्रकाशाय
ज्ञानदेहिसत्यरूपाय कुलदीप्तस्व
किन्नरनरसुरपाशधारिणे नमः
वेदान्तसमुज्ज्वलितरूपाय
स्कन्दवल्लीवरस्वामिने नमः
सत्कीर्तिकलाधराय
कमलासनपूजिताय
उमेश्वरप्रियाय
उत्पलकामदेवरूपाय
नन्दनकरुणाकुलतत्त्वप्रियाय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नानार्थानामेतासोपक्रमनद्विप्रतायां।
मणयानसिकोचा।
वषत्तासुनदानितौ।
अं॰कु नानोलपतयो।
तष—तावलपासिनो।
अं॰गनासुतकावे।
मधवीयविकानितौ।
विस॰ज विसकोलायां
सेतकोलवन— या।
नीलथेतपयोयानसेकते दोतवाग।

सानमीपयमिलाया।
वोलगुलविघाता।
सुनमितीसुवैतनमपदाले।
मजमातिनो।
कूतारमविघवेसा॰तके
सिकेतवपकाया।
वनायावलनाघाया।
बलतकाया। विविक्रमाय्यां
लमसतो। सुजीकेरलायां
अकरसाया।
नीलाद्रिनिलयायां।

सीमावृपिनाघोयां
वैकुं॰ठावलवासिनो।
अकु॰राया।
अनं॰ताया।
जनिनीतपर्धिताया।
सौमवतुपलराया।
सुवनकरसन्नी
सातनुनकातीशपाघिनो
कलाजनमदातीर्थसि
हास्वपीलकाचिनो
गोविं॰दाय स्त्रीनिकेतनाया

पन्नाशोतनरातन्नाअं॰वनुथानुराम
जितं॰धापके अपायां निर
तक्रिसंमाविलतः तस्य
हेका स्वपसं॰वोतव
आर्यनीयांविशेषेण
मसोत्तन॰रातत्वे॰
धेयं॰तेचे॰कलादनिवसिनं॰अर्चि
सस्व—मिलमकं॰पसिध्यतानो
नि॰स्तोलं॰ — रमवैधां
पकारायेतु

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

॥स्वधात्र क्रिय नात्रेवरघवेन्नामास॰शुरु॰।इत्तिरोभेतां कथित॰ कथिलायमश्रुतानवे(क्र पिलारम्भमसा
योगीसमकारातुमाया स्तत॰तउ क्ष॰तवतामचा सभः॰पीतिकीन॰स्नेः॥—५इतिरसीवनास्तु नातोवे॰कतनि
नीमदाम्नेमकारोष कपिलनृजिस॰वारे सीवे॰करे स्वमाशोतन॰नामे कोनलि॰रोथ्याचाः॥—५ः॰
नरूर्व रतनाशींतननामानुमाः संभार्वयोमिपे—पवनरूपत्पनरूपोतां नोगु कलागनुरूप॰कुतन॰ पुनं॰क्ता
मारेवेरास्वलौकनम स्वताउवग॥लोकलयमशेकीप॰स्वविज्ञानवकाराक॰ली॰प॰व कामतो
रानसमा॰तक्षवहस्ता रीप॰।प्रतजसे स्वघातैस्वणो प्रतेनसमाप्वतन॰जैवेध॰तेम मान तैं
नदातागुनुबोतमानैवे पनता॰कुत॰वसक पुन॰पुनै नमिनदुनै कुतिन॰(ली)वयेवमीनुलगो पीमनरा
मानदतनता॰कुल॰।कपुन. स्वालयाकृक्ष॰स्वर्वपापवंतानराजें।लीनाकन॰प्रदास्या।श्रीगीतोतंवक गतारोक्रीया
कन॰।दैवदेवक॰ण॰नाणवा॰क्रितापजिलप्रसाकनृवसेदरम॰देवरव॰स्नानातित्तिवापद्रा।म॰तवुन्पणकाल वनी॰उदेवायद

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नयेभ्नन्मात्मनो। प्राणतः क्ले रत्नारसा ए वें कहे आचतो नमश्च शिवरसिंताय सीवहता कं ग नीक सीथ रसी निकरोना
पे ऋ ते च कीलं च ांग्ना। अ जनात्मा त्भन आ रक्षान्ग वां क्लि. तं कुत्रो दे व रं रंगा नां र्तित वाय ग मस्तातित पुष्पे रेः
सं ना पदः देवाश तो रहामनिनायायायेस्व स्मनादिन मं लःाउ बुधि चिंथिम नितं ना रायस्वधने
महा कु कु थ्रे व की स्त सो रंभ मा (ः) श्वं र्थ जन्वपि तत्ां कुल गानं। अ पत्ता धरा ह स्वाति कुवस्तं तें
लिरां ओ यादारसोद लितिष्ठोंपुण्वा त्रमस्व गुरु पोल माभाफर्निं उ हन गुम्माय स्पस्म
कुते ख रसेतिस्ओ मतिंना॥ ॥—॥ः ॥ इति गुआ विधिः ॥—॥
रामस्र सीरुतमसु॥ मरसवें कहे रवनःार को रार्ह स्वनाम सो लनं ल स्म॥ विनाडु बिल भ नस पुष्पं ः॥ वें कहेसु
तमे नः परमात्मादे वता॥ ॐ लीं कं नमः रा क्लिंः॥ वें कहे आ ये तिकीलकं ब्रह्मां उणात्तइतिके व नं च क्रणता। नरत्सासंसा
श्मनद्गतिस्र चं ओ म वें क हे रव न प सा र रि चि सेक्के विनियोगः॥ ॥ ॐ अंगुलिकौतारं नमः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नद्यास्तर्नीत्यानं वे॰ कटे उपाच माध्यमात्यान॰ ॐ श्री नाशिकात्यांन नमः कर्निकात्यां वे॰ कटेश्वाय कन्नलकन्नकुशलाना॥ ॐ द

नमाम्यानमः स्निसेवि॰ कटे सापसिरवाचौ॥ ॐ॰ कवनामानमः नेललचाचौविं॰ कटेसापपश्मश्रमातु ग्निरमनोमितिर नृथ्म

ध्यान॰ ॥— परम॰ रा॰ स रक्र॰ स्निस्वावानुर्मि॰ ॥— प्मायेके करनालमातपललिस॰ सीतु सजेव॰

१२४० पनं॰ रचाम॰ ननकिनी हकु॰ ठलथन॰ केपुनन्दानवितं॰ नरक्राजकै वनि॰ कनैधिदथत॰ कानु तापपालोलि

धं॰ वामोक्षिकिकननं॰ १ पोकनिलयं॰ वमायचास॰ स्पना॥— प॰ ॰ प३ॐ॰ वे॰ कटेसाए स्पनम॰ ॰

कालं॰ तमाया

ॐनितुवासाया। — सोपादिनिलेख्याया। सोवज्ञाया। पद्विधित्तिवे। तनितां काय। अरितिवाया।

निसरैराया। असोपतक्रजस्पमा॥ वित्तवे। जहान्द्रिप्तवे। कालसंतो। कालगप्राया।

विरवतानना‌या। ॰— ॰ सकोयन॥न॰ प्रतवे। ताक्रिप्तवे॥॰ कालगोत्री। कालक॰ कन॰ नायाम

निसवसजेला। विसश्रातातया। सोषनत्पाया। विक्षिवे। शक्रिप्तवे। कालारव। कालकाले स्वाया।

निसनस्पन्दवी। विताकेपतवे॥ सोषसाविलै। विक्षिवे। वथितिवे।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ना॰ तने।
स्वयं॰ तने।
भं॰ तोमनाया।
सं॰ तिते वानिये।
मनोथिनं॰ तिनीमानयो।
सोमा॰ तोम परपत्ताया।
कं॰ भुश्रीकाया।
रा॰ बनानिरुपाय।
रा॰ बनत्तमानाया। ४०
जिं॰ नीपनाया।
जिं॰ नयुपिता।

पतितानिंबन्धिचातिगाया
गुणावतो गुणामन्नाय
गुणातीता
ताया।
गुणाविचायाया।
उगुणिश्चं॰ सा कृते।

स्वलंगुणातीते।
गुणातीतस्वकायाय॰
परेशाया।
परमात्मने।
परं॰ ज्योतिषे।
परागताये।
परं॰ परायाय।
विधिदासाय।
परां॰ पर्यन्तियताय।
ब्रह्मा॰ उपनिषदे।
ब्रह्मापाराय।
ब्रह्मारुपते। ६०

ब्रह्मणोऽपि ताया।
ब्रह्मकल्पाय।
ब्रह्मवादिने।
ब्रह्मचर्यविनायतात्मी।
स्वतन्त्रताय।
अपरिच्छिं॰ न्नताय।
सत्यानुजिते।
परात्मने।
भगवते।
रां॰ स्वधामापरानिते।
काकवाय।
अनिरुक्तं॰ रताय

नैकारूपनिस्वरूपाय।
पं॰ कन्यानिलिथानकाय।
थलं॰ तरयो। कनाय
पद्मोनिधिनिमं॰ ध्रकाय।
क्षमताय।
अनन्तरूपं॰ धाते।
नारनामायायावन्ये।
कनमोदककायानिनो।
नमः सं॰ कोदत॰ कनाय
दिनादिनाक्षिकेनते।
यज्ञाध्यक्षवितिवनाय

चक्रेशाय।
दुर्वासभिक्षलीलाकारी
थ तापवते।
पञ्चमारूपनिदेसिने।
वक्त्रं॰ शाय।
सम्प्रथनाय।
गंधर्वरापकनाय।
गुणपन्नं॰ धाय।
निवेशाय।
कमलवक्त्राय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

बकुलनरसिंहाय । ...
दुर्गनस्तानास्ता कृतेलो। ॥रवतता लक्ष्मी ॥वाग्रखुनकतस्येवायो। अं बद्धतमे स्वानताय। ॥यस्तोद्स्तानालिसोय।
वकलयनायजरावते। व्यातायन तनमु पंचासा कानकीराय। वरुदेवकृतस्तोते।
पनेरानालाख्याया। कुरास्नाया। खुनाप्यसाया। नंदगोपभ नोरुनाय।
स्नानीवनाया। उरवृतीनया यास्नाय। स्नाकेतेराया। बरुतुअ याः
२४१ जलोकहाया। २० वितीपानवनपदाय। ९नातनाया। कोमला: नाय।
पसिनाद्भुतासंवानाय। तेनुकृतोरैत्यग्नो। ९ापस्लोकायाः कोमला नाय।
नविते सोमस्रानलाय। कामलंकाया। वेदवेद्याय। जनावतोनी लक्ष्मतलाय।
रानयानीतपलतुर्ग। अलंकानवतोस्मियते। स्वामितीर्थनिवासकाय। ९तनाभाग करौ।
कृष्ण अतपनितोषकाय। अतिकोयनलोहानितो। लक्ष्मीरानः केलिलोलाय। तारापतेखनारानाय।
खुचीवत्तयराय। ॥वालिदेतो। कृष्णकर्णविजनाय। लक्ष्मीरायालोकनसकाय। गनतोपितमानांनाय।
रैतनकायस पाततारखुना। कपिरंगमताय। दराकंक रानःखंउ नो। देवकीनतस्तुतास्या। नारदेनायाकाते सकाय।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गोपिकास्तंनपायिने
नवनीतनिज्ञायाय
कान्तताय
नाथाग्निजितुषताय
वह्निकृतेहतेजनाय
सीतास्यापनराघनाय
दक्षाय
उपेताऽकदकाय
नवनीतापहर्त्रे
नीलनीरदतारुताय
स्तीनवैरपआतीयवे
नामैललितीपना ॐ

भावुकालितविरस्थाय
उलूखलनिबंधनाय
नलंकुबरशापांताय

गोकुलीकृतिताःगाय
गोसंख्यानसकाय
सीराय
वंशानापविरोधकाय
वत्सकंतकाद्यावकदेपितो
दैत्यकं·वरमारानिलापहः
अघाकरनवंशनाशाय
राकहल्लयानासं·कहाय
ब्रं·त्रापाकाय
ब्रापणाताकाय
पतञ्जितेनं·ऊरीथितवेः

तालपक्वफलाशिने
कालीयवरजितवल्क्ष्मी
नागपत्नीस्तुतिप्रीताय
प्रलं·बासुरखंडनाय
दावाग्नितवस्थदाजितो
फललाभाजितवोः
गोपाबन्धकाय
गोपा·ङ्गनाचेलचोराय
पाथोलीलाविहस्ताय
वंशगानप्रवीताय

गोपास्त्रांकुमारीलतोया
ऋषिपत्न्याहृतान्नाय
ऋषिसजेआयाय ऋषिविवाय
गोवर्धनोदसंथाले

सं·कृ· दनतनो
प कायन
रच ध्यानवि
लाखन पन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पितृजं॰धनमो

१४२

नासक्रीप्रनायातायां
तनुगातत्वर्वितोय(
गोपीभावितायां
धनभोजनायाः
आकुनरस्वतिसंवीतायां
कुजनोयवनकायकायां
ऊर्मिकोनः प्रयानितो॥ २०
कागुनोननदानगातयां
मालगुधानग्नगंगातायां

वकाया॥
धनातमातंगव॰
वारुपायां॰

कं॰स्वर्णविनिकं॰तनायां
सुनाचाउग्रसेनगतिप्रालेय
ननलिं॰दासनक्षितायां
कालनेमीक्लकवेभितो(
कुकु॰ररवनग्रनाया॥ ४॰
सायुस्वेकाया(
उग्रविनामिरमयनिवातितायां
रुक्मणवविदानितो(
रुक्मिणीनयानोहावाया
वनुभ्रकननकाया(

कामायाप्रकृनाय
भाभ्रकोविदाया
भानिकृतिभदामायांगं॰
मा॰नवतकृतस॰गनाया
माभ्रुनागं॰भूरयनाया
भगभेनाया
मा॰नवतीप्रतवे। नो
सतानिन्मानसोनासि
सतमामानये(
रुताववराया
रातंचनदनाया(

सिन्धवे(
पा॰उरभिनाय॥
उदृकाया(
कालिन्दीपतये(
मानामरवेनिधे(
कु॰आवत॰
सकाया॰
म॰ननरुभ
नोतास्वतेन
वकानतीरवनरा
यकावल

तनविचाया
सुतनासौत्रालाया(
अन्निभितुर्वितवे(
किनीटकुं॰उतो
कनपायन॰२॰
कलवन्नीवलालितोपा
तीव्रमवतवतापावते(
सिलविं॰नाभिपायाः
मतयाया(

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अशस्रु(टिकेलिख्श्चीताया।
नसोगारतश्रानसाया।
प्राञ्जोतिषाधिपोतपाहन्नाया।
तहौन्पा॰तकनाया।
रकाचातुमिखुताजु
तुनतोणाया।
तुपताा॰ननस्प॰यतौ
नरुनास्ताकतान्नाया।
न॰धसालमानलेपनो
या।

नानकारअत्रनिताया।
नैवेराचाविखनाकुरवे
जातावाउविपाहिवो। या।
तापऋ्नविनारानो।
उषायषविलो।
अकक्राया।
सिकोवाकुशसा
नरपाय॰ या।
अदेराऋ्नस॰स्युता
सीतऋ्नतया॰तकाया।
नाणनाजोधान्नकाया।

पौ॰उकाजिव॰घोकुताया।
विविचाविकृलोजिम्नाया।
ब्रम्नतोपुरयावनाया।
अनारस॰थनलदेविगो।
केतिरेतपात्तव॰कनाया।
वक्रिगौवैघांताकाय४००
णत्वायानाक्रव॰थपवारको या।
नाक्रस्युयरुवित्तीक्रे।
क्षियां॰नायाश्तलतायां

थानातसगासच्चीतायनमः
कवेलात्तीशतावकाया। सेकायन
सवाजितागा॰तीनायाओंपरीमानन
तीजमधातायाः तहुवरपाव
तीजमउक्ता या।
रवालि यो।
र॰तवक्ष्रिरि सक्रेदिनो।
कवायाकृसा रपरपै
स्वनाभेनैक्रय॰तीवगोमिनो।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

२४४

नर्हि र्वर्हि वितुपाता या
पां॰ कौ न वस॰ थान का निपो॰
उ॰ रा स ना॰ त काय।
कु आया। विर्त्रि या कु
स्व दं सो च।
प्र तुर्दि॰ आ निर्दि क्राय।
त्रिनु ना निमनोदत्तै।
स्वर्ति स्त्र विको न वते।
निर्दि का ना या निर्द्दि या कु
निर्नो ता रा या॰ २॰८

निना॰ म या चा।
स्वर्नक्षो सै कथ मिति।
जि स्व स्का या।
दि कोता स्व चाया।
क ल चो।
ह्नो॰ क्र ग्र द्रुतै।
उ शा निग्र द का
न ता त या॰
क म र्वि त्रिज्ञा का नि ति।
रा नु व ति र्वि नि तो ग क दो।
कु ना॰ त का या र्त्रि ग क्रा॰ ता या
कु ग क त प त स का चा।

कु सा ना चा।
का म का नि मि।
नि ष्का मा या।
का मि ता र्च ता या।
त न या।
व नै तम या या।
स्व॰ रा॰ ता या।
रा र्नि तो। म॰
वै कु॰ कु म॰ जिना या।
द व श्री वा या।
कै ह त नो।

ग्र द ह्लो।
ऋ॰ ना क न का ता।
स्व॰ रा ज कै तो।
स्व ता॰ नि तं स भे॰
न त चे॰
क पर्दि नो।
का म त्रु पा का।
कु ला त्रि का शाय
स्व त यो प तौ
म ना द यो।

न प्र था ना जा। मर सा या
प्र धा ना या। स्व॰ नि त्रु प को या
नि लै ना या
नि स्व न्ना य ध॰
कसं ना जा। नि तं या क
नी ला ष न या या। नि ष्कु या या
नि लि म को। या ज रा॰ ता या
नि ष्प प॰ न या। नि ष्ठ क्रो नौ या य॰

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

कर्मातीता।८६
अकर्मिता।
विकर्मिता।
कर्मेशाय।
कर्मातीवनाय।
कर्मभुजे।
कर्मफलदाय।
कर्मेशाय।
कर्मेरिताय।
कर्मनिग्रहाय।
नताय।८८

नानाशस्त्राय।
अनंताय।
कपिलाय।
क्रमदाय॥
उग्रचे।
कृशे।
सुमावते।
वंशे।
नेले।
आलवाय ५००
अगतये॥

निशात्राय।
ईशे।नित्येदेशे९
नोशे।
आकाशनताय।
नोशे।

नोशे।
मखाजोशे।
ॱॱस्वच्छावते।
स्वंवदिने।
उत्ताय।
मं लिता।
सं ताय।
मंतगम्याय।
मंतकृते।
पन्मंतदते।
मंतांगाय।
सांतविना
स्वाय ९

आकाशअंताय९०
आकाक्रमाय।
स्थितधये।
स्थितविज्ञानाय।
स्थितप्रज्ञाय।
स्थितानताय।
स्थितयोगाय।
स्थितादानाय।
स्थितमानिये।
स्थितानमाय।
निःश्रेयसाय।
९०

निरोकाय।
निर्वंचाय।
निर्जनाय।
निर्वेदाय।
निर्दंकाराय।
निर्हिताय।
निरुपकाय।
अनंताय।
अनन्ताधुतवे।
अनन्ताश्रये।४
अनंतकृते।

अनन्तरूपाय।
अनंतांगाय।
अनंतरूपाय।
अनन्तजिते।
ऊर्ध्वरेतसे।
ऊर्ध्वलिंगाय।
ऊर्ध्वमुखाय।
ऊर्ध्वशिरस्काय।
ऊर्ध्वपिये।५०
ऊलोर्ध्वविके
तो।

ऊर्ध्वमालाय।
निराकुलाय।
जीकजीकवदनाय।
नित्याय।
निवेनाय।
निष्कचे।
कृतये।
मदते।
आगिवते।८०
मदिशे।शुभ्रमाय९

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

२४७. चितमालिकाया। मदोहावाया। सतसंगतसो। कनार्दनाया। आनस्तुयानंदनाया। [illegible]
नतासो। अंसाक्रोथाया। सतमेस्वाना। [illegible] कुंगाया। आनिनोत्तानंतस्तुकुंततेतः। वंकलोवनाया।
नतस्यतो। असाक्षा। सतमसंकलनाया। अनंतनिर्मदासा। संसवतेपंककककचाया। पतमजनाके।
ओतितुनाया। लायन। सतमवानिलत। स्वनिलिंतचे। कुंकुमाकाया। यतंगाष्ठा।
मदादिराया। मदा [illegible] स गायन। [illegible] नंगनाया। कयांकुरगाया। पतनागरिया।
नतवेनितिवे। सांतायां। [illegible] अंसतसनाया। मातिनमाया। आंतोकमकनंगाकुमाया। पनाचातायाः।
[illegible] तवे। मदीयसो। अंतननामनो। सजगथयो। निवेपंकायामनउपकिनाया। अपाननासो।
तुतुवाकतये। मसाज। पनमाम्मनो। कुं [illegible] नैतनाया। रंजायानंनभनाया। वाववामिनो।
मदानंगाया। गागयन। सिंगामकाया। सपंलातुकरं। वंजायाजंनिसंनाया। पानातानाया।
मदास्तुनाया। सतमव्रताया। नोवनाया। गंगायन। उजवास्वकाया। पनालनाया।
[illegible] सतमवनाया। नोवमानायासानिति। मक सांधाया। [illegible] सतसयो।
[illegible] सतमसंधाया। [illegible] नंगनाया।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नयेतातावालादत्रौ
स्यादसिनी जविमे।
तेक स्वने १४०
वांकु विसिसाय।
तपस्विनीतापसोत्तमाय।
पेखचवितुतिदसो।
पुतचे। पेखचगिाय।
कलावते। अंबोधिसायिने।
तणवतेभः स्वदक्षीय।
ताअपानमाया।

मदावोजिनो।
मदाभीनाय।

मदाभीनाय।
मदात्तोजिनो।
मदाघतवे।
मदावीनाय।
मदातृक्षचे।१०
मदातृक्षचे।
मदातृाााय।
मदादेनाय।
मदानादवे।
मदाकायाय।
मसास्तोजिनो। सदेरवनाय।

सभीपनाय।
कुनमालिनो।
स्थयोनचे।
योनचे।१०
अर्नलीय।
नाणाय।
ननभनाय।
नाणाय।
नाणेसाय।
नाणपालकाय।
कि नामयाय।

अर्नलीयाय
नणाय।
नभ्यनाय।
नेगाय।

स्वनेतेसो।
कि नापाविवे।
कि नापदावा।
पुणानापाय।
सानापाय।
पुणापकीतये।
कुनाणानाय।

अन्पतिसो
अनपसांनधाय।
पांचअन्पतकाय।
वलिने।
सौअन्पतं
गाय०
पर्अनिपाय।
सौअनपनिलयाय।
गालपाय।
अलंधनांतकाय।

तत्सोतनालिने
मकामनसे।
सेभाय।
गतिशाय।
वंगुभाय।
दाच्चीयसे।
ग्रााावाय।१००
कीाााय।
सम्नदायनमाय।
स्वाजिने।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

खेरनाया। सोतसो। गलोत्यरुपिलो गोवचिलो सेलकनाया। भनं·कयाया। ननगतीसनाया। नस्यावतो।
आलंवाया। वकलैं। मावोन्नि य·वे रु·से। मातुतो। भनाभ्मताया। नमास्थनाया।
भलवे। ता वे। भमिमिनताया। भक्तिप्रनाया। भनिकाया। विधयो। अं·तमयियाया।
निर्क्षिनिषाया। ने वे। भवाया। भक्तिनाविनो। भनकाआनिपाया। मौलिनमतासो। मदा तापाला।
२८ उ·थयो। सामाया। कलै। साक्तिनाया। मरवाभनाया। ननकं·कताया। स नस्तिनो।
वेपसो। सो वे। सेलकंनाया। भक्तिनाजकाया। मरवामानिनो। अंतलस्थाया। सिधनलि
वलवतो। यो वे। सेला·नाया। साक्तिभको। दुर्योधनविभा अं·तनाथमानिनो। काय
क्षीदनाया। मदावक्राया। आलमवतो। मौक्तिकसक्तितो। नितायं ५० अंतर्थ्येयाया। सिधलिधयो।
वतयो। न·वे। सेलितो। ४० भक्तवतो। ४० नमाकनाया। नितास्थनाया। सनागतयो।
खतयो। श·वे। मन·तवैततकाया। सेलदनाया। नलसेविनो। अं·तनं·नाया। आयुःप्रनाया।
सला·तकाया। गो वे॥ २० सेलप्रजाया। मनरखुजकाया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF
CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

आज्ञाकृन्ताते ।
मार्गिज्ञाते ।
उल्लिथापतये ।
आशास्त्रिये ।
आशातोगाय ।
आशकन्नाञ्जुस
भारतये
आपस्वे ।
उकन्तितिशाय ।
आशाभुतये ।

॥ उत्पतिमते ॥ ७०
भैरवज्ञाय ।
रुरुस्वरूप
नायकाय ॥
उरुस्वरूपं
रुकाय ॥
भुरुरस्वरूपिणि तय ।
शिवं कन्ताय ।
रुद्रवनीय ।

॥ वनिस्थं ताकाय ।
वर्तिताय ॥
वाणिसमुरुपाय ।
रुद्रवर्णसुरसरीवीनरस
नथानत्रपं नुरुकायद्...
सासचमीवर्तिताय ।
भुवसिरहस्राणोरनाय ।
अंवनीपवृतप्रीताय ।
हारकैस्ततं तं नाय ।

महाविश्वार विश्वं ज्ञिने ।
कालस्वर्तव्याप्तकाय ।
स्वरस्पदे सावक स्वरस्ताविने ।
सीनन्त ताविताय ।
सीघ्र रासेअंनुभस्वभूतो
सीसे ना वासीन्नये
तनायासंतपतिर्दिताय
तीर्थस्नानरौरवनाय काय ।
अनरक्षस्वातिसंरसाय ।

दरिताचामृतावनाय ।
कपिलो विवा ७०
कपिलपास्वरूप
वृषाकपलोक
अनोन्तस्पृत
वह्निपियावा अर्थ [illegible]
नन्लोका पथाय काय ।
वह्निरूपाय वह्नितेमरो

नाय
तापविनाशि
विरमिने
जियदाय
सं पासि [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

१४९ कातीशवराबकायाः
पाण्मासोलनिर्नयाया।
वगुणायावगुणारितावृ
नागुरुखानततायो।
नागुमा खप
नाग्लंततायो।
वक्षांतकाण्याअतिमननौ
वहलो कनिनमायाया।
अधीतानायगतयाया। ८०

इं॰वाक्मिनौ
वक्षतः विताया।
इं॰ड्रोचालन्लक्ष्मी
पररस्यागन

इं॰उदि न्निवसेना।
वृद्धवे।
वस्वाद्रस्त्रीवस्ताया।
असुरवस्ताया।
विश्वलोककर्तो।
स्वामितीर्थदेवतायासाया।
स्वाक्षिध्वेसाया
अघोरसकाया।
वनायाताक्षतीर्घातिः सेवि
ता॰चिरसोगुरायान

पा॰उतीर्थतितिदमाना।
कल्पलिनिवनपताया।
तीर्था॰तःकागुल्काया।
सेवकादनस्मरकवते।
नकुलातस्वदारा।
आदीश्वदेवातिवंदिताय।
कक्षारापयहस॰याते।
कु॰ती स्तुतिनेलायाः ८०
पक्तिनौ।

नानदीयममकातीर्थनिदेवकदविलायामा
दरिताकाकुगुणा या या
वीतांगानन्दनौ कृताया।
वक्केतितीर्थवि कारितो।
देवकीपदेवताग मया।
विलोमनकलका चिनौ।
स्तनस्तनवगसेविताया गा।
गु॰वगुरकरस्॰स्तनरीदनविततमोवदा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

म हयवा मनकु मोदिता र्थस्नातास्नमा रानायाः
नक्रु ष्वे यवदां ज्ञ काया सं स्तुक्रितयाद्काय
नाथ्यती र्यविद्यानितो।
जलतउप्र तिष्ठिताया।
काशउद्मसनसी पक्रिलसे
वनत विताया
याचदानितीना।
कनिलाद्रु स्नातास्यविनीराना या।
नतो नं गातिषिक्रो यानागती धीतिबेक वते

कु ज्ञाननयानाती रस्थावा
वन्दु देषायाद्रु मोरवलिने
वृ यस्पस्रु कुज्ञानत्व प्रकाशा।
सौं दयविते द्रु स्विने
घिशं वरायाज्ञकाकुसचे
दक्षा कु कुलमायाश्रदते
दीनगासीनन्नानातुवे
वनासावलनायकाया।
तनद्वाक पतिष्ठाते।

जन्म स्वतिवितात्रिताया।
क्षं कना कतथुमावतो।
ज्ञां कने यकनादिताया।
शं मनादिनिवास्याया।
मुं मकेरायाद्रु नं नायु
किं नन्दयसां वंपवंपमो
स्पप्रनायाः
मूलये
वैराग्य साम नं त्ता या।
वृषाया जलिने

देवि कोयपतेतो।
क्रीडाकारवान स्वं तडा वा।
सौवनलिय विलिस्वनाकाया।
नानावगाय यया
उस्थिपतत मकावा।
पाकाया श्रोहयवनता
कनयेतताद्रुन यानकेते
तनसेलिगोस्तउव तेऽ।
मुमयासागारसं नाराया।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रां रसनाग्रनवतु श्रीराया
रगानु स्थवैनतयास्नतावितो
तो णीश्यतो णसंस्थाना
१४ ब्रह्मादिणागसेविताया
सन्द स्याकेतहिंसायां
विश्नानांतस्पताया
गागनेविष्वक्सेनकृतसोदे
सनं दनपनीस्रिताया
अन्नकाटिनीनीरकायायारु ते साधतिवन्द
उनांननानत्मपनाया।

नवतें
न्मराती
या।
ताया

गंणवोञानविक्ता यां
नाकेंउरणं कारानसाया।
कोमलांगिस्वनोदराया।
क कपवराया स्वक्र कुपिताया
मेउनखर्नवैसालनकहिरेराया
रुहोरसताया
पोल्लरणकुनकोत्तास्वक्रत्रिरणै
रुत-कनाया
अनंतपअअरण्यानत्तये।
मौक्तिकक अतिकाया।

अं तानवांक्षे यअलिनी।
नबातननगारणं तताचये
वलंजणसोपवीतिनी।
वंउसीरव उलेपवटो।
अतयरापा वपितो
रां रसने कौस्तुकीतिम
तेउ
सीवहृणांकतवस्सो।
लक्ष्मीरणंततदतताया।
नीलोत्पलनिताभाया।
भं रोपणं तोकसमानजाया

कोटिन्न्नपल्लावणपाया।
वं दिकाटिमतोकुनकाया
रुलाभवदिकसेणाणो।
कस्तुरीति नकांकिताय।
गंडनीके सगाया।
स्वच्छमौ निरोता
विनोदि तायन
पअस्याया। पडनाताय
रणोअंउलया अविनंगाय
वदिनांउलनाया।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

स्यां नस्स्य मंडनमाय
नतवेस्तीनतवे
तानवीकानवे।
विराललासादिस्य वताया
कनकुदं विनीक निते
नस्मायाकामितवनायु
अवस्थानवपंवे।
विखतेक खवुववतो।
सात्पोसेयायाय
सावनाखपाया

ज्ञानतीताया
ज्ञातिनाया।
मरां तनवद्दिं
काज्ञा या

५० ——————

वे कराङ्क यो।

गताणनाया। केरामाणि वर्धि स जनानाततिः।—५००००५——५
एवं स्तीवे करेराः स्य कीर्तितं ज्ञन ज्ञा तु तं नाश्नांस्वद स्वं स्वन्नाका।
पवितं गापवर्थनिः। स्व वा तावुर्वहीव व्रं नो ष ज्ञं ब्रह्मनास नं।
सावि क्रतेरनं यर्थं स वैस्वपवि रं ज्ञतं कालान्दिविव विक्रेरः व्रुना
पश्यानतवक नं। स तु स प कनं नाक श्र द पी गानि वी नाय ब्रुस्त
नासरवकुरमा ३ वेतानान्तपकं तत्वं। विचाभीनतते विचां य नाभी
मनवानुतवेतु आनं तकलपनी वीस्या ता ज्ञानोश्वरावसाः। रनं या लेसातुत
अचीसत्तापां ब्रदिवादिक्के दादवौ नमातिते तस्व तुलसी गुक नाह्माकत्य वैकं क।
वासीतनकान् सं तु श्रोतव विमवं। क ज्ञानगुक नानालावतीयार ब्यासाह

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नीलोत्पलवनाह्लवनिज उक्त स्यात तवेत्युरुरस स्थितनास्नस्तुयात्रिवेपचोदनिःकोक्रितापरियात्रलोवैकः कं वव
कतिलिस धा नः वक्ते ... निरव स उक्त विधिनास नि लिकान न वान व स उक्ताक्त नरोवरी॥ —— ध्रः॥
२५८ ४६० वतिसीमंवराज्ञ नानो ... वे क रणमनस्ता लो वे क हे खनस्नस स आस्रो सं स उमानि — पसी नआ वतान स्थः
नानानातृ ः— वजुर्दि रोध्यायः
नवत्रता उक्त चुयात्युत्तवोद्विजिते ... त्माज्यावक्तीवसौम नल्यास्थिर्वे संसावाताततृवानव्रतलनस स विज्ञोत ... पकाल
रास्याव न कृताततलनौ ... नीमावाक्याधाताव्रतितशेपनं कतात्र कवेतितो तपक्षालाताललवानपाल वृक्षाः ... ॥उपवीते
ह्लानस्त्रियौ रक्षारात्मौ माया ... रात्रौ। रस्तितानेसं त यात्र सं श्याया पारिवलोतानेक्रूतित दाने ल नौ यौततला ... यौ उत्तरदाने
अवात्याविक्रयायावतृधनि देव ... तास्पोन्दानपालयुक्ताः पोक्ष युक्ता ज्ञाधानरा क्तौ तुलवकृत्यौ कुमायौवनादायौ जाशादि न्येके
त्यो न छिकौ देमद्याकानायै कासुवृत्तयाया स्त्र ० वनम स्वायाचानिन्नस्सि दो स्यनाया ... नकसौ रन्ततलसौ क स्यानम नो —

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

प॰ पद्मात्मनो।
जि॰ विक्रमायै।
क॰ कन्दायै।
न॰ नालायै।
प॰ पद्मायै।
अश्वत्थेभ्यो।
कर्णिकायै।
बीजेभ्यो।
कर्णिकोत्तरे
तेराकलगुणा
त्रिविक्रमायै

सौगौर्यै पीठपूजां।
ब्रह्मादिस्थलनामतिः
नवसप्त
पूजाः सम
आवाहनादिषोडशोपचा
र पूजा अर्चनां।

गौ॰ दुर्गायै। ध्यानं।
लक्ष्म्यै। आवाहनं।
सियै। आसनं।
वाग्देव्यै। पाद्यं।
तु॰ नाट्यै। अर्घ्यं।
तन्त्र्यै। आचमनं।
वात्यै। मधुपर्कं।
तत्त्वै। प॰ वामृतं।
स्वस्तकौ। स्नानं।
र तौ। वस्त्रं॰।

गौतमे उपवीतं।
सर्वतिमातृ पितायै।
आते नति॰ न
जगायै। गं॰ धं॰।
विकायायै। अक्षतान्।
पार्वत्यै। पुष्पं।
अघां॰ नपूजां॰।
लिपि धान्यात्मिकायै।
कमलकाल्यै। आगनिदि
कारुकौ। कलिशं

अप्नेनाश्रितमै। नाद्यं।
श्रीदोषनायै। उपनं।
उद्भवस्थनायै। नाति।
विष्णुवेदायै। पूजा॥
उक॰। कमलोक॰ कं।
स्थान द्व स्थपे विशेषं।
सैलोक्यवादिनी।
ललाट॰।
पद्मालोचनायै।
नेत्रात्मा

सर्वैश्वर्यै श्रिये।
श्रीदेव्यै। स्वर्णिं॰।
अघपदपूजा।
ब्राह्मे उद्भवपद
विष्णुविष्णवे।
विष्णुक्रान्तीभद्र

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गौयौ।को उिनपतन
रोना यौ।बिन्नपतन।
काशा सौ।बटनीपतन।
रतियौ।देवदारुपतन।
१४०
लस्पौ।कातीपतन।
तनायौ।नदतीपतन।
गौ यौ।रवमस्रुपतााणि।
आघुजपकुआण
विशालया।रसनौ।विल्लु।
प्राग्तिबुजपन

विरवक वैनातिंजनपु।
विजिवरु स्थलायौ।
र॰ पकापजन॰।
विरालनासौ।

कमलवुजनन॰।
विलासिनौ।
नानकेसनीपु।
लस्पैकातीपु।
शीरावियौनौ।
मल्लिकापु।
सीनौ यौ।
समस्तवुजााणि।
आघुनाशौतनुकाण।
उं॰नायौ।सविकानासिनौ।
उ॰नन्नौ।उनासरायौ।

लस्पौ।लकुनायौ।
आरुानिनोयौ।
सधायौ।पसौ।
स्वनायौ१०
भुवायौ।
आकानासौ।
आरुाशायायौ।
कोनायै।प्रसायौ।
कौलौ।सातौ।
सिवायौ।
रासिननायौ।
राग्तौ१०

राग्तरौ।
तुतिनाजिनौ।
ताम्रुसायौ।
नियतायौ।
नायौ।कालौ।
नानाविनायौ।
कालायौ।
ब्रास्पैया।
वीनगनायौ।
वापायौ। २॰
रासनायौ।

र॰ रणवादिनौ।
तिलोकायौ।
शीरायौ।
मौ नै।
लेताननायै

रितायौ।
रा॰सिनौ।
पोनायौ।
कनानौ।४०
आलिनौ।
मौलौ।
आसेरवयौ।
मदिरकासायौ।
मदिजेलौ।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अभ्रताये।
अभुरवादिनौ।
नीलाये।
तारत्नौ।
स्कं०दाये।भं०
रीक्षाये।
।।कोभाये।
पीवरस्तंन्यै।
नाभिन्यै।।

रक्ष्माये।गं०जिन्यै
ञ्ग०
तन्यै।
व्रताये।रञ्ग०जभ्रौ

रञतगाये।६०
रञव्रताये।
निरञ०तव्राण।
काननायै०
कामास्यै।
कार्मुकै।कन्याये।
रक्तनीरूनिवासिन्यै।
स्वरूस्वरनाये।
रंणाथै।
रां०कयै।

रुताये।१०
तार्नवौ।
वारुणाये।
विद्याये।
विलोखिन्यै।
रुञनार्नेताये।
गान्धकौ।
नं०गाये।
नर्नयै।
गीताये।

ध्यानस्वनाये।८०
कं०रोमोयै।
वार्वं०ग्यै।
वं०रुविद्याये।
ऊनं०न्यै।
ओहूवौ।
कान्यै।
दततारूस्यै।
वल्लताये।
वल्यै।

वल्लाल०कठाम भक्ष्याये
विल्लविद्याये।वेतनाधिमताये
दनितास्यै।दयुकाये
दनिर्दविद्याये।वनानो
काये
दनिर्नविद्याये।
सवनिवि जायकायै
अभां०नदकाये।
रपाकुकाये।१०० पावत्यै।
ारेवल्लताये।२

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

५२ तिउर्गशो तन्नु कां: स्त्रदा पत्या सिए ५

गौ यैभु प: पार्वतौ ।वीपणङ्गा नायौ ।नैवेपा: ततो निन्यौ । ता नुलः स्वां नायौ ।नी नादन: लोकपालि नौफा तुब्धपः कन्या
यौ ।पद सिता: स्वर्व खि । धि प्रदा यौ ।नमस्कारेण कात्वा ।यने तत्र च्चनि । सास्तो परस्क नस्वं: गुरुं कु कु भनाति
उपरलदानमः कः५ । उत्पलां णि नमस्कृत्य: नसा ।रोदय पा यनन स्वबतं कु तु औदे निरोपं
कामाः स्वदेहि मौ । स्वर्गणो निरा वेदे विक्र विबोध: वृतः तवा ५ लानेदि लनन्देदि । स्त्री
ताभम स्वर्ग शालिव । ।ातः कुलदानन ९ काः देदि चे सोदेदि तत्रिताय ।ति भुने । तवपा
सां कुको ।क्षा सदा अथिद कुदैर्घ्य तोइति प्राध्वनि ॥ इत्यनि विधिः समाप्तः ॥ ५
नष्ठा स्कुलं जनयन: विज्ञ: ॥ ५स्फः २३ ॥ किं व्रतः वस्तुवा स्निग्धा णकर्णिका या: तथौ वस्रा । के नव्रतस्ता ।वेन नः न
न: कुलनवधयौ तु ।विस्ने नदु दै वे सा ५ ना काः तनम्मो स्तुते । स्तीरा: क नः ।सावत्पा: त ५ कानेडु पातः स्तु चौ दिये णि
ना ।ख्ता सा ।गौ ता न ।यर्खौ नाना ल: कान सा: ७ तः ।स्तु वा ।लि स्मा: कन्या. का: स्कः नमा कु पर कुमकुम ।स्तु ताकृतरप

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नदीकुलं समास्याश्चओपकनाा। वितंनं नवुष्यां सतारीनां दृढीवाद्वषीनस्यः। नदीं सोकतमाताया। नौ नीं
लक्ष्मीं वकान येत्रा कल राद्रयं तुसं स्थापा सवीं नयसमाद्ध येत्रा। तस्योपतिज्ञां लक्ष्मीं स्वा यकुतिम
रावितः। पोडरोतुवना नैस्वगुमयेकक गरेस्वनीं। तां नुलैस्वद त्रिस्वकुं कुमोः फलसं गुटौः। स्वासिन्मां
रनौतुत्वं गुत्वां देवी तिकोकयेत्रालौ कंबु विघ्विवस्वेवीं स्रोतं वकुरु मा। वितः। मयादे वि मदामाये
मयराकनरा। तविा मयवीवींगोापेतो। मयस्वविनप्रदेो मयलक्ष्मीं सिंहस्थे रुतेमयनि
गुदनिःस्थितोम यस्योतागनायिन्यैम यवंत्र सदोदनाग्नेनां दे दिप सोनेद्धि
ततिताजुर्दातुमो। तवपातांनुमे ताक्रिः स्यानायित्व दिःस्थितोऽहतिऊमां स्य मापायद
पत्तोक्ो मयेकुरा।मा। ध्रुनानोगमौरवयं सु रास्यं तानअखते। स्तीसुतः। मलैवो नादनं तीमलि
तिन्दारां गुनातन्ननकों गुन्नानणनेमुवें ती म नस्य परुतावनुाजु क्वाती। तवनाक्ासुजक्का कां नावेनािं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

तं। तस्मात् अक्रोधमनुपो वानं प्रीतिं च यावद्वासी स्वमानयत्ने तेषां च रत्नान्यपि ताकेन्यका। तं कुलानामथ केनो
कं पुनिमितां लोकवी ः छलाविललाप मद कुसानु मुक्तिं तान् अस्मीत्वलो। अलकां तने नैव यो गानूनाग
तोभु निरन्तरभाःवि वबेषयनोनुतानुनिमिताो वाक्य अब्रवीत् ास्नाववास्यतणो वनि अं नलस्य व
तं चनाप्रतिवीनं सं च चक्रं च पतीपतितो क यो वृातस्य वतस्य मक्रिमा कल्प पनी तविषत
क्लिष्टतिस्सलान् केवी कं कान्याम्भास्तत्रतं तस्य वत्रतावेन च्या नवानां ति तोअ
ताः नेपमानुतान् रमानां नि वा नुमिता सं च तः नानात्मां च नः रनीषं उपये
तो मु नवितःानोनीं लरती सं सं च जवतं कल्पस्य तं क्लिष्ट तः उच्या स्थापितं स्थितं लेते नु निमितो
लोकमातका स्नीस्थतः। पतत्र तत्रतावेन सवनीशं त विष्यति उल कामोलतेतलः स्पोताम सं वस्तु वा

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रिनीतत्काम्यं चकन्यानञ्जतत्निंलतेरधगाधाइदंरुगांच्यांनितोंरगाचयेद्वारमाञ्दितः।ज्ञवनोलाद्रि
त्र्यकुः स्नोमांगत्व। चव थतेः इतिस्नीस्कं १७नागोतागवस्कं रसंवाद्रेस्नावगातञ्चानवतंरसं भ्रगां। ७७॥

ः — ः — स्नीउगां नायौनमः॥ः — ः ः ःदलागौगतो रा३ऋषुं

स्नीगणाधिपतयेनमः आत्र ब्रह्मणाद्रितौनाम यावक्रगीवरसौन्तागवगातयर्ष्यं नमस्तम स्तपा
वस पार्षंब्रह्मविष्णु ररवनाशकश्रस्वधृनाना यताभुकांकविबोकल रावनिंरां रबाई नंमस्तु
ततञ्जनतोनमथोकल राष्ट्रपनंवाउपनिसो लङ्गामं निधो भवनस्पतेरातवल्लरोवनस्प तेवीद्रुंग
इतिद्वैत्वां श्रस्वघृं स्न स्वाब्रह्माद्येवानामितिअस्वघृमुलेब्रह्मणाअकाश्यात दिह्नोनितिभणो विनुमावास्याके
उभावसितरथेमहे स्वन माकाश्या।उतहेतिमंत्रपंथा वा। अध्यदानपालपुकां॥पुवदानैवानारसयौद्रक्रराकुंगोमावारा कुंवे।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

१सितांशवे।	अघनीरुजां।	पद्मिन्याज्ञानाय	ज्ञानायै।
वंशाय।	आन्नातराज्ञै।	ऐश्वर्याय।	प्रज्ञै।
प्रवंशाय।	धुलवक्रलये।	अपवाय्य	क्रियायै
परिम्लाने।	कुर्माय।	अज्ञानाय।	योगायै।
नलाय।	अनन्ताय	अवैराग्याय।	रीरान्मै।
प्रबलाय।	ब्रह्मणे।	अनैश्वर्याय।	अनुग्रहायै।
उलवद्राने।	वास्तुपुरुषाय	लिङ्गात्मकाय।	निर्मलायै।
कन्याय।	वेगाराय।	लिङ्गेत्वाकरस्व	नवराज्ञि
विकृताय।	पविकै।	ध्यायपीठपुजाः॥	कां सा
वनुदविरेवताभ्यो।	रुपवर्णविन्यासा	अवनवराक्षिपुजां	अघना
नानादि	वनसिंहासनाय	विष्णलांचै उकपिते।	नन

॥ वनुतृक्रिं वनुनक्रिं क स्या स्यानन्तां ततां प्रज्ञस्व कनकाता
॥ स्यं ब्रह्माणं विष्णुं प्रयं हुले ब्रह्माणो ध्यानं प्रज्ञरां रु
॥ यनं देवं वाडव क्रपनाय नं नक्तपीठां नय नं वनमालावितु
॥ षिटांनमध्ये विद्वि वेध्यानं वनुतृक्रिं वं रव कृं ति
॥ णो तं वं उरो स्यनं नामतान्यतं दे वसे तवणि
॥ नासिवं अस्ये स्वकाचं प्रानं हैकुर्तिका कक अ
॥ स्वधूनानायानादेवतातेभ्यो ध्यानं देवदेव कां नाय
॥ पश्चात कनारदो व्याकारु या मिस्यें विरावरु नाक नमोस्तु तास
॥ द स्व रीवे ध्यावा स्मनं रुपवर्णनि सभा वक्रं नानान नानाम

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

छो॰ग्वितं॰। निवेदयामि वेदयामि देवेशा श्रा स्वनं वति देवतां॰ गु पपवेदमि तच्चामस नं॰। नं॰ नावलखमा। नीतं॰ गुरु

नकितास्ते स्थितं॰म   मारतमिद॰ पाप॰वं॰न्दरात्त कनारनिरेतावानस्येति पापं॰। स्मन्स्मन्गनाथान

नानायाक नतमो।   अर्प्य॰द्या मिवेराक नं॰ नाधान मोस्मतो। निपाद्भिरहम यमनके   स्मुजादि

समायकृं॰ पलो   दी॰स्म मं॰ क्विमतं॰ मया रतमिद॰ तो यं॰ मा वमकृ तुरा॰ कनात   स्मादिना

लेतपारमनन्नमो   नमस्ते गोविन्द स्वर्लोक देतस्य चानन्य पकं॰ प कं॰ प्रपत्स्यामि   कं॰ नकाम

कनार्दिना। मध्यप   कमिरलमभा कापयस्य रार्क नादि विलमिसितं॰ प वाम समिदं॰   वनदानाव

नुपात्मक पपं॰वा   मतन नं॰ नान्समं॰ मम धावेणी यमुनावसन्तस्वती। मानीताः सर्व   नद्यावः स्ना

घं॰ ● कनके रावा।   यतनुपेणोति स्नानव कौरो यं॰ पट सुतं॰ व स्वर्णं॰ का पीतवारस्यं॰ नस्वताः॰ देवदेवेरास्तु

नास्तुनतमस्द तात॰ यास्मि तिरस्थं॰ ब्रुसास्तु तथोत्तरी यं॰ का॰ तनेनपि नि मितं॰ उ — पकीतमिदं॰ देव नकाताय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

पोतस्मात्तस्मात्प्रकाशाद्वर्द्धितः सं॰ तत्क्रतिप्रओपवीतन् सुवर्णनावितैस्त्रितैर्नलिनीनैरासो तितैः। रराज्मितेत्कात्तनताऽम्
साराकनुगााकनात्मातन गाणनं॰थककुत्रिकस्तुनीनोरनं॰कं॰कुमं॰तणा। वितेपनं॰सुनरसे ब्रह्मीतम घं॰वतित्नन्
तं॰तस्माप्रकाशाद्दा वद्वितत्तप्रिनं॰थं॰। रालीपां॰पीतवापिं॰स्तन्नासतानुसुमनोदनाजु। पर्कााा
१५४ लं॰कनागाघयिनम स्वजिरसमुत्तयोतस्मा रसेतमसताजु। सातीवं॰पकनुं॰ नागपाद लारोक
केतकीकननीनागा पआनिऔपचोमिजिसंः पतोपत्तानपन्निदिन्न्पााा।आधां॰ नउआ
निमवेपारौ। अरवघा पनजैरी। नानायााप्रकं॰ पेजत्तर्वमानुनीनसायिपतये कहि कनार्
नारनातिं॰गो वि॰राया कुसिं॰गमोरनावदारुअं॰वैकं॰कायाजादुनूादपीकेरागवाकं॰कं॰ वेरस्कुप
गोक्रुसनंक्रनवकुवे।नेता गाविक्रुत्तयोललाहं॰सर्वेखनावारानं॰ सर्वदि वानकायस्सवनि॰ ३॥ आघवस्नाव
प्रुनादे——खनागां॰नाप्रपुना॰क॥—॥ प्रजंलतः॥वस्नागो। वतुश्रु सायागिनिता नसायात्पनाधत—— योयातेविघाते॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सृष्टिकर्त्रे।
लोकाध्यक्षाय।
योगीश्वराय।
बलभद्राय।
मध्यतः
कृष्णाय।
विष्णवे।
नारसिंहाय।
कल्किने।
सृष्टिकर्त्रे।
आनन्दाय।

आखण्डसुपितो। (विष्णवे)
वामनाय।
भार्गवाय।
विश्वरु
पावन
अहल्याय।
कूर्माय।
रामाय।
कपिलाय।
नारायणतारणाय गोविन्दाय

गोपालाय।
गोपीजनवल्लभाय।
लोककर्त्रे।
सृष्टिस्थितिसंहारकाय।
जगत्संहारकाय।
तनायात्रिपुरान्तकाय
शंकरोत्तमाय।
पिनाकपाणये।
नीलकण्ठाय।
गङ्गाधराय।
गौरीभर्त्रे।

नन्दिवाहनाय।
अर्धनारीश्वराय।
सद्योजाताय।
वामदेवाय।
अघोराय।
तत्पुरुषाय।
ईशानाय।
विश्वरुपितो।
सत्यं ज्ञानाय।
इति नामस्मरणानि
अघोरतन्त्रज्ञान

ब्रह्मणे।
विष्णवे।
शिवाय।
वसुरुपितो।
आखण्डलाय।
सकलदेवस्व
रुपिणे।
दत्ताय।
विष्णवे।
वक्रतुण्डाय।

नित्यो।
सर्वशास्त्रस्वरूपा
बृहस्पतये।
पद्मलोचनाय।
नारायणाय।
सरस्वतीकाय।
इति प्रभावाणि
अघदितीयाय।
केशवाय।
केशवार्जुनाय।
कौन्तेयाय।

अनन्तशायिने।
कामदाय।
कमलेशाय।
कंसारि
लोक
अच्युत
तवे
काकुत्स्थाय।
रघुनन्दनाय।
नीलाम्बुजवतये।

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

अथ अष्टोत्तरनामशुक्रां॰ कन्निजाय ५
श्रीनाम्यातााय नन्दाय
वक्रपाताये मनारिनो २४
वासुदेवायाजगद्योनये
नानानामानन्दञ्जनाय
श्रीवल्लभाय।
अनन्तनाशायनमः।
चतुर्भुजायाश्रितार्तिनाय
देवदेवाय। श्रीकेशवाय ४
गरुडध्वजायानन्ताय स्वरूपाय तुवे २

गुणनेत्रनाथाय।
सीतानाथाय
देवकीनन्दनाय॰
पापहारिणानघाय।
अच्युताय।
निष्प्रपञ्चाय।
सुनाथपराय।
निर्विकल्पाय।
निरामयाय।
शंखपाणये।
पञ्चज्योतिषे।

आत्मज्योतिरूपिणे॰
आनन्दलाघवे॰
श्रीवत्साङ्काय।
अखिलाधाराय।
॥
सर्वलोकपतये।
पतये। त्रिविक्रमाय
निष्कलङ्काय नमः
सर्वसाक्षिणे सर्वज्ञाय
सर्वात्मने सर्वेशाय ४०
सर्वस्थिते।

हयग्रीवाय।
रुद्राय।
सात्विने।
हलिने।
शोभनाय।
हलायुधाय।
सर्वसम्पादकाय।
अक्रूराय।
स्वर्गस्थालयाय॰
अनन्ताय।
गजेन्द्राय।
गजान्तिकाय।

केशवाय केशिमर्दनाय
कौन्तेयाय अनन्तरूपाय
काश्यपाय।
कमलेशाय।
कंसारातिने
अम्बरालये।
काकुत्स्थाय।
सनकादिनाथाय।
नीलाञ्जनद्युतये। नित्याय
निर्गुणाय नित्यानन्दाय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

गुणान्वसायै
निर्विकल्पायै
निरंजनाय २०
ब्रह्मपायायै
१०२९ वृद्धिहीनायै
नीतवान्नमो
गुणानन्दायै
वेदान्तविदे
वित्तवेविल्लवेद्य
सीपतये।

त्रैलोक्यगुणायै
यस्य
अमेया
अमेयं
इन्द्र
ख्या
कारणा
समद्रष्टे।

सनातनाय्यै
तर्यै प्रकृतिविचारायै
कणतन्मायायै
परमात्मने।
अस्तुमन्तकायै
अन्तकायायै ८०
सर्वलोकानां पूजायै
मनन्तायै
गुणाय आनन्दविक्रमायै
आचारान्तरायै।

निरालम्बायै
सकथाकायै
धनाधनायै
निष्कलंकायै
निरालम्बायै
निष्प्रपंचायै
निर्गुणायै
नित्य बहुलायै
मदोत्सायै

गुणाः सगुणकीर्तनायै
लक्ष्मीकान्तायै १०९
लिङ्गानुमानकसीमरवधूनाम गुणानामः
अशोषनामगुणाः समः चिदानी
वनस्पत्यस्य तोतमोग गुणाय
तस्य गुणानुवगुणानि वेदाक
गुणाकनमापवपञ्चाक्षराणि स्यद्गुरो
लिङ्गुपंलिङ्गुणाधकदेवेशाक गुणाकनमिच

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मनासाक्षात्वचं वं नर्जेतान तलं रुके । ४ कालावलमपि शीतोमनाक्षं नरोतते । अख ह्रामा रुथन्यो साउ नकागति सं तनअम
तोअभिकृत ७उरं भिं ३ — नि चुेन नरीनातु किं कतोभि क न कलभि पितामह न रखलतु चेनरं वध तैन तरं ततिं
स्निनजीजिनी तीमः ५ — खुश्राज्ञन वस्याभिवृतानामृ तख ऊतन घराप स्मन्नाना मालोला — संतति
स्निनजीविनी षुख्मा — नास्पाखणापाधि रपो मकानेमा सं घुतातारमानरव धृ अु ले दु पुअ — पिलानि
नानतिन अस्रोतन रातं — कुपीत स्मिनरुव रहितानं तावहसं रपानुपानाख ननपातु पता — निरामा
श्रुतिन रुनसानालोके — रनीरुृगादिकान्तु रना नेनाग वल्लीनां कुष्ठ कास्त लवं गनानु । — नेत्ररोगाद
मे रंनाम विक्षी भाति — कनं पनं तु तनां कान ये धृं सा कीनग ताति विजाता तावि केतिगताीनल्ल
७लोके वविरुतः रखवा — गैताम रूं वाक्यं वृत्व वास्पुपचित्रनमु शु भिन्तु नः ८ तद्भतं मदाना कदि सने मादकाना
चाकेनमका — रितं मा तीर्थे कोनेरं वि जिनतं ७ नाप्ता अध्धमप्लिर सुवतविरपांता

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

का॰वी स॰ सामकाण्णी। ब्रह्म संलिख्य विदु स्थु नै: स्वक मनि नतो वता स्वे षै नागानदनौ नानीत्तत्पस्योत्ततो। न अतावल
स॰कारो: सौथस॰ ये विना। अतातुनवातु स्थवयातिवे रपातत्पर सोततामलकेव कवे नस्पराक्र रण्वे वामनावती।
तेकोवतीवनन आपा वकेनमकाण्णी। तंती नाकोवीन से नो जतु वा मेतपक्र भगत स्मि॰ कारा
ग्नरी र॰ते रम्म क्रितोतयः।त स्मि॰ वाक्षोनु जिसतीतायो नवर॰ रपमतस्पनाको त्रिअ नगौ दे व स्वमी तनुनक्रेमो
तस्पतास्य सितुनार नामाथ नवतीर त्ताजघ्याधनाअधेसासा सवितीप्रतिमानतौ।तर तविरतश
कनस्याभास्ता स्तव वा॰क्र तानित्रानु ॥७॰५ एका॰ उक्तिनन॰ नमा नाम्नाण्ण वीर तानि करानास्त्वते स्पा॰स॰
७ काविरुन॰ तिस पास्त स्त्तं कनाक नानेवै कारी रनुनुणवनाघिनी। अता॰त ने क्रिक॰ क स्वितु तिसाधी सण्ण वाम
तशारी पमानः स्व ते को ति: कुतिमा निवपाचकः दानदे सामपागमप्र क्रुके तासिषः स्त ताग ने वस्व मीभस्तु वा॰ सप्त सक प्याव स्वस॰
तमा॰ तिसो॰ प्रदो कस्वन रास्य नरस्त स्तौ क्रिअ वनते। अवैथक्यासिव॰ प्राका तातनः सौतागप स॰ युतान तसो ण्णा नतीमाना

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

यजितासरुत्तिसया विश्रयतिसा व्रद्रौ करुापायति [illegible] नं आसिप· वरौ तस्यौ [illegible] ते थर्मवती तवा मा ताचि· [illegible] पावली
[illegible] ताएंतपायचौ [illegible] मा वेनिवेदयामास आसिप· तेन वोदितान [illegible] थनवती [illegible] ली· कनेप्तासमायचौध
यागाम· का तया मास [illegible] नस्रस्यौ द्विक [illegible] नोतयैवासि [illegible] यति स्यैप्रागदि मोतमः [illegible]
[illegible] नवतीसा· वि·ताप [illegible] वासुता· थनवतकवासाव स्यातत गवन्विप्र वचनं· मेवथाजयास्तुषा तमः व्र
गातारुयोमे लयातता यघासितनः [illegible] वैनकाकानास्ता मिनु [illegible] रौतागपायकाः [illegible] तारुयाः
वाातताया मे विपकी ताखस्यो दि तोमत तरेपमत्तीतुयाडत्तगीर्व [illegible] नः [illegible] नः आतसीः व्रतक
विप्रेर्जकानतगा· वन स्त्रव रन दिके मलनगासि [illegible] थनवतीव्ररुणात वनितातु [illegible] घा यो गपाव [illegible] क्रे य· नयासी
[illegible] दितु स्वपाउ य·स्वप्तव दीमथेविलव तलवास्रव सोल अविनागानतर्क· लकतक्री· व यतो· कस्ता मयासिप
वनताव टेनपमतत्तीतवा पव· [illegible] लापनवती [illegible] तवाकुलि वेतसाः [illegible] वानवननं·दीनं· चगाअप [illegible] नः [illegible] नः किं· कानागा·दिन

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ता।मात्र्क्रं॰रःसु मक्तानासीलो कानां॰ततपरमतानतातोथ नवतीप्रादसोमानैनानःत्वमभिन्ताा।लिख्यसोमो।के॰क्रयातां मवक्रा

ल्पातातो अंनतःरः तोपव॰पनवतीवका॰स्कुवावैर्यसमाबिता गाावतौवरणकुमां॰वतनाकवतावक॰(७॰गाघस॰कलम(विभिवपतौमत्नु

नारानं॰।उउरामा।त्नम्सु स्यौवतनाकश्ताावतम(श्रारसानाघता॰ब॰उ बुसुवतवहान्दसो(मितमपव॰(निकाऊ॰निर्तिं

वतनाऊ॰(निवेघव।श्रामा॰ (विदाप॰थनवती॰यचौसोहामगरूं॰घतिापव॰सानकवकोस्पोसाश्रीवपि तामत॰

(विकृ॰वकानरुबसि॰उ गाबि॰लुरसोमावम॰(उनेगश्रातां॰तावेम

रुतस्पाव्रघमस्तन यामतः।गुनःस्पामीमतसुस्पकामातावतताेमतभ्रावघैवनसि ताःसर्वे

सुपातिसुप्रयनतभसी (विसीन॰गन॰काता॰तनरु॰वविसेवतः।मागकृ॰तमासुघातरपाःसो मकाना

तातिबिनिमसावास्पा वतुवाघमतासां॰श्रीविनीतिषिनस्पादरसततोचा॰ती॰वधा॰काविनु(ध्रिय॰वधि॰तुलतान

तिनाक्रा॰ता॰क्र॰रमाना॰सुउस्वितावचौवाचाोवतानरमोगतावुलतान॰(रानास्थिदानपततरसासाप्रारतनीवन॰रातनकामदं

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सो मौ प त्रा म मा वा स्पा च से —— वृ धे सो म वा ना त्रि तो ति चिं तुल कं न स्व रा ना का म नि अ मो अं म या क [illegible]

सु ने न स्प नि अ नो न्प प श्रो त्र तं । क नो म्पे त त्र ती ते न तु लं न स्प सु मर्द ति दि रू स्प व्व ध रां धा द्र कं प्र ते न [illegible]

प्रा ना ना रो पि नि अ मं व कु । मर्द ति चन उ से न चो [illegible] ती त स्पा व स्प त्र तं र लं । सो मा [illegible]

१६१ को श्ल ले स नो छ न दि रि सि । — सो मा तु ल ता न त न ं स्त्रि चा न सा छ वा रू त तः छ ली तु ल ता नो म का नि [illegible]

न क रु ना ं ति श्र सो म्रो । णा स्पा भव रू ं न वे तु सो मौ वा ना अ च तु लं त तो वृ धे न स्प सा नि क [illegible] । [illegible]

तो रव —— घृ तां । प्रा प यु क्रां त ल व का न दा स्वा का वि क्ष ं सा म ता प वि रो र्क ना ति ः प्र न ति । [illegible]

व का न म रु ता ग या व र सो । तं नं रा त न । स दा भ र सि ा ं र्हं क त ं रा र्क न ख्या रा द । त क्ष औ वि र । [illegible]

व ति क्ष्मा ना त छ ल का भ स्व त । वं सी स मा छ कृ ं त उ द ं व व सी ज त ल न्ह व या ता म रू त्ता ग सा [illegible] । [illegible]

मी वि त ं वी स्व त्त ता नि छ तं का आ टा नं त चा । ११ ० । का तु लं तो ब मा स्या चा क्ष गा म क त क ता ता व प्र ता प त्न [illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

मु स च रा स्वि नी । स्वबा दु नु न न्तात्से तु ७ नाते विपं ति का मा त ७ ल का ः । की वि तात्से क य । ता वे स ता ये न व ा स र तू स्वो को भा न

पनवत्यैन स्वा र चं व त ना न — स्प ७ । पा प क ण न ता स्वो न वि पा के न पा ति को मा त ७ ल का ः तु ल कं न ना या — स्प न

उ के त्यि ता य घा वि धर — न स ह्रे विज्ञ न त्ता व स्वो व र शो त न ं रा त न रा र्क ना ति ये रा त — न ता स्वे

व य र — — लि — ग ा ः तद्र त स्प न ता वे न प ति को मा तु ७ ल का ः की वि ता ७ न ते वे — दे र

त न मे व न स्प ं रा य ह — स्प वे ति ः कि स्वे ता न न वृ त ना का ति था य क ं त वि ज्ये ति न दे भ क ं — स्वो मा न

व च रा स्व घा । स्वबा — स्वा ः का व या ना स त तः स्वो मा व रो स्वा न ं तु का तो ग व्र कु र स ब ७ ल यो ता दि ति

ता स्मा तैः स वैः प नि द ता — पिज्ञ लो क न व ा पा वा इ तो त ह वि तं पा चि दि स्ते ने मा न स्वा सु तो मा का न्मे व ता

न स्प न स्पो तय वि ना रा न ः — सो ना य ता व न स्व लं वै ध क वि नि वो न क ं (स्व) वि वि न्द्रं ना स्प तु व त ता न स्पं को दि वि ति

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सत्तावृक्तर्कौ तै स्वस्यश्च नानीतिः कुन्येताद्वान्तत्तीजान श्रेष्ठां वाख्या तत्वेः वार्धस्तो अवान उवायश्रांतरा प्राप्ततमका
लो ये नानामणि उलितः पातन् ध्यायनानी स्सान॰ कार्यं कलाराखो आला मौनेश्च कौरो य॰ पतितायत्त त॰ र तानगलाररवधुररु
स्य सलीप॰ रच्छिं पिछिं नासा लमानसिलासा॰ वापुआकार्यरिमं॰ ततः कक्रा अक्रस्वरुपायरशिरिख तक्रातितो
आदिमिष्या॰ राजीनायज जाने सतत॰ नमश्च रतिस॰ कृत्वा देवेरा॰ पातनस्वसतैः सदा कृ॰ कश्चे जिनेन्द्रे
१५५ तसित्तोजो यधाविच्छिन्न रवधुजनन॰ कार्यं वोक्रम॰ वेतापा॰ उवाअरसमकवत्साग गोविन्दस्य रानावि
चोअरोष॰ दन नसेपाप॰ व रुनाकननो सुटोयन॰ कुआवि यं॰ के ला श॰ वेलाने नपा॰ उ —— चैततः मनसितः
कार्यः रातमशो तन॰ व्रतीय औक्रिकैः॰ का॰ वतौ चो यै च्छि नाये रापिति सेधा का॰ स्यपातैसधा ता श्रेतस उतैः वधक
वधकृत्य स्त्रीलातमाता॰ कार्य॰ —— श्राप दत्ति पयेनपिचले तावतस्य इसिता॰ कार्यं॰ याव दशो तन॰ रातन वदस्ता कात॰ निधे
त्यः ऽ न॰ श्रीत्यः प्रतापये नृ विपेत्यसस्व वधारा क्रिनसिता तो कन॰ दायान्तु पनितो मिय
उताम् क्राश्च य॰ नानीक नैः राष्ट्र उ तना॰ कानये

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

रुतार्णनपविलं तब स्न रुतमन तमनरानकिं अस्नम्पर्घं विज्ञ प्रीतिकन रु तानं स्वर्णयज्ञोपवीतदानं ॥ — पद्यं दिनानिलंबं

रुमातु कीर्तिसौंदर्यं शोभिताः कं कानासोभरं यादं अतः रतां तं श्वचक्र मे ॥ — पकं कानानं ॥ — नारीदकातोज्ञसं ॥

लक्ष्मीयानलसतां पनं ये मा लं कनानं वस्त्र मतमा ॥ — पवस्त्रदानं ॥ — नादेकिनों देमन सार्ध वासमा निर्मितं ना

तमनेनदयात् तं लक्ष्मी प्रीतिकरं रुतनं कं तु कदानं ॥ — पड तमं वस्त्र तुलानां रुसकांति वितर्यताम्

नाम्य भिनासनातनानां ममातीसश्वराविनी ॥ ना सनातनानां ॥ — पड तमं चूर्णं जितिक्षां वनेलविल

जितं कामितानि वितानि स्याभिमञ्जातीसश्वरोत पकरानितानि नानं ॥ — पशं वनं दस्त्र वल रुं तु पकां

तिसुस्सदनं तुलानां तु वनास्याभिकं रुलानतनानां रुतनं रु वासिन्ये अं रुली यदानं ॥ — पदानं कं

नलकं रुवार्णनवि निर्मितं रुवासिन्ये दानं स्याभिलं रुमीभ्रीयवाभिताः कं कातनान दानं ॥ — पयवं कलानां नेन मा

नार्यदं तु कदं स्वेवासनं वनाय प्रार्थये नवल तु कं ॥ — पप्रार्थनप लक्ष्मी नानायानां स्या साजुमाना ये मिथुने सयं वतो प्रानना

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

सर्वात्मना तीव्र भक्ति तत्प्रत्ययार्थ [illegible] प्रार्थनम् ॥ इति आचार्य [illegible] सीन [illegible]

श्रीगं॰क पं॰ [illegible] ता [illegible] तिश्नौ । मन क ना तथा [illegible] व्रत [illegible] लानि काले कालन्न कौ [illegible]

ना के प्रकार [illegible] कमा नमक [illegible] नाम्य [illegible] पाकृ पालिप पाना [illegible] सोनम्

[illegible] स्वाप्नौः ज्ञानतो ज्ञानत स तत्[illegible] नतः [illegible] ज्ञास न स्थितापा [illegible] ना ता तीर्थ क्रिया [illegible] न्न [illegible] स्पर्श

नानि [illegible] पति ते ननमं क ना [illegible] तिततत सौः स्व॰ न पानना [illegible] तत्तर्या [illegible] नाश कम

[illegible] पो [illegible] तत्र निरव॰ न॰ श्री ततत्[illegible] ता [illegible] स्था नर [illegible] ता॰ [illegible] जाता

[illegible] त्वं गच्छ [illegible] पना यो त्व तत द्विक्रिये [illegible] नाम्न [illegible] ततत् [illegible] ता जाता अका नाम क्रोध

ते तव [illegible] नातिक्रमाता [illegible] गततात निरवे साल॰ कनाता तत [illegible] न [illegible] ता मातो [illegible]

न ना [illegible] पाय [illegible] च [illegible] पन्न [illegible] [illegible] स [illegible] ज [illegible] न्तो [illegible] सर्व॰

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

नतो षपनिसोनार्घ॰ तोक नक्षमखेनक खलनाः ॰ सं॰ताणाग तत्निस्वेवाक्त सवगानक खलाग्गाः॰ अन्यो नत्रष रनिन

स्तान विनवासजखे अत्य॰ग क्षनासी घरिनगाकादित्य रे कारस्थ नकारसागाः दित्वे रेन ता रस्त्र नागचाये वेरगागो षक नगानिनोस

गाम स्ना॰ नतोकनदा॰बु लतदगाउ नेरस्ा॰तगनमनस्॰कतमकानदीस्य रनिस्पगाषवेरानदिताकोगिनेरानिक्ला

नसङाचेततनिनोसाग सङकानकधास्यवताननागकादित्यकासरानकामहसागानिराने सनागर

जार्च॰दक जनमनिउ निकानिअनेकक मनिलिनिनुनागाग॰नक खलादिस॰तादिता नागाग..

नामपनोरनार्घ॰सारव तत्सलो कावाहसर्घ॰ भेमु ककर्ण कलिवर्घ इति सं॰ कनतपय

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

ॐ नाक्रों नाक्रः नमः प्रज्ञां ब्रह्मातो [illegible] विज्ञाविपाता लालिपतये [illegible] ज्ञायते [illegible] पतये [illegible]

[illegible] पतये [illegible] सदां [illegible] अघनवरा [illegible] [illegible] कला [illegible] कलारा [illegible]

८ग [illegible] ॥ ज्वालिनी [illegible] ॥ ज्वालिनी ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ कपिलायै ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कलात्मने [illegible] ॥ [illegible] ॥

यै ॥ [illegible] ॥ विरवा [illegible] यै ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ज्वालिनी ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कलात्मने [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कलात्मने [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

[illegible]

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding MIDF

CSU-Sringeri Campus Rare Book and Manuscript Collection, Sringeri